

CONTENTS.

Report	1 to 2
Notices of Hindi Manuscripts			3 to 85
Appendix I	87 to 90
Index I, Names of authors	91 to 94
Index II, Names of manuscripts noticed	95 to 96



REPORT.

REPORT.

THIS is my fourth Annual Report on the Search for Hindi Manuscripts. The greater portion of the year 1903 was devoted to the examining of the library of the Mahārājā of Benares and in all 186 manuscripts were noticed there. Notices of 8 other books (Nos 1 to 8) were kindly sent to me by Pandit Chandra dhara Śarmā B A (Jaipur) So that in all 194 manuscripts were noticed. Of these complete notices of 135 are given in this Report and a tabular statement of the rest (59) is given in Appendix I. Out of the manuscripts noticed in the library of the Mahārājā of Benares 14 books have 2 or 3 copies. ⁽¹⁾ Consequently 177 books have in all been noticed.

In the appendix I have given information about such of the manuscripts as did not appear to me to be of any great importance and as had been noticed in the previous years. I propose to follow this procedure in all future reports of mine on this subject.

Out of 135 manuscripts of which complete notices are given 129⁽²⁾ have been found to be the work of 71 authors whose ages are as follows —

14th century	1
16th d to	3
17th d to	18
18th d to	26
19th d to	23

The dates of the remaining six authors could not be ascertained ⁽³⁾

The statement in appendix I contains information about 59 manuscripts 46⁽⁴⁾ out of which have been ascribed to 35 authors the dates of 19 of whom are as follows —

16th century	3
17th d to	7
18th d to	4
19th d to	5

The dates of the remaining 16⁽⁵⁾ authors could not be fixed

Among the authors whose work have been fully noticed and those whose work are mentioned in Appendix I the following eight names are common —

Chintāmani (17th century)	Śaradāra (19th century)
Devā (17th century)	Śāradāra (17th century)
Gokulānātha (19th century)	Tulsi Dāsa (17th century)
Mānchhara Dāsa (?)	Vishwanātha Śaṅkha (19th century)

Most of the manuscripts noticed are in verse but there are some which are in prose also and that of course in its Brajā dialect. The majority of these manuscripts were copied out in the 18th and 19th centuries ⁽⁶⁾ Only 6 were copied out in the 17th century.

(1) See Nos 19 21 55 65 79 101 103 133-34 133-39 145 46-4 153-54 155-56 158-59 167 63-69

(2) See Nos 2 3 8 10 69 6

(3) See Nos 6 10 27 83 84 93 94

(4) See Nos 1 4 to 186.

(5) See Nos 123 129 190 191 192 130 143 145 149 151 153 157 160 161 166 171

(6) 18th century 143 19th century 153

The character in which these manuscripts are written is mostly Devanāgarī, only in a few cases it is Kaithī.

In my report for 1900 I wrote that from the beginning of the 15th century to the present day, India could only produce commentators and second rate poets, who were more or less the imitators of the great illustrious masters who had flourished during the two preceding centuries. In continuation of these remarks it may be stated that during the 18th and 19th centuries, there were four different centres of literary activity in Upper India, in so far, of course as Hindi is concerned. These centres were Bundelkhand, Baghelkhand, Oudh and Benares. It is difficult to add anything to what has already been written by several eminent authors about the literary history of the first three centres. But I am sure that the examination of the library of His Highness the Mahārājā of Benares alone, when completed, will throw a flood of light on the history of the fourth centre. I, therefore, postpone my general remarks about the works noticed this year to 1904 by which time I hope to be able to finish the examination of the Mahārājā's library and then to be in a position to say something definitely about the poets of Benares and their patrons.

LAHORI TOLA BENARES }
The 4th of April 1904 }

SYAM SUNDAR DĀS

NOTICES OF HINDI MANUSCRIPTS,

Notices of Hindi Manuscripts.

No 1—अमरेश विलास *Verse Substance*—Kāśmīr-made paper Leaves—45 Size— $7\frac{1}{2} \times 5$ inches Lines—16 on a page Extent—860 ślokas. Appearance—worm eaten but new Complete Generally incorrect Character—Devanāgarī Place of deposit—Pandit Shivarām's Library, Gulera.

Amarēśa Vildsa—Translation of 108 ślokas of Amaru Śaṭśaka made by the poet Nīlakantha in Vikrama Samvat 1698 (1641 A D) This Nīlakantha was probably the brother of the great poet Chintāmani, Bhusaṇa and Mātī Rāma. The manuscript is dated Samvat 1808 (1751 A D)

Beginning—डो श्री गणेशाय नमः ॥ अथ ॥ अमरेश विलास लिख्यते ॥ ता सुवन तितु भवन सारि वाहन जसु जान्यो । तेग त्याग बड भाग चासु गुन गुनिन बधान्यो ॥ धीर धीर मति धीर उदधि गभीर धुरधर । लगनीत सोचि नीत परम हिन्द पुनीत घर ॥ महिपाल मोलि नव मुकुट मणि दुख भजन दुर्जन दपन । कवि नीलकंठ शिम उपजहि सुबोरल अर्थोन अयनी रजन ॥ १ ॥ विरचि तेग कर गहे रारि साहिन सुन मडे ॥ दोरि दुजन टलमले मस्त-गन कुम बिहडे ॥

End—सुवेया ॥ काम के प्यास तें कामिनि के बवहि तें पिय अधरा सुघरा में । जोन मुधारस हू ते अनूपम या रिधि और कहो रस कामे । कठ कहे तबतें बहुती विधि दूगुन आस बढी फिरि यामे । ताको अवधो कहा करिष हो जोपे बलोन लनाई है तामे । १०८ इति श्रीममहिपालमोलिमुकुटचितामणि श्री महाराजाधिराज श्री अमरसिंह देव विलासाप्यो नीलकंठ कृत समाप्त. शुभमस्तु । वरष से सोरह ठानवै सातैं साजन मास । नील-कंठ कवि उद्धारिय श्री अमरेश विलास । सवत् १८०८ चैत्र मासे कृष्ण पवै रवि वासरे प्रति-पदा तिथी हरिपुर नगर बसते जालधर सेवे दास गंगा महिमा लिपत प्रेक्षित मनसाराम श्री श्री नालपाये नमः शुभ भूयात् ॥

Subject—अमरकथक के १०८ श्लोको का अनुवाद ।

Note.—ग्रन्थ अन्तिम दोहे के अनुसार सवत् १६९८ श्रावण की छप्पमी को कवि ने घनाया है तथा जिस प्रति की यह नोटिस है वह हरिपुर में सवत् १८०८ चैत्र कृष्ण १ को पुरोहित मनसाराम ने लिखी थी । ग्रन्थकार ने यद्यपि आदि के दृष्यो में “वीरसिंह” राजा की स्तुति की है किन्तु छठे और सातवें दृष्य में “राम” “अमरेश” की स्तुति से मिल जाने से यह ऐतिहासिक तागा कत्वा मालूम होता है । कदाचित् भूषण प्रभृति चार भाइयो में से यह नीलकण्ठ हैं ॥

No 2—वृहन्नातक और राजसूक्त प्रश्न *Verse Substance*—country made paper Leaves—9 Size— 4×8 inches Lines—11 on a page Extent—185 ślokas Appearance—ordinary Complete Generally incorrect Character—Devanāgarī Place of deposit—Bhāṭṭa Divākar Rājā Gulera district Kangra

Vriṇajāḍḍha and Rājannika Praśna—A book on Hindu Astrology The name of the author is not given. The manuscript is dated Samvat 1744 (1687 A D).

Beginning—डों स्वस्ति श्री गणेशाय नमः । अथ वृहन्नातक । दोहरा ॥ जयि भुविन्दु पितु गर्भ मेा नृस बठर मधि दोह ॥ पुढे प्रश्न विचारि के आदि अन्त कहु सोई ॥ १ ॥ नारि प्रसूतो कालि के विष आगमनि घन घाम । मम प्रकार विधि लिखित हो वृहन्नातक धरि

नाम ॥ ९ ॥ अथ गर्भे निमित्त विन्दु एते कदापि हे। ॥ दोहरा ॥ अथ सन्नि तिथि रात्रि
दिन भी मोहरो नातु ॥ मात प्रस्था मोक्षयो वनम सन प्रगु ॥ ३ ॥ विन्दु निर्मिता
गर्भ मे मात तात निज दोह ॥ हेकुठ प्रन विन्दुदि कयो नामतु निरुध मोह ॥ ४ ॥

Ind—पहानु ८६ कट्ट पुप कृत्र कदापि हे। प्रामु धिना पुप देवु निधा पुप फलो
हेन्दा। ये योताक जोगुन मानि ८० वर्षा घामना मुन विषे पोषा सन्त्र पिण्ड वटया पुप
पद्यानीया हेकुठ कदापि सति यात ८० वन्दम रत्रि मुन दृष्टि दृष्टि भुगु चंर नित्र भापु दटा
तत्र शायि लाय मुनु प्रन मुविता घरी रापु ८६ मुनु चगर रघन मुगुहृ इयेत वाप भुगुहेगु
यहा मुन इन नानियो हेकुठ प्रन करि हेगु ८० इति यो राजमुन प्रन रताप ॥ शुभ ॥
स० १७४४ फागुन वदि ० धुने निरुध ॥

Subject—कलिंग वयोतिष का व य हे ।

Note—यद्यकर्ष का तथा उयने समय का पना नहीं । त्रिम प्रति मे यह नाटिम
की गरे हे यह सयत् १७४४ की लिपी हे ।

No 3—प्रायः *Verse* Substance—country made paper Leaves—3
Size—8 x 5½ inches. Lines—19 on a page. Extent—53 Slokas. Appearance
—new. Incomplete. Incorrect Character—Devanagari. Place of deposit—
Bhatia Dinkara Bija, Gukera, district Kalyan.

Pravaś—A book in Varāṇasī, written by a Muslim author in the reign of Salāṅghān in 1711 (1653 A.D.) The book is in copy form.

Beginning—हो मयि भी गयेगयमः अथ प्रायगुव लिखने । पोषाई । अथ
अथिग इकीम पद्याने रात्र सयगद केलाय भी यी रात्र वट केलायकी पनी गताया घेलो
सावे झूठ न रातोया वडन येद अनेक करीपर मुनिजन माध महा जोगिपर इया सय नथी
अन अग अगरी टुक नाटक लुप अम पवन अहारो इत लिप तारीन चोरो मुन इत अथ
रोकरि द्विपत्रे मूल अर हाकिम का रात्र दानिसुधद इत नातिक धायी फहरा मयद
हलो दुम्ना लाया रमानो दृष्टु जानत तामे कती चली इत नाराक वाच पद्यान मन की
इत अति विरान ननुकत तान की इत करे रमायन माधे धात वट गाच न धोने आधी
धात इत मुधानी अम येप कदापि पय ९ सेतो जो वन गावे पोथी का सयत् ॥ दोहरा ॥ अथ
पोथी इका लिखया कयो मुनी नठगोर वारे साहचरान के हाकम जू मय मरे ॥ दोहरा ॥
इत दवार अर वेदपठा सत्र नयु का वाच सारा से अर ग्यारवा मयन अकम रात्र चानी
इयक पाद्वे अदक धोना कदन न झूठा गावे ताना निम विर निरुधो वाच वर पोद्दाम
अयन विषम मुपति नरपति गारगहा सनयत ॥ ४ ॥

Ind—दोहरा ॥ त्रिम रोगोकायन घटे रच ना छुध्या हेइ त्रिम रोगो परि पङ्क्ति
निरुध दटाये रोह ॥ १६ ॥ दोहरा ॥ मुप पाना स्यामु टननामिच मिनाना हेन त्रिम रोगो
ते घट्ट के तात करीयो चैप ॥ १७ ॥ दोहरा ॥

Subject—वेद्यक का अर्थ है । इन तीन पद्यों में शेषन "रितु परोक्ष" "कर्म लक्षण"
और "अथ परीक्षा" लिखा है ।

Note—शास्त्रों के समय में दिवरी सन् १७६१ में, विक्रम स० १७११ (?) में यह
यद्य लिखा गया ।

No 4—प्रायः *Verse* Substance—country made paper Leaves—
75 Size—8½ x 5½ inches. Lines—19 on a page. Extent—53 Slokas. Appearance
—new. Incomplete. Incorrect Character—Devanagari. Place of deposit—
Bhatia Dinkara Bija, Gukera, district Kalyan.

Astidakra.—Dealing with some of the principles of Vedāntism by one Mohan, who lived at Mathura and composed this book in Samvat 1667 (1610 A.D.) when Jahāngīra was on the throne of Delhi. The manuscript is dated Samvat 1714 (1657 A.D.)

Beginning—स्वस्ति श्री गणेशाय नमः ॥ अष्टावक्र मोहन कृत लिख्यते ॥ भोपाई ॥ नमो आत्मा सदन सनेहो ॥ परमानन्द प्रगट घर देहो ॥ आपा एक अनेक दिपायो ॥ ठोर ठोर ले मनु विरमायो ॥ आपे रकु आप भूगला ॥ आपे तरुन विरय भय वाला ॥ आपे दुरप आप हो नारो ॥ आप माहि मिल कोन्ठ चिन्तारो ॥

End—दोहा ॥ जो यह बाचे जो मुने उपर्न अमित तग्न ॥ मोहन भेटे भायता सहल सनेहो सग ॥ २०० ॥ चोपाई ॥ सोलहसै सतसठा मुनाहा ॥ सावन पड्या द्रुध टिन राहा ॥ जहागोर आदित कर राजू ॥ अऊपर तन साहन सिरताजू ॥ राइ रक की नहि समताई ॥ रान मुजसु दिस सदा रहाई ॥ आप आप मग जो जिहि भाये ॥ कोठ काहू की नहीं चलाये ॥ समे पय मतही कर तारा ॥ जो सरता निधि मिलहि अपारा ॥ देस सन राजे जो देहो ॥ जो मथुरा पुर कीय सनेहो ॥ सदा नगर स्यो गुन हृद नाचा ॥ पिल अमिति महि यके साचा ॥ २०१ ॥ दोहा ॥ मोहन मथुरा महि वसे कीनी कथा बनाइ आप रूप पुरन सकल समको सहज सुभाइ ॥ २०२ ॥ इति श्री सहज सनेहो अष्टावक्र मोहन कृत संपूर्ण ॥ ॥ रघुनाथ ॥ सवत् १०१४ अश्विन वद्यो ० मनि वासरे लिखित मिथि जगत राइ विधीबन्द पाठगार्ये लेखक पाठकयो पुम ॥

Subject—तत्त्व विचार का अद्वैत वेदान्त, माया धाद प्रभृति के अनुकूल ग्रन्थ है ॥

Note.—जहागोर के समय में मथुरा में रह कर “मोहन” ने (चिनका उपनाम सहज सनेहो प्रतीत होता है) सवत् १६६० में श्रावण की पड्या के यह ग्रन्थ बनाया ॥

यह प्रति स १०१४ आश्विन वद्यो ० को लिखी गई थी ॥

No 5—चण्डी चरित्र *Verse* Substance—country made paper. Leaves—66 Size—8½ × 5½ inches Lines—15 on a page Extent—928 slokas Appearance—new Complete. Correct. Character—Devanāgarī Place of deposit—Bhatta Divākara Rāya's Library, Gulera district Kān_g_rā.

Chandi Charitra.—Translation of the Durgā Pātha by Gurū Gobinda Singha (Born 1666) the tenth and the last gurū (Padasāha) of the Sikhas. He was a great soldier and composed good verses in Braja bhāṣā. The manuscript is dated Samvat 1880 (1823 A.D.) This book is divided into two parts called Chandi Charitra ukta vilās and Chandi Charitra Nātaka.

Beginning—ओं श्री गणेशाय नमः ॥ ओं भगल भगवान विष्णु भगल गरुडध्वज ॥ भगल पुढीकाछ भगलायतनो हरो ॥ ओं श्री गणेशाय नमः ॥ अथ चण्डी चरित्र उक्त विलास लिख्यते ॥ भाषाकृत कवि श्री गुरु गोविन्दचिषि जी ॥ सबैया ॥ आदि अपार अलेप अनन अकाल अमेप अलेप्य अनासा ॥ के शिव शक्ति दय स्तुति चारि रज्जोतम सत निह पुर वासा ॥ दियस निसा ससि मूर के दीपक सृष्टि रचो पचि तन प्रकाशा ॥ घेर बडाइ लगह मुरामुर आपहि देखत आप तमाशा ॥ १ ॥

End—सबे राग कोई ॥ तिये सर्व पुनान कोप न होइ ॥ १ ॥ दोहरा ॥ जे जे ध्यान को नित ठठि छोहे सत ॥ अति लहेगे मुक्त फल पावहिगे भगवत ॥ २ ॥ श्री मारकंडे पुराणे श्री चण्डी चरित्र नाटक उक्तति धरनन नाम अष्टमोऽऽ०

ममसाका मधुरा ॥ मधुरा ॥ १८८० ॥ कान्गुल गुडी ॥ सप्तमी ॥ रविशार मन्त्राली ॥ ९० ॥ लिपि-
रानाराम पंडित कश्मीरी ॥ यत्नार्थं देवीदत्त ब्रह्ममठ साग गोरानान ॥ भाट्टद्वारागीच ॥
शुभमस्तु ॥ श्री राम ॥ राम जी ॥

Subject—याम्यत्र मे ये देव गन्ध हे—“चंडी चरित्र दत्त विनाम” और “संडो
चरित्र नाटक” । गन्धकार एकही प्रतीत होता है । नाटक का आदि ये है ॥ नराच दन्त ।
महिष्य देव मूरयें यद्यो मुनेष्ट पुरय । मुदेवराज जीतय ॥ चिन्नेकराजकीतय ॥ भजे मुदे-
यता रात्रे ॥ इत्थं देव के मुखे ॥ ॥ यहां भी अध्याये का क्रम और नाम वैसाही है ॥

Note—गन्ध वनने के समय का पता नहीं लगता, किन्तु गुप्त गोविन्दमिह जी
हस्के रचयिता है निम्नका नमः सन् १८६६ में हुआ था ॥ यह प्रति सन् १८८० कालगुल
मुदी सप्तमी रविशार को लिखी गई थी ॥

No 6—मिहसवनलीसी *Verse* Substance—country made paper
Leaves—124 Size—8 x 5½ inches. Lines—20 on a page. Extent—2822
shloka. Appearance—new Incomplete. Generally correct. Character—
Devanāgarī. Place of deposit—Bhatta Divākara Miya's Library, Gulera, dis-
trict Kangra.

Sukhdama Dattist—Thirty two stories told to Bhoja The name of the
author appears to be one Gangā Rāma.

Beginning—ओं श्री गणेशायनमः ॥ ओं अथ मिहसवनलीसी निधने ॥ देहा ॥ ओं
शिव मुक्त को प्रनये सदा करहु सीध निधारे ॥ मिश्र आदि देशी जपो सत्र परदानो मारे ॥
तिहि प्रसाद कयनी करे हरे चित्त उपजारे ॥ नालकठ पिथ हरप मुक्त यिक्रम को कस तारे ॥
चोपरे ॥ दक्षिण देश उजैनी नगरी ॥

End—चोपरे ॥ सुनहु भोग इह यिक्रम कीनी ॥ पर कारण को इह बात लीनी ॥
तय यिक्रम अपने यह गयो ॥ द्विज अपने यह मुख को भयो ॥ धन धन राधा पर उपकारी ॥
सत पृत्त को देही धारी ॥ यिक्रम सम को करणी काने ॥ तजह मिहसवन पर पगु दोजे ॥
सद्वसा पुतरी बोल सुनाये ॥ गंगा राम प्रगट जगु गयो ॥ इति यिक्रम सर्वधनी चर्यासर्वी
कथा संपूर्णम् ॥ शुभम् ॥

Subject—पुतलिये द्वारा कहा गई ३२ कथाओं की मुखविद्व मिहसवन वलीसी
का अनुवाद ॥

Note—कुछ पता नहीं चलता । गन्धकार का नाम गंगाराम प्रतीत होता है ॥

No 7—कनक मञ्जरी *Verse* Substance—country made paper Leaves
—21 Size—7½ x 5 inches. Lines—21 on a page. Extent—494 shloka
Appearance—old. Complete. Generally incorrect. Character—Devanāgarī
Place of deposit—Bhatta Divākara Miya's Library, Gulera, district Kangra

Kanaka Manjari—The story of Kanaka Manjari, wife of Dhanu Dhira,
a merchant of Rajnagara. It is a love story describing the unsuccessful attempts
of Ryakumara to seduce her in the absence of her husband. The name of the
author is Kāśī Rāma who wrote it for Rajkumara Lakshmi Chanda. The exact
date of the composition of the book is not given but it must have been composed
between 1623 and 1777 A.D. as the poet makes mention of Tulsī Dāsa, who

died in 1623 A.D., and as the date of manuscript is Samvat 1834 (1777 A.D.) Probably he is the same Kāśī Rāma whom Dr. Grierson mentions to have been born in 1658 A.D. and to have attended the court of Nizām Khān, Subedār of Aurangzeb.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ कनक मञ्जरी कथा कवि काशी राम कृत लिखितं
उप सागुडा । दोहा । गनपति गोविन्द गुरु चरन सेई सुखति उपजाई ॥ भजन ॥ भरोसे
शक्ती के कविता रचित बनारै ॥ १ ॥ हृष्ये ॥ विदित वीर पृथ्वीराज राज दिल्ली धिर थप्यो ॥
रोषहान अधकाइ बंदी घर चन्द समप्यो ॥ आठ अधक सत एक सग समत सजत नर ।
सुमट जोत रनधीर यमन कीरत मुकरि अंघर । सखहु चक्र आन चोहान कुल तेज भान तुष ॥
गयो । मृगया बिनोद चहू कोद अस यमु बितरन मुष भुगयो ॥ २ ॥ दोहा ॥ विधि वसति
(हलो ?) तपत तजि समरप पत जगारै । कोयो राज राजो कोष उत्तम धरन बनारै ॥ २ ॥
उमरारै राई निजि हरे रह्यो रनारै राजि ॥ ३ ॥ छुद्र दमन होनी हृषी दिति हृषि जिन्हें
मुहारै ॥ ४ ॥ कवितु ॥ राजा होत अथ तक जानिय रजारै यडो राई भष राई ही की कीरत
पकति है ॥ राजा होत जानिय रनारै समरूप को न भूपर अनूप बिह महिमा पकति है ॥
दे दे उमरारै दिलिपत दिल जोरै करे सवारै आस दर में वकति है ॥ (पृष्ठ २) जाहि जाहि
पदयो को चढ़े चहुआन अथ ताहि ताहि पदयो मु आपही बकातु है ॥ ३ ॥

End—दोहा । मुरु सारिक सव सुप रहे साह जोर कर कंज । नथ घूमे निजु
नारि के लागे दर अनुरंज । हिलि मिलि विद्या विरह की मेठी ॥ भुज भर कनक मंजरी
मेठी । करी केन बहु विधि मन भाई ॥ निरख लजात काम रति राई ॥ उत्तम चरित कथा
मुनो कुजर मु लक्ष्मीचंद ॥ कविता काशीराम की कीनी चरमपद ॥ बाजिराज सिर पाठ दे
आदर सहित समान । धरपासन बहु भूमि दे वसि यवारी सनमान ॥ इति श्री महाप्राज
कुमार लक्ष्मीचन्द विरचितं काव्य काशीराम उत्तम चरित कनक मञ्जरी कथा समाप्तं शुभं ॥
सोपतं उप सागुडा समये प्रसाद कवि अदर्श प्रति ॥ समत नृपति १८३४ ॥

Subject.—रतन पुर में धनधीर साह की कनकमञ्जरी स्त्री थी । जब साह समुद्र
यात्रा को गया तो एक तोता और सारिका उसके बहलाते थे । एक बेर स्नान करती बेर
काज उसका धार ले उठा । उसे देख कर राजकुमार आसक्त हो गया और कई चतुर दूतियों
में से एक चतुर अनूप दूती उसे ढूँढने बली । यह भिला भागने आई और दुखिनी से भीख न
लेने के मिस उसके पति के प्रयास का हाल कनक मञ्जरी में जान गई । दूसरे दिन पान
मिठाई बाँटने लगी । कनक मञ्जरी के पढ़ने पर उसने चिन्ताहर की पुजा करनेवाली एक
तपस्विनी का प्रसाद बताया और उने चिन्ताहर की पुजा से प्यारे से मिलने का भरोसा
दिया । सारिका ने रोजा किन्तु फटकारी गई । दूसरे दिन एक और दूती को तपस्विनी
बनाकर पुजा को ले जाने का विचार किया । सारिका सलाह देते पीटो गई, फूटै अण्ड
फोड़ने का मिस किया । पुजा को तयार होने पर तोते ने महावर डाल दिया और कनक
मञ्जरी को रजस्वला बताकर पाँच दिन ठहराया । पाँचवें दिन—

चिन्ता हर मठ में नाई बसे ।

भजन भावना के सग लसे ॥

पीया गष न द्वारका, बदरी गष न काशी ।

भजन भावना में मिले, तुलसी से रघुवीर ॥ कह कर घर में पुजा कराई ।
तोते ने अपनी व्याघ्र तथा सिंघान के घर रहने की कथा कह कर कुसंगति और लक्ष्मणाजी
का घुरा परियाम बताया । फिर जब अनूप आई तो "चिन्ताहर घटमाही" कहने वाली

कनक मजरी से यहस में धार कर राजकुमार की सलाह से एक नाव बनवा लाई । सारिका ने अपने दृष्टान्त से उस पर चढ़ने से रोका । फिर सिद्धनपुर को फौज ले जाने की डोही राजकुमार ने बिटथी है । अनूप ने कनक को पति के पास जाने को तयार किया किन्तु जाती सेर सारिका ने छँक मार कर रोक दिया । साहूकार के जाने को श्वर उठते ही राजकुमार ने धार की गयाही से कनक को कलहास करने की धमकी दी किन्तु तोता धार को ले उड़ आया । दुती की नाक कान काटे गए । प्रेमिक प्रेमिका मिले ।

Note—यह प्रति सु० १८३४ में लिखी गई है । काशीराम ने राजकुमार लक्ष्मीचंद के लिये यह बनाई थी, और उन्हीसे इसका पुस्तकार पाया था । भाषा कुछ पुरानी है । दोहों की काल भी पुरानी है । सम्भव है कि इस कथा के 'राजकुमार' और पृथ्वीराज के वंश के 'मृगया विनेद' राजा चोर लक्ष्मीचन्द में कोई सम्बन्ध हो । कई शब्दों के लिहान से यह कवि इस देश का भी हो सकता है ।

No 8—योगवासिष्ठ *Verse Substance*—country made paper *Leaves*—24 *Size*— $5\frac{1}{2} \times 4$ inches. *Lines*—13 on a page. *Extent*—253 *lokas* *Appearance*—new *Complete* *Incorrect* *Character*—Devanāgarī. *Place of deposit*—Bhatta Divākara Rāya's Library, Gulera, district Kāngra

Yoga Vasista—An abstract translation of *Yoga Vāsista* The name of the author is not given. The date of the manuscript is probably Samvat 1714 (1657 A.D.), as it is bound in the same volume which contains other manuscripts written in that year

Beginning—स्वाँल श्री गणेशायनमः । योग वसिष्ठ लिप्यते । दशो दिसा बैकाल निरतर प्रभु वसे पूर्ण ब्रह्म प्रकाश घट घट माहि है । आपे ही सों आप आप मुहानया । नमस्कास करि ताके सोभु निरायणा । १ । हो यध्य कैसे मुक्त हो दूसरी नाहि संयोग । मा अति सूर्य ना चतुर यह सासु निहियोयु । २ ।

End.—काष्ट माहि को पुतरी सदा निरतर पासु । त्यों लग सदा अध्यक्त हैं सने सने परमायु । ३० । जैसे सागर ते लहरि लहरि होर न नायु । तेसे सम धनु भून ते भूने माहि समाह । ३१ । इति श्री योग वसिष्ठ की भाषा दसम प्रकरण समाप्त । १० ।

Subject—रामचन्द्र और वसिष्ठ के सम्वाद रूप से लगत् की तत्त्व विवेचना के ग्रन्थ योगवासिष्ठ का संक्षिप्त अनुवाद १० प्रकरणों में है ।

Note—ग्रन्थकार का नाम नहीं मिलता । न समयही है । यद्यपि ग्रन्थान्त में प्रति की तारीख नहीं दी है तथापि उसी ग्रन्थ से 'चतुष्टयक मोरार' के विर सप्त १०१४ की लिपी घुई है ।

No 11—रामायण *Verse* *Substance*—English made paper *Leaves*—253 *Size*— $13\frac{1}{2} \times 5\frac{1}{2}$ inches. *Lines*—9 on a page. *Extent*—4,705 *lokas* *Appearance*—new *Complete* *Generally incorrect* *Character*—Devanāgarī. *Place of deposit*—The Library of the Mahārājās of Benares.

Ramāyana.—The story of Ramachandra by Gomati Dās Vairāgi of Avadha. The book was written in Samvat 1915 (1858 A.D.) and the manuscript copy was made in Samvat 1921 22 (1864 65 A.D.)

Beginning—बालकांड आरम्भ । श्री मते रामानुयानमः । चेतटा । गन नायक सय गुन सदन । बुद्धि रास सुम धानि । अथ तुम देख अनादि हो । सास्त्र करत परमान ।

॥ १ ॥ चौपाई ॥ सकर सुत सब को सुष दाता ॥ गवर तनय कीरति विप्याता ॥ सो अब कृपा करो लघुनानि ॥ सोतापति कीरति मन मानि ॥ सकर सरोस और हित नाहि ॥ उमा को सहित बसो ठर माहि ॥ सब प्रकार अपने मोहि जानि ॥ रघुपति चरित मोर मन माने ॥ सो अब प्रभु को बात ननाईउ ॥ राम चरन फिर फिर सिर नाईउ ॥ ब्रह्मादिक सनकादिक गये ॥ सो मुनि के सुष सतन पाये ॥ जा मुनि चित मोर अब लाग्यो ॥ कीजिये कृपा तो होहु सभाग्यो ॥ सेस सारदा होहु दयाला ॥ नारद सहित करो प्रतिपाला ॥ पुनि को सबे रिपिन सिर नाऊ ॥ सोतापति कीरति अब गाऊ ॥ गुर अब दयाल सबे हितकारी ॥ रघुपति चरन कोयो अधिकारी ॥ दोहा ॥ सोतापति मन में बसे लखन लाल हित जानि ॥ रघुपति अब अनुकूल है ॥ सो मे करत बखानि ॥ ३ ॥ सघत ठनईम से पशदस ॥ श्रायन बितिया जानि ॥ शुक्र पद गुस्वार को राम चरित करौ गान ॥ ४ ॥ सरू मुरग की सिंठि है ॥ अरवि नित्य सुष धाम ॥ गोमतोदास विचारि के ॥ कोनो जहां बिसराम ॥ ५ ॥

End—सोरठा ॥ गोमतोदास विचार ॥ रघुपति जस गावत भये ॥ उतर को है सार ॥ जानै अति कन्यान मे ॥ अभ्यागत अब जानि ॥ रहते सज्ज निरुट मे ॥ सरान कीन प्रमान ॥ दीन जानि अपने करो ॥ मोतो सावन वदी ॥ १२ ॥ सयत ॥ १६९९ ॥

Subject—श्री रामचन्द्र का इतिहास ॥

Note—यद्यक्तो गोमतोदास बैरागी अग्रधरासी । निर्माण काल सवत् १६९५ श्रायन शुक्र ३ गुस्वार । लिपिकाल सवत् १६९९ सावन वदी १२ ।

No 10—रामचरित मानस मुतायली *Prose Substance*—country made paper Leaves—488 Size—14×7 inches Lines—15 on a page Extent—27,020 slokas. Appearance—somewhat old Incomplete Generally correct Character—Devanāgarī Place of deposit—The Library of the Maharājās of Benares.

Ramacharita mānasa Mukhdālī—Annotations on the Rāmacharita mānasa of Tulsī Dāsa by some disciple of Sivalala Pīthaka. The manuscript copy was made by several persons. The first book was written in 1890 (1833 A D) and the other books were written in 1915 (1858 A D)

Beginning—बालकांड भगलावरण ॥ श्री जानकी चल्लभायनम ॥ श्री गुरुवरण कम्पनेभ्यो नम ॥ श्री मुमिष नदनो जयति ॥ चौ० ॥ श्री गुरु चरण सरोज प्रणामा ॥ अभिमत फल दायक अभिरामा ॥ सो जग सरल मुकृत कर टीका ॥ जेहि कीन्ह सब ही कर नीका ॥ १ ॥ (इसी प्रकार दो पचे तक है तीसरे पचे में कुछ व्याख्या सहित गोसाई जी के श्लोक बयौनामार्थ इत्यादि, फिर चतुर्थे पचे से गोसाई जी के सोरठे की टीका है) यहि मुमिरत सिंधि होइ—इत्यादि ॥ १ ॥ श्री रामायनमः टीका ॥ येह मुमिरत सिंधि होइ ॥ यहि देयता है मुमिरत माव सिद्धि टोति है ॥ गन नायक जो आपु पेश्वर्य सो गन नायक कहै ॥ करि घर बदन फेरि आप स्वरूप सो करि घर बदन है ॥ बुद्धि रासि ॥ फेरि जो आपु स्वभाव सो बुद्धि के रासि है ॥

End—कोशल्या सुत सब देव सदसो दीव्यर्द्धतेनोदीत ॥ कौतुखोचित रूप सील मुमोक्त्यधने साधने ॥ सोमोचोतलोथ धनु समनश्चेतेपिसे पुनीता ॥ सानोकोजन के स्वरण सहित शकतेनायोपिष ॥ ३ ॥ नतिरमितमहोम्ने घेद दुर्गेय सीन्ने सोष कथोत गरीम्ने कोसलेन्द्रात्मनाया ॥ अनदिनमधि राव कोटिसेनतसे धा मम बचन

मनोभ्यामस्तु कायेन चरिषि ॥ ४ ॥ संवत् १६१३ ॥ पुष मासे कृष्ण पक्षे द्वितीयां युध पावरे
लोगित समाम्रम ॥ अंतिम पृष्ठ श्री चैत्यो उत्तर कांड समाप्त संवत् १६१३ ॥ दुपौ के राज धुध
के सन १९६६ सन माह ।

Subject—श्री मुलसुकुत रामचरित मानस पर टीका ।

Note—टीकाकार अपने नाम के प्रिय में सर्वत्र यही लिखते हैं कि “श्री जानकी
रमचरितपरमपद गियनान पात्रक के किसी गिय कृत” । पुन कांड एक ध्यति के लिये
नहीं जान पड़ते, पहिला कांड मयत् १८८० का लिखा है और गेव कांड १६१५ के लिखे हैं ।

No 11—रत्निकणी मंगल *Verse Substance*—country made paper Leaves
—8 Size—9½×6½ inches. Lines—21 on a page Extent—190 slokas
Appearance—old Complete Correct. Character—haathi Place of deposit
—Library of the Maharaja of Banaras.

Rahmān nā gālā—The story of the marriage of Rahmān with Kṛṣṇa
by Narnhari Bhāta. He is probably the same Narnhari (1550 A.D.) who attended
the Court of Akbar and who according to tradition was instrumental in
inducing Akbar to put a stop to cow killing in his Raj.

Beginning—श्री गणेशायनम ॥ प्रथमहि लीने नाम परम विधि पादये ॥ गनपति
गौरि मनाष सो मान्य गइये ॥ ने सारद को नाम सो पिथिहि मनाइये ॥ सुर नर मुनि
गनदेव सो जगपति पाइये ॥ भूषति भाषम राउ सो कुंदन पूर घरे ॥ साखा कया रुकु
मिनि मेघे तिरदये ॥

End—छन्द ॥ तारे जो मुलु सब भाति अपने कहे मुने जो गायइ ॥ कथान काज
विप्राह मंगल सर्वदा सुख पावइ ॥ इह कया परम पुनेत मनुष्यो रत नर करि चित लाइया ॥
नरहरि महा जा पातु सब विधि परम पद जो पाव्या ॥ शुभमस्तु सति श्री रकुमिनो
मंगल नरहरि माट शिवाि समाप्त शुभमस्तु रस्तु ॥

Subject—श्री रत्निकणी कृष्ण विप्राह वखन ।

Note—यद्यक्तो कवि नरहरि माट हैं । इनका विशेष कुछ पता नहीं है ।

No 12—बालमुकुन्द लीला *Poem Substance*—country made paper
Leaves—107 Size—10×4½ inches. Lines—9 on a page Extent—2250
slokas Appearance—old very Incomplete Generally correct. Character
—Devanāgarī. Place of deposit—Library of the Maharaja of Banaras.

Bālamukunda Līlā—The translation of the first half of the tenth canto
of Bhāgavat dealing with the life of Kṛṣṇa Candra by one Bhāgama Kavi.

Beginning—श्री रामायनम ॥ श्री गणेशायनम ॥ नैका । हेरय प्राणराय मुनि
व्रतत युद्धिप्रद प्रसफुट विप्रध्वजकर गजेन्द्रधदन लखोदर सुन्दर ॥ वन्देह यदुनदनस्य धरित
विचयदाकरवैष्णवेष शुभमाप्रुधति नितय तद्गायपातयते ॥ १ ॥ (श्री प्रकार दो पद्यों में
मंगलाचरण के १२ श्लोक हैं इहाँ में कुछ महापात्र धीरवदसिंह का भो वधेन हे लखे
बोद्धे माया कथिता है) कवित ॥ दहक ॥ योदि धनकल मलकल बाल विधु भाल सेंदुर
तसत मानो मानो वोर वेष को ॥ भद कल मरत लसा धलिवुन्द सुह कुहली कात मन
हृत महेष को ॥ मीषम भनत सेतो ध्यान जो घरात नर लेशु न रहत सर कुमति कनक
को ॥ धाँरै सदायक सकल विधि दायक समस्त शुभ वरय पग पुनिये मनेष को ॥ १३ ॥

End—बाजि जिचिच विचारि के काह सो घाह कह्यो जय गोप कुमारन ॥ आतुर ताहि तहां लपि कै बटिखे को लगे हरि व्योत विचारन ॥ पीठ पे कामरी छ्यो वरि के चडि के चित चाहै कसाइन मारन ॥ त्यों गहि गास अकास चरयो पल के छल काह को दूरि अडारन ॥ ६ ॥ दोहा ॥ कस पकरि घनस्याम तब ताके मुख भुज मेलि ॥ लिये काठि अता-घरी गयो केसियो पेलि ॥ ६६ ॥ ताहि मा (आगे पच हो नहीं है)

Subject—पुर्नार्द्ध दशम भागवत से श्री कृष्ण लीला ।

Note—प्रथमता कवि भीषण है ।

No 13—बाहु सयोग *Verse*. Substance—country made paper Leaves—22 Size— $7 \times 3\frac{1}{2}$ inches. Lines—7 on a page Extent—208 shlokas Appearance—ordinary Complete. Incorrect. Character—Devanāgarī Place of deposit—Library of the Mahārāja of Banāras

Bahusaridnga—Praises of the monkey god Hanumāna by the celebrated Tulsī Dāsa (Died 1623 A.D.) The manuscript is dated Samvat 1882 (1825 A.D.)

Beginning—श्री गणेशायनम, अथ बाहुसयोग गात पिर मोचने ॥ दोहा ॥ श्री रघुनोर ॥ नाम करि सहित लपन हनुमान ॥ राबि हिंदे बिस्वास दिठ पुनि पुनि करो प्रनाम ॥ १ ॥ भोमवार आदिक पडे को नर सहित सनेह ॥ रज संकट व्यापे नहि याडे मुष घन गेह ॥ २ ॥ मुचि सनेह पठहि नर नितज गात बलवान ॥ दोह है रत तुनसी पद लष पक्ष है सब ठाम ॥ ३ ॥ कजित ॥ श्री राम कृपालु विराजत मध्य महा द्विज धाम गहे धनुषाणा ॥ धाम दिसा महिना मुठि मुन्दरि दविन चोर लपन चलवाना ॥ धामर पान लिये प्रभु के छोड़ पाये तने हनुमाना ॥ तुनसी हिंदे धर ध्यान सदा भ्रम ससय त्यागि कह्यो परिमाना ॥ ४ ॥

End—राम नाम पितु बधु सनन गुरु पुज्य परमहित ॥ साहेज सपा सुनान नेह नाते पुनोत दित ॥ देस कोस पार कर घरनि घन धाम धरम गति ॥ रात पाज सय साज राजत समान अति ॥ स्वारथ परमारथ सकन मुलम राम ते अमित फन ॥ कह तुलसिदास अथ सन दिनह एक राम ते मोर भल ॥ ५८ ॥ अथ मथ ॥ डों हरि मर्कट मर्कटाय झाडा ॥ इति मथ ॥ इति श्री बाहुसयोग तुलसीदास कृत हनुमान स्तोत्र संपूर्णम् ॥ सवत् १८८२ मिति वैशाख कृष्ण नैम्याम् ६ चन्द्र वासरे शुभमस्तु ॥ दसवत सोवरतन संडे भूखलो पास ॥

Subject—हनुमान जी का स्तोत्र ।

Note—श्री गोस्वामी तुलसीदास जी कृत है । लिपिकाल सवत् १८८२ वैशाख कृष्ण ६ चन्द्रवार है ॥

No 14—काव्यकलाधर *Verse*. Substance—country made paper Leaves—105 Size— $8\frac{1}{2} \times 4\frac{1}{2}$ inches. Lines—20 on a page Extent—2560 shlokas. Appearance—old. Complete. Incorrect. Character—Devanāgarī Place of deposit—Library of the Mahārāja of Banāras.

Kāvya-kalādhara.—A book on Hindi rhetoric by Raghunātha Bandyana, who was the court poet of Mahārāja Barwanda Singh of Banāras. He composed this book in Samvat 1802 (1745 A.D.) The manuscript is dated Samvat 1835 (1778 A.D.) (See No 15)

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ दोहा ॥ मुकुन होति मम कामना मिटत विपन

के हुंद ॥ गुन सरमत बरमत हरष मुमिग लालमुकुंद ॥ १ ॥ कवित ॥ अये चमे काम मोद
कहे कवि रघुनाथ चारि य पदारथ घटपदी मे लहिचे । रिद्धि भिद्धि शुद्धि को विरिद्धि
होति दिन दिन विद्या भोर घल त्रिषसाय जे ध्यो चहिचे ॥ सततो घटति लग कोरति पडत
मुष प्राणिप घटत चाप मोद महा बहिचे । तरन के मुत को यसाति हे न कछु नरा गुर
के सरन को सरन खाद रोहिचे ॥ १ ॥

अट्टाह्न ये द्वे श्विक मयत सर मुषसार । काव्य कलाथर को भयो कातिक मे अग्रतार ॥ १५ ॥
सु० । १८०० कार्तिक ॥

End—मोटाहत्त लखन ॥ दोहा ॥ सकु हिये गुर सोम की दरसन चाहे चित ॥ प्रीत
भीत लग बरकिये हाथ सो मोटाहन ॥ ११४ ॥ उदाहरने यथा ॥ सेरो हूँ तेरो रौंगी मदा
अह सोहि हितु नर छपर लेणो । तेरो कही में करौंगी मदा अह तो उपकार दिये अवरोणो ।
नातु रह्यो न मुन्यो जय को रघुनाथ हो मेह के आसन भेणो । तेउ उपाद कनो फारिसे कछु
मेरी गनो हरि आवे में देखो ॥ ११५ ॥ श्री कवि रघुनाथ चंदोदन काशी निवासी विरचिते
काव्य कलाथरे विभाव अनुभाव सवारी अस्याहं नवरस हाव वर्णन नाम चतुर्दश मयूषः ॥ १४ ॥
सुममस्तु सयत् १८३५ मितो आसनी मासे मुकुल पडे गुह यारे के मयुरनः ॥ ॥

Subject—नायिका भेद अलंकार आदि ॥

Note—यद्यक्तो घटोदन कवि रघुनाथ है । ये महाराज बरिदासह के आश्रित
थे । यय का निर्मासकाल कार्तिक सयत् १८०० और लिपिकाल आश्विन शुक्र ४ गुरवार
सयत् १८३५ है ।

No 15—श्री राधा कृष्ण विलास *Verse*. *Substance*—country-made
paper *Leaves*—120 *Size*—11 x 5½ inches. *Lines*—8 on a page. *Extent*—
2 500 slokas *Appearance*—old. *Incomplete*. *Correct*. *Character*—Deranā-
gari *Place of deposit*—Library of the Mahārāja of Bandras.

Sri Rādhā Kṛṣṇa Vīlāsa—A book on Hindi rhetoric with special refer-
ence to the description of the beauty of Rādhā and Kṛṣṇa. The name of the
author is Gokulānātha (see No 2 of 1900), who was the son of Raghunātha
Bandiyana. Gokulānātha was appointed Superintendent of the Charity Depart-
ment by Mahārāja Barivanda Singha, and when later on Mahārāja Udiṣa
Nārāyaṇa Singha succeeded, he wrote this book in Samvat 1858 (1801 A.D.)
with his permission. The Bandras Rāj family is said to have been founded by
one Manasā Rāma, who by his intelligence and craft succeeded in winning over
the then Nawāb of Avadh. The manuscript is dated Samvat 1860 (1803 A.D.)

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री विन्यासननिरासिन्ये नमः । सिद्धुर भरो
भुपुड एक दत सोहे मानो जस चपटोस ताको दोषे वडो, रती को । रिद्धि लप रिद्धि लप
मुमति समुद्धि लप लोखेदर लोखो हे सदन सरस्वती को । चारो फलदायक सहायक सकरे को
भेदो घन हरे मत महः भति को । गोकुल कहत महादेव को लडासतो हे गजमुष चंद्रमान
लाल शरवती को ॥ १ ॥
यमु सर यमु विषु माघय मास अमद । यंय कव्यो प्रारंभ लहि पुनो धुरन चंद ॥ २६ ॥

End—घोरठा—नौवीं लेखु समारि कोऊ किनारी को करत । अयहु न निंसि अधियारि
हरवराद हतनो कनो १८ मोटाहत्त लखन । सकुच हिय मुकुनाग को दरसन चाहत चित । प्रीति

भोति सग वरनिपं हाथ से मोट्टाहत ९० यथा—नद को लाल लसोदा को नदन घंटन से
सिगरी जगती को। दृष्टनिकदन ददन रापत देपतही वनके मनही को। गोकुलनाथ हे माथ
सखानके कालिंदोपे सित धोरन ती को। पाय परे चलि आय देपाय दे साघरे रग को डांघरी
नोको ॥४॥ सेरटा। री सखि मोहि देपाय यह नदन नटराय को। लपटा छिटि चलि जाय
लाज निगोही चपनते ९१ इति श्री कवि गोकुलनाथ कासीनिवासी विरचिते राधाकृष्ण
विलासे हाथ बनेन नाम द्वादशे विलासः ९२ श्री सवत् १८६० मिति श्रावण मासे कृष्ण पक्षे
पचम्या युध पारसे श्रीः सुममस्तु कल्यानस्तु यथं शनैक सख्या ९५०० श्री विन्ध्यचलनिवा-
सिन्ये नमः ॐ नमो सूर्ये नमः ॥

Subject.—श्री राधा कृष्ण चरित्र समुक्त नायिका हाथ भावादि वर्णन का काव्यग्रन्थ ॥

Note—ग्रन्थकर्ता कवि गोकुलनाथ कासी निवासी हैं—ये रघुनाथ कवि के पुत्र थे जो
महाराज काशीराज मसाराजजी के समय में यहां आए और उनके पास रहे। फिर महाराज
धरिण्डसिंह के समय में कवि गोकुलनाथ को दानाध्यक्ष का अधिकार मिला और फिर जब
महाराज उदितनारायणसिंह राजपदाधिकारी हुए तब उनकी आज्ञा से यह ग्रन्थ उन्होंने
रचनाया। निर्माण काल १८५६ वैश्व शुक्ल १५ और लिपिकाल ॥ १८६० श्रावण कृष्ण ५ बुधवार है ॥

No 16—चानप्रदीप *Verse Substance*—Foolscap paper Leaves—7
Size—9×5 inches Lines—9 on a page Extent—125 slokas. Appearance—
old. Complete Incorrect Character—Devanāgarī Place of deposit—
Library of the Mahārāja of Banāras

Gyāna Pradīpa—Praises of God by Gangā Rāma Tripathī, who wrote
this book in Samvat 1846 (1789 A D) The manuscript is dated Samvat 1857
(1800 A D)

Beginning—श्री गणेशायनमः । कुंडलिया ॥ रात्रत मन मोहन मुदित श्रीधन
स्याम स्वरूप ॥ पीत वसन भृङ्गुटी कसन सुंदर हसन अनूप ॥ सुंदर हसन अनूप रूप अति
उत्तम द्वाजे ॥ मनु तारागन गोपि मध्य मुख चद्र विराजे ॥ सेवक मुलभ दयाल नाम कहया
निधि द्वाजत ॥ कृष्णचंद्र जगदीश भाधुरी मूरति राजत ॥ दोहा ॥ श्री सुन्दायन रचन प्रभु
कृष्णचंद्र नद नन्द ॥ परन कमल युग यदि रज करो दूरि दुख दद ॥

End—कुंडलिया ॥ गंगाराम चिपाठि द्विज मालवीय विख्यात ॥ कीन्हे चानप्रदीप
पर विमल ग्रन्थ अयदात ॥ विमल ग्रन्थ अयदात जहा हरि भजन निरतर ॥ कीन्हे मति
मति छंद नाम लीन्हे बिनु अतर ॥ जाते कोनिहु भाति होय हरि भजन प्रसगा ॥ ध्यायो
सो हरि चरन जहाले प्रगटी गगा ॥ दोहा ॥ अष्टादश शत अक्ष अधिक जालिस सवत् माह ॥
भयो ग्रन्थ भाटी सुदी चतुर्दशी गुरु काह ॥ इति श्री गंगाराम कृत भाषा चानप्रदीप समाप्त ॥
सवत् १८५० कार्तिक सुदी ६ चंद्र ॥

Subject—भगवद्गीता ।

Note—कर्ता गंगाराम चिपाठी मालवीय हैं । निर्माणकाल सवत् १८४६ भाटी सुदी
१४ गुरुवार और लिपिकाल सवत् १८५० कार्तिक सुदी ६ चंद्रवार है ।

No 17—अनन्दाम्बुनिधि *Verse Substance*—Śivarampur made paper
Leaves—688 Size—17×5½ inches Lines—10 on a page Extent—28,350
ślokas. Appearance—new Complete Generally correct Character—Devā-
nāgarī Place of deposit—Library of the Mahārāja of Banāras

Avanidambunī — Translation of the *Bhāgavat Purāṇa* by Mahārāja Raghubarīya Singha of Rewār, who completed it in Samvat 1911 (1854 A. D.) He took four years in completing this translation

Beginning — श्री गणेशाय नमः । अथ सिद्ध श्री महात्मना विराज्य श्री महात्मना श्री राधाग्रहादुर श्री कृष्णचंद्र कृपापात्राधिकारी रघुनाथसिद्धजुदेव कृप आनंदभुविनिधि लिख्यते । शोरठा अथ हरिपद अरविद मक्त मूम आनंद कर । अथतु मुचम मरुद कुमति कुरता ताप हर १ द्वय । भव मय मनन करन पुर मन काम जनन के । तोर्यासद थियि संमु यदा मुनि योग्य मनन के । प्रनतपान मयमिधु पोत जेहि मुर मुनि गाव । जाकी सेवा दोड भक्तनन मुक्ति न रघार्य । कलि कुमति दरन अरणन धरन माक्ति भरन मुख प्रद नरन । अथान करन आपद हरन यदी श्री कटुहर वरन १ दोहा । तनि मुर कुरनम मयदा पितु मादन धरि सीध । निन कोही धन को गमन जयति राम अगदोष १ कजित । भार ते सीहित ॥ को जितोकि के के प्रगटे मयुरा में भुरारी । लोला अनत करी द्रव में दुलदार्द अनेकन मारि मुरारी । द्वारका को मयुरा में चले प्रमु दासन को सन भाति सुघारी । ते कटुनदन के पद यदत है रघुनाथ सदे मुखकारी ॥ १ ॥

End — दोहा । यह मुख में किमि कहि सकौ पितु जिमुनाय प्रभाउ । जानु कृपाते मोष्टु सम रघो अथ भरियाउ द सोगार । मुदु अमुद भयो को दोह । मुमति मुयारि निहो वन कोह । १ मे भगवत अर्थ सब लोन्धी । तेहि अनगुन भाषा करि दोह्यो १ हरिउरुधु अथ भारत आदी । कोरुधु बहुत पुरान मरजादी ३ मर्म सहिता पादिक करी । कया रघो को को मति मैरी ४ कहु कहु तेहि सनय विचारो । मे निधि दियो मुमति अनुकारी ५ कृष्ण चरित अति मुपद विचारो । मुनहु मुमति यह पिनय हमारो ६ मे अति कान्हे मनहि दिठारि । को कहु धन्यो को दियो धनार ७ पै अस मन में अहे भरोस । हरि नर गुनि कौड करी न रोस ८ उगन प्रीति सहित मुद मेरि । आनंद अरुधि यणहि चोर ९ पडे मुने को प्रीति समेनू । मगपत दास समाज समेतू १० तिनको बहुत है मार प्रनामा । मेपर कृपा करिद मति धामा ११ देखि हरिहि यह जिनय मुनार । रघुनाथते लोके अपना १२ दोहा । अथ रघुनाथ कटुपति अयति रघुनदन कटुरान । मे मन अपने घर करहु दिने करत रघुनाथ ० इति सिद्धि मामन्दाराय धिरान आधवेश जियनाथ सिहात्मन सिद्धि श्री ममहाराजाधिरान श्री महात्मना श्री राणा गहादुर श्री कृष्णचंद्र कृपापात्राधिकारि रघुनाथसिद्ध कृते आनंदभुविनिधौ समाप्त मुमनस्तु ॥ ० ॥

Subject — श्रीमद्भागवत के द्वादश स्कंधों का द्वादशप्रद अनुवाद ।

Note — अथर्कता महाराज रघुनाथसिद्ध रीकाधिराजि हैं । जिन्होंने इस पुस्तक को आदि में लिखा उसका नाम अनुमान है । मैं महाराज के अर्थों के ध्यान में ।

निर्माणकाल — सत्र सत्र से मुपद्रव । साल साल को सत्र मुद्रावन ८ कातिक भास आभाहि कीने । आनंद भुविधि यथ नजोने १ रचत धीतिये वरपहि चारो । क्रियो कया करि पर मुरारी १० आनंद से ग्यारह को साला । इस माघ मुखवार धिसाला ११ कृष्णपद दसमो मुखदार् । धन को सन सकातिहि आई १२ आनंदभुविनिधिधि मुम यथा । जो सतन सतत धत यथा १३ तथ यह यथ समापत मयउ । मम अहित पुरन हूँ गयउ १४ दोहा । धन्य सत्य में कदत हैं । दोड हाथ उठाव । मेरो नहि करतुति यह सब कोन्दी कटुराय ४ ।

No 13 — श्रीमद्भागवत महात्म्य Verse. Substance—country made paper Leaves—69 Size—11×6 inches Lines—12 on a page. Extent—200 slokas Appearance—new Complete Generally correct Character—Devanāgarī. Place of deposit—Library of the Mahārāja of Banāras

Śrīmadbhāgavat Mahātmya—Translation of an extract from the Padma Purāṇa dealing with the virtues of reciting the Bhāgavat by Mahārāja Raghurāja Singha of Rewār, who wrote it in Samvat 1911 (1854 A.D.)

Beginning—योगयोगाय नमः ॥ दोहा ॥ जेजे रघुकुल कमल रवि जे राखस कुल काल। जेजे भुव भास हरन जल नोष नदलाल १ जे बानो दानो सुमति जयति भवानो नद। जेजे पितु विष्णुनाथ पद जे हरि गुरु मुकुद २ जे सुक जो जनमत समे चान विद्वानहि पाय। कन्यो कृष्ण ध्यावत मनहि लह्यो व्यास पद्विनाय ३ पुष पुष कहि काहि को गुहरावत मुनि जात। सब सखल व्यापित भयो उतर तरु दिय तात ४ सो गुरु के जुग पद कमल मे धरि के निज माय। श्री भागवत महात्म को वरमत हो मुद गाय ५ सुंदर पदुम पुरान के हे अध्याय चौबोस। ताको भाष रचि सुपद पुर करौ जगदीस ६ जो ० नीमपार देखहि यक कला। चेटे सेनरु दुष्टि पिसाला १ कियो मृत सो प्रण्य सुपारी। कृष्ण कथा को मुनन विचारी ॥ २ ॥

End—दोहा। मुनत भागवत सात दिन होती मुक्ति विशेषि। यामे भूष परि-
द्विते साखी लोके लेधि १ हरिमुख ते प्रटत भयो यह रस रूप पुरान। पाठ कत जो जन निते होत सो सम भगवान २ सब सिद्धांतन सार यह तुम सो कियो वधान। होडि भागवत जगत में मुक्ति उपद न चान ३ ले प्रथमहि असकथ ते अरु द्वादस परजत। पान करहु रस भागवत हे सेनरु मतिमत ४ नारद रवि भागवत के ग्रह बोज मतिवान। भक्ति सक्ति छदहु बहति लदुपति देव न जान ५ कोलक ग्यान विराग हे कृष्ण प्रीति विनियोग। यदी मच पकि जात हे यदुपति पुर सब लोग ६ यह भागवत महात्म को मुने पठे चित लाय। तासु पाप जरि जात हे अजसि परमपद जाय ७ रद पड ससि सयते अमा पुर गुर वार। मास फाल्गुन भागजत मो महात्म अवतार ८ इति सिद्ध श्रीमन्महाराजा धिराज बाधसेस विश्वनाथसिद्धात्मज सिद्ध श्री महाराजाधिराज श्री महाराजा बहादुर श्री कृष्णचन्द्र कृपापाषाणधिकारि रघुराजसिंह जू देव कृते आनर्दाबुनिधो यद्वा पुरानीय श्री भागवत माहात्मे ज्योतिस्स्वराग ॥ २ ॥ श्रीभागवत महात्म संपूर्ण ॥

Subject—पद्मपुराणोद्धत श्रीमद्भागवत माहात्म्य का कविता में भाषानुवाद ॥

Note—यह ग्रन्थ महाराज रघुराजसिंह रीवाधिपति कृत है। निर्माण काल स १८९१ फाल्गुण कृष्ण ३० शुक्र वार है ॥

No 19—रामायमेघ Verse. Substance—country made paper Leaves—194 Size—12½×6 inches. Lines—12 on a page Extent—6 000 slokas. Appearance—old Complete Incorrect Character—Devanāgarī. Place of deposit—Library of the Mahārāja of Banāras

Rāmāyamegha.—Translation of the Pātāla Khanda of Padma Purāṇa, dealing with the Horse sacrifice by Rāma Chandra, King of Ajudhyā. The name of the author is Hari Sahāya Giri of Mirzapur, who composed the book in Samvat 1859 (1802 A.D.) The date of the manuscript is Samvat 1600 (1803 A.D.) The author gives a detailed account of himself in the beginning of the book which has been quoted in full in the "beginning" There are two copies of this book in this Library The second copy has 158 leaves and is 13½×7½ inches in size.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री गुरु चरन कमलेभ्योनमः ॥ श्री सीता रामाय नमः ॥ श्री विश्वाय नमः ॥ श्री देव्यै नमः ॥ श्री हनुमत्देवाय नमः ॥ श्लोका लिखते ॥ सकलमेवैरपदापीपापी जगतामुरुरागध्या ॥ विनयप्रत्यक्षकला वरदा विन्येश्वरी ज-

याति ॥ १ ॥ श्रीमद्राम शिरोरत्नं तत्समीपे विराजते ॥ मित्रिजापुत्रनामाद्यं पुंयं तु मित्रिजा
 पुर ॥ १ गंगा तटेति विमलं गोमितीं जनसङ्कुलं ॥ समयेययं संपन्नं सर्वनाम्नोदरं ॥
 यत्र सन्धासिः सिद्धा वसन्ति शिष्यपुत्रकाः ॥ प्राणिनां निर्मलाः शान्ता दान्ता मेदविप्रसङ्गाः ॥
 ४ ॥ साध्वो निर्मला शान्ता यत्र सन्ति विरागिणः ॥ शिष्य शान्ति स्मराममेदधानाभिशा-
 रकाः ॥ ५ ॥ येनैवकारचापि शेरारव शक्ता गाथिता तथा ॥ महात्मानो महाधेरा चट्टेपाट
 परस्परं ॥ ५ ॥ ब्रह्मणाः पविडाम यत्र गुणवन्तश्च भूरियः ॥ श्री मद्राम प्रसादाद्याः गच्छ
 ब्रह्मनिहपिणः ॥ ६ ॥ धनुना किमिहोत्तेन यथा आश्रमिष्यस्य ॥ यत्र सर्वं यथागम्यं व्यक-
 मेरया चरन्ति हि ॥ ७ ॥ तपोदयगिरिः शिष्यो वृषावर गिरि स्मृतः ॥ भोलागिरिस्तु तच्छि-
 ष्यस्य शिष्यो महाशक्तिः ॥ ८ ॥ श्री सुधीशगिरिः स्यातः सर्वमदुसमञ्जितः ॥ यस्य कीर्ति-
 र्महापुष्टे, गोमिती विस्तिमहले ॥ ९ ॥ रामाश्वमेधिक कथा कथिता पुरा या वात्स्यायना ग्रहि
 सहस्र मुखाहि नाह ॥ तच्छिष्य शिष्य इह विप्रमुदे नियद्वा तं भाषया हरिप्रहाय गिरि
 करोमि ॥ १० ॥ यत्पुत्रं मुनिना कृतं मुक्तिना व्यासेन ॥ जेपेन यत्संग्रहं हयमेधिक प्रमु-
 कृतं वात्स्यायना यादुना ॥ तद्रूपका वितनाति रामचरितं चट्टापया भाषितं ॥ श्री मद्राम
 प्रसादतो हरिप्रहायाद्यो गिरिप्रमुदे ॥ ११ ॥ माण प्राकृत सङ्कृता सवर्माः सन्तिनिर्मिताः
 प्रोक्तेः ॥ ममतु शिष्योः श्रममेतं दृष्टा तुष्यन्तु सज्जनाः सरलाः ॥ १२ ॥ यदि दास्यतोऽहं दोषं
 तदपि खलो मेधिकं मुहुर्द्विषा ॥ यस्मात्सदोषं यस्तुनिदोषं नापो कदापि सद्यते ॥ १३ ॥
 शेरठा ॥ बुध विदारि भुज चारि ॥ गन नायक गज पर वदन ॥ सिद्धि कारि भय छारि ॥
 यदौ शिष्य मुत विप्रहर ॥ १ ॥ यदौ षट् भद्र भद्र गोपयति कदाहं तन ॥ विप्र कुमुद
 मुष चंद वेद दयाव्यो मीन हू ॥ २ ॥ यदौ त्रयय नद सोतापति रावन दुषट् ॥ श्रीम रूप
 मुषकंद भूमि धत्तो निज पीठ पर ॥ ३ ॥

End—इह हरिगोता ॥ फल चारि लहिहै नारि नर सियराम कृत गुन गाय
 के ॥ तिहु काल कुचल विचल जस रंदिहै दमा घर दार के ॥ बहिहै जो यह दपुवर
 कथा सुनि है जो कोउ मन लाइ के ॥ भज विभव भोग विनाम करि बहिहै ते हरि पुर
 जाइ के ॥ १ ॥ श्लोक ॥ नवयाराष्ट्रमहोमिनवत्सरे सविषयास्त्रिनवदृशनी तियो ॥
 हरिप्रहाय गिरिप्रमुदेयजा व्यधितुरामकथां नरभाषया ॥ १ ॥ इति श्री वद्वपुत्रने पातालपंडे
 सेध्यात्स्यानसुधादे हरिप्रहायगिरिकृते रामचंद्र अखमेध संपूर्ण सुभंस्तु शिष्यनस्तु सवत्
 ॥ १८ ॥ ६६ ॥ मोतो भादे वडी ॥ १ ॥ वार सुभ ॥ श्रीः सीताराम सीताराम सीताराम
 सीताराम ॥ ६६० ॥ दोहा सुमार ॥ श्लोक गिरि ६००० ॥ श्री सीताराम सीताराम सीताराम
 सीताराम सीताराम सीताराम ॥

Subj.—श्री, रामराम के, चरित्रे, यद्य आ, बर्ष, १ वद्वपुत्र, पाताल, पंडे से, उद्धृत और अनुवादित ॥

Note—ग्रन्थकर्ता हरिप्रहायगिरि मित्रापुर वासी है । इहोनि अपना विशेष हाल
 आदि के श्लोको में लिखा है । इसी लिये ये उद्धृत कर दिय गये हैं । निर्मोख काल सवत्
 १८५६ आश्विन शुक्ल विजया १० और लिषिकाल सवत् १८६६ भादो वदो १ मंगलवार है ।

No 20—रामसक्तिप्रकाशिका *Prose and Verse*. Substance—country made
 paper. Leaves 141. Size—14x6 inches. Lines—8 on a page. Extent—
 600 slokas. Appearance—ordinary. Complete. Correct. Character—Deva
 nagari. Place of deposit—Library of the Maharaja of Benares.

Idem—Annotations on the Rāma Chandrikā of Keshava
 Dāsa by Jānaki Prāsāda, who wrote the book in Samvat 1872 (1815 A.D.) The
 manuscript is dated Samvat 1874 (1817 A.D.)

Beginning—श्री गणेशायनमः । कवित्व ॥ कुशलित मुठ गंड गुजत मलिद
 फुड यन्दन बिराजे मुठ अदभुत गति को । बाल ससि भाल तोनि लेखन, बिसाल राजे
 कनि गन माल मुभसदन मुमति को । ध्यावत विना ही भ्रम लगावत न वार नर पावत
 अपार मोद भार धनपति को । पाप गन मदन को विघन निरुदन को आठो वाम बंदन
 करत गनपति को ॥ १ ॥
 चचला छंद ॥ नेन मूरख साजि सिद्धि निशीष सबत चार ॥ गुरु सयुत शुक्रपंच सुरेश पुति
 बाह ॥ चार दिक्पिचि हल तार वरिष्ठ योग नजीन ॥ राम भक्ति प्रकाशिका अथतार
 तादिन लोन ॥ १० ॥

End.—मूल ॥ दुपाकांता छंद ॥ अथैष पुण्य पाप के कलाप आपने यहाइ ॥ विदेह
 राज्ञ्यो सदेह भक्त राम को कहाइ ॥ लटे सो मुक्ति लोख लोख अतमुक्ति टोइ ताहि ॥ कहे
 पडे गुने को रामचंद्र चंद्रिकाहि ॥ ४० ॥ इति, श्रीमत्सकललोकलोचनचक्रारवितामयि
 श्रीरामचंद्र चंद्रिकायामिन्द्रकिट्टिरचिताया कुशलव समागमे नामैकौनसत्वारिण्यत् प्रकाश
 ॥ २६ ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री

टीका ॥ कलाप समूह ॥ पुण्य पाप के नाश को मुक्ति टोति हे यह येदात को मत
 हे ॥ अथवा इन के धारन सो प्राप्ति को यचादि को अथैष सपूर्ण पुण्य हे तासो पाप को
 कलाप यहाइ के ॥ ४० ॥ कवित्व ॥ कैयो मुभ सागर विराजमान कामे पैठि पायहत
 परम पदारथ को राशिका ॥ कठमें करार सोभ धरत समा के मध्य कैयो मोहे माल डर
 विमल उपासिका ॥ सेरही लाके लहे सुमन प्रयोगराई चानकी प्रसाद कैयो भारती
 हुलासिका ॥ जानकी प्रकाशिका मुकुतिप्रद काशिका टे देख्य सुनान राम भगति प्रकाशिका ॥ १ ॥
 टोहा ॥ राम भक्ति वर जानि के राम भक्त जन हेतु ॥ रामचंद्रिका सिंधु मे रच्यो तिलक मय
 सेतु ॥ १ ॥ जो सुपथ तनि सेतु को भुलहि और मग जोर ॥ रामचंद्रिका सिंधु को लहहि
 कौन बिधि और ॥ ३ ॥ इति श्रीमत्सकललोकलोचनचक्रारवितामयि चानकी प्रसादाय
 जन जानकी प्रसाद निर्मिताया रामभक्ति प्रकाशिकायामेकौनसत्वारिण्यत् प्रकाश ॥ २६ ॥
 सप्तमरे १८०४ चेच मासि शुक्र पक्षे त्रियो नयमा शुभ वासरे पुस्तकामिद समाप्तिमगन्तु ॥

Subject—केशवदाश कृत रामचंद्रचंद्रिका पर तिलक ॥

Note—ग्रन्थकर्ता तो रामचंद्रिका के केशवदाश हैं । टीका के अन्त में टीकाकार
 अपना नाम “जानकीप्रसाद निर्मिताया” ऐसा लिखते हैं । टीकाकार ने आदि में यह भी
 लिखा है कि विस्तार मय से मैंने केवल कठिन शब्दों के अर्थ किये हैं । टीका सदा १८०४
 की लिखी है और ग्रन्थ का लिपिकाल सन्त १८०४ है ।

No 21—श्रीरामचंद्रचंद्रिका Verse Substance—country made paper
 Leaves—185 Size—12×7 inches. Extent—3 410 ślokas Appearance—new
 Complete. Generally correct. Character—Dewanāgarī. Place of deposit—
 Library of the Maharāja of Banāras

Sri Ramachandra Chandrikā—The story of Rāma Chandra's life by the
 poet Kēśava Dāsa, who composed it in Samvat 1658 (1601 A.D.) There are
 three manuscripts of this book in the Library of the Maharāja of Banāras. The
 second manuscript has 231 leaves is 11×6½ inches in size and is dated Samvat
 1882 (1825 A.D.) The third manuscript has 100 leaves, is 13½×6 inches in size
 and is dated Samvat 1888 (1831 A.D.) No date is, however, given of the
 manuscript under notice.

Beginning—श्री गणेशायनमः । श्री रामचंद्रचंद्रिका लिखते । दंडक । बालक मृनालिन ज्यो, तोरि डारि सब काल कठिन काल ये अकाल दीहु दुष को । विपत हरत हठि पद्मिनी के पात सम पंक ज्यो पताल येन पठे कलुष को । दूरि के कनक अंक भय सीस ससि सम राखा है केसोदास दस के यपुष को । संकरे की सकरनि सनमुष होताही तो दसमुष मुष छोत्रे सजमुष मुष को ॥ १ ॥

End—धिमला ॥ अशेष पुन्य पाप के कलाप आपने बहाइ विदेष्ट राग उयो मदेष्ट भक्त राम को कटाव । सहे धुमति लोक लोक अंत मुक्ति दोर ताहि पठे गुने कटे मुने पु रामचंद्र चंद्रिकाहि ३३ हति श्रीमत्सकललोचनचकोरचितामणि श्रीरामचंद्रचंद्रिकाया केसयराइ शिरचिताराया जय पुनं धर्मेन नाम जनसत्पारिंश' प्रकाय ॥ ३३ ॥ समाप्त ॥ सुभमस्तु ॥ रामनाम ॥ रामनाम ॥

Subject—रामचरित ।

Note—य चर्करी केसयदास है । ये काति के सनाथ ब्राह्मण थे । इनके पूर्वज कृष्णदत्त मिश्र थे । उनके पुत्र गणेश, उनके काशीनाथ, और उनके केसयदास हुए जिन्होंने इस ग्रन्थ को बनाया है । इसका निर्माण काल सं० १६३८ कार्तिक सुदी सुद्धवार है । इस ग्रन्थ की दो और प्रतियाँ इस पुस्तकालय में हैं जिनमें से एक सन्त १८८२ और दूसरी सन्त १८८८ की लिपी है ।

No 22—अनुभव पर प्रदर्शन टीका *Prose and Verse. Substance*—country made paper. Leaves—319 Size—12½ x 9½ inches. Lines—24 on a page. Extent—9,165 slokas. Appearance—ordinary Complete. Correct. Character—Devanāgarī. Place of deposit—Library of the Mahārāja of Banāras

Anubhava para pradarśanī tilā—Annotations on the 12 books of Kabira Dāsa by Mahārāja Vatsanāśha Singha of Rewāh (1834 A.D.) The manuscript copy was made in Samvat 1905 (1848 A.D.)

Beginning—श्री गणेशायनमः देवा । श्री हरि मुख प्रिय दास जे मन बच पर जे राम । जे हनुमत जे शिव शिवा जे सरमुति अमिराम १ श्री कबीर ॥ साधु मुख जे जानत मुख भेद ॥ धीनक को टीका करत विस्वनाथ हर वेद १ कथनो अकथ पवेष्ट पडनो यहि को कोई बिचारी ॥ भजन क्रिया जे लिपी करिदि को सो परधाम बिचारी ३ अनुभव पर प्रदर्शन नामा टीका मुनिदि को गेहै । विस्वनाथ परतम परेष्ट प्रभु तेहि मुख ठोर दिवेहे ४ जेतने भर बाँबीर लो के यह है ते भर यही धीनक को मत ले के बने हे याते यह धीनक सन ग्रन्थ केर धीनक है याते याको धीनक नाऊ है और सार सव्द बरनन कियो है याते या धीनक सन ग्रन्थन को सार है तामे प्रमान बाँबीर लो को—चोदह अरब ज्ञान हम भाषा सार सव्द करि ऊपर राख—सार सव्द को रामनाम है ताको धीन नाम बच साखन में बरनन है ताहो धीन को धान यामे बरनन है याते याको धीनक कहै है औ प्रथम को उत्पत्त्य यामे है याते आदि मंगल जो है कबीरजी को सो यही धीनक को मंगलाचरण है यह वाचि के आदि मंगल यह धीन में लिपि दियो है ॥

End—साधी घोषे घोषे सब लग घोषा है अगुवा को साथ । कहै कबीर पेट को बिहारो अन्न का आत्रे हाथ ३६६ अर्थ
(यहाँ पर इस साखी की टीका है तथा यह लिखा है)

विद्धि श्री महाराजाधिराज श्री महाराज श्री राजाबहादुर सीता रामचंद्र कृपापा-

Extent—3 960 slokas Appearance—new Complete Correct Character—Devanāgarī Place of deposit—Library of the Mahārāja of Banāras.

Vālmiki Rāmāyana Ślokaṛtha Pralāsa.—Translation of the first book and five chapters of the fourth book of Vālmiki's Rāmāyana by Ganeśa Kavi, son of Gulāba Kavi. He flourished in 1800 A.D.

वाल्मीकि ।

Beginning—श्रीगणेशायनमः । श्री रामायनम् । गिरणा मुन गिरणा सहित यदि कालिका देश । हनुमान मुनि यंत्र कृत पानि राम लमदीय । १ । कवित । दुष्टि के निधान के प्रधान काश्य कात्म में दोषे घटान ऐसे परष ह्येय के । दुषा ते हरि भुरि भूषण मे पुरि पुरि भूषण समेत हेतु नयो रस वेश के । मनत गनेश उन्द उन्द मे लताम रूप भूप मन मोहे मोहे पंडित मुदेश के । यंत्र परि पुरय के कारण कराय हार दीजिय निवादि नेम नदन महेश के । १ ।

मुद्रकांड ।

End—विह जैसे पाष द्रव को पाष करि उत्पत्ते हे । लपि परा जैसे हे नहो मेह पाय करि अति भन हे । येने तरह की जानुकी हनुमान ताहि न देखियो । केहि विरह करि अति राम के चित होत कष्ट विशेष्यो । १० । दोहा । राम मनुज पति को प्रिया सिया न लपि हनुमत । कपि डूहत घट बेर लीम दुष्टित मय अनत । ११ । इति श्री वाल्मीकीय रामायण श्लोकार्थ प्रकाशे महाराजाधिराज उदित नारायण कारिते गणेश कवि कृते वाल्मीकीय रामायणे मुद्र कांडे पंचम सर्गः । १ ।

Subject—वाल्मीकि रामायण के पूरे बालकांड और मुद्रकांड के ५ सर्गों का अनुवाद ।

Note—लाल कवि के शेष गुणव कवि के पुत्र गणेश कवि कृत । ये महाराज उदित नारायण के आदिता से और उन्होंने की आज्ञा से इन्होंने यह अनुवाद किया था । निर्माणादि काल का पता नहीं है ।

No 25—*Kosala Pāṭha* Verse. Substance—country made paper Leaves—236 Size—13×6½ inches. Lines—11 on a page Extent—5,310 slokas. Appearance—old. Incomplete. Correct Character—Devanāgarī. Place of deposit—Library of the Mahārāja of Banāras.

Kosala Pāṭha—Translation of a Sanskrit book called Kola Kalpa (?), describing in details the scenes from Rāma Chandra's life as described in the second book of Vālmiki's Rāmāyana. The name of the author is Rudraprasāda Singha who composed this book in Samvat 1877 (1820 A.D.) at village Māndavya on the banks of the river Ganges.

Beginning—..... । खहु मुकुमारु । कार्य सकल मची सिर रापी । आपुन कंत-पुर अभिजापी । प्रथमहि केकेह गृह आये । दीप पानि मृत्या अचिकाये । काल प्रसस सचिय गण भूरी । बोलत प्रतिहारिन पुर दूरी । मध्य कक्ष ते मची येते । गये मास मंदिर कट तिते । केकेह प्रतिहारिण आरे । गृहय रानि को पालन नारे । ८ । दोहा । कोप सदन मुनि कपु किमि जिमि करि सिंह निहारि । केदली ताल सखि तब मानहु वाता थारि । ९ ।

End—दोहा । मुहले नहि हिसिख फल पशुते सुद्धि न थोर । पुरचप महि गधिका सरिस सरिस अनामिल भोर । ६ । चौ० । एक एक मुख सारिठ माद्य । हो सारिठ मुख युत नरनादा । ताते वादित होहु दयात्म । को कलुषी मे सचि विद्याला । महा भार नहि पोत विराजु । केहि याहन जप थक सहाजु । पलाहारि धनु मृग समुदार । केवल

हरि मतंग घरि खाई ॥ मो अघ शैल उठावनि द्वारो ॥ बेजुन शशि तुम अर्जुनविहारो ॥ ताते सकल अमर तजि भारे ॥ भजउ तुमहि अघ खडै निहारो ॥ दीन जानि लपि आपन आषा ॥ मेटहु मोर घोर बहु चाषा ॥ एक सहस्र वसु सत नग साता ॥ विक्रमाके सबत् विख्याता ॥ ५६ ॥ दो० ॥ भरत खण्ड महि द्वीप घर जम्नु श्रुति विख्यात । दुहिणावतं मुमूर्ति के करी कथा यह जात ॥ दो० ॥ कोल कल्प केशव कथा करी सो कोशन पंथ ॥ हरि भूरि कल्पित नहीं श्रुति द्विजोक्त सत ग्य ॥ सो० ॥ हिंदु धर्य यहि काल गुंड धूर प्रख्यात महि ॥ किंग रास महिपाल ॥ पालत मेदिनि मनु सरिस ॥ दो० ॥ तीरथ अमर नदी भूपद कालिक रूप किल राम ॥ पुण्य देष किल चबिडका मनु एक रघुवर नाम ॥ हृन्द ॥ निज मति विदित हरि नाम गान पुराय मत सोदो करी ॥ जिमि भाष पुर्वहि भग्न वृक्षेड हेतु सादर शंको ॥ रघुवीर किंकर मृत्यु किंकर केर अनुग कहावड ॥ यावत रहो महिमाह तावत नाम तज नित गांवस ॥ दोहा ॥ दिवो दास कुल ख्यात मटि नृप पेरचर्य विशाल ॥ सदप्रताप सु तस्य सुत यण्ड चरित कृपाल ॥ ६ ॥ इति श्री हंसिद्धान्तोत्तमे रामचण्डे श्री सद्प्रतापसिंह विरचिते कोशलपथे देश भूमि पुर महाराम वर्णने नाम सप्तचत्वारिंशो विंशतः ॥ ५६ ॥ ६ ॥ २ ॥ १ ॥

Subject—रामायण अयोध्याकांड का सविसर चरित्र ।

Note—ग्रन्थकर्ता सद्प्रतापसिंह है । इन्होंने इस ग्रन्थ को विद्याचल के निकट गंगा के दक्षिण तीर पर माडव्यगाम में रचा था और स्यात् यह राजा भी कहलाते थे—संवत् १८८० के विक्रम साल में यह ग्रन्थ बना है—यह कोई संस्कृत ग्रन्थ कोलकल्प नाम के ग्रन्थ का अनुवाद है ।

No 26.—नखशिख केशवदास कृत *Verse*. Substance—country-made paper Leaves—16 : Size—6½×5½ inches. Lines—21 on a page : Extent—300 slokas. Appearance—old. Complete Correct. Character—Devanāgarī. Place of deposit—Library of the Mahārāja of Banāras.

Nakshikha Kesava Dāsa Kṛta.—Description of the different parts of the body by the celebrated Keshava Dāsa (1600 A.D.) The manuscript is dated Samvat 1853 (1796 A.D.)

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ अथ केशोदास कृत नव सिप लिप्यते ॥ दो० ॥ सविता के परताप उजें बरने कायता अग । कहे यथा मति बरनि त्यों यनिता के प्रत्यंग १ कही छु पुरम पहिनि जाकी जितानी जानि । तितनी अब ती अङ्ग को उपमा कहौ बरानि २ न प तें सिप लौ बरनिसे देखी दीर्घत दोषि । सिपतें न प ला मानुषी केशवदास विधेयि ३ ॥

End.—अन्यस्तु : द्रष्टे : कः ॥ महि मोहन मोहिनी रूप महिमा रचि हरी मदन मंच की । सिद्ध पेभ की । पद्धति पुरी धीउन भूरि विविध कियों जमजोष मिष की । किधो चित को वृत्ति भित अभिनाय चित को केशव परमानंद की । आनंद सकति कियों बरनि आधार रूप भव घरनु को राधा वन बाधा हरन को ६५ इति श्री केशवदास कृत नवसिप लिप्यते संपूर्ण काषो श्री मध्ये रूपवद गोड सशत् १८५३ मिति आषाढ शुद्ध ४ बुधवार ॥

[१३ पृष में यह समाप्त होगया आगे इसके ३ पृष में और भी केशवदासही का कुछ कविता का संग्रह है । प्रायः कविता है] ।

Subject.—नव से शिखा पर्यन्त प्रत्यंग की योग्या का वर्णन ॥

Note—प्रसिद्ध कवि केशवदास कृत—लिपिकाल सशत् १८५३ मि० आषाढ शुद्ध १४ ; बुधवार है ।

No 27—श्री राधा नलजिगम Verse Substance—country-made paper Leaves—16 Size— $6\frac{1}{2} \times 5$ inches Lines—17 on a page. Extent—280 shlokas Appearance—old. Complete. Correct. Character—Devanāgarī. Place of deposit—Library of the Mahārāja of Banāras

Sri Rādhā Nalja Sikkha.—Description of the different parts of the body of Rādhā by the poet Dwija. The manuscript is dated Samvat 1855 (1798 A.D.) This poet is not the Dwija alias Manna Lal of Benares.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ श्री राधा मोहन विद्या सदायन मुखधाम ॥ द्विज कवि सुप्र धरनन करे न ॥ सिध ह्यवि अमिराम ॥ १ ॥ चरन वः ॥ वधुप्र धरन मान धरन लया के केधो पाके विधरोचन कविर मुधरत है । जावक समेन चनुराग के निकेत केधो रोजगुन के ह्यवि देत विहरता है । कहे द्विज कवि मण्यन्ते मृदुन-नोके याहो रोच विद्वम कठोरता धरत है । जोवन दिनेश को मयूषन सरसि मेरे यद तामरस तामरस निद्ररा है ॥

End.—बमल कमल रम रंग मे छलटि घरे गुरज जुगल देवि केधरी नमत है । पुधारस पैकारो लर मधुलत डारो सीफल मृनाल कंजु सोमा सरसत है । मुमन गुलाव विज मदन मुकर कोर धंजन कमल उपमान परसत है । द्विज कवि जान कही राधिका मुजान ह्यवि मेरे जान चंद डिंग नागिन लसत है दर हति श्री द्विज कवि कृत लिप्यते सनात श्री काशी मधे रूपचंद मोड संवत् १८५५ मो० वैशाख सु० ० सोम ॥

Subject.—नख से सिखा वर्णन सोमा वर्णन ॥

Note—द्विज कविकृत । लिपिकान संवत् १८५५ वैशाख शुक्ल ॥ सोमवार है ॥

No 28—प्रेम तरंग चन्द्रिका Verse. Substance—country-made paper. Leaves—37. Size— $6\frac{1}{2} \times 4\frac{1}{2}$ inches. Lines—13 on a page. Extent—600 shlokas Appearance—old Complete Correct. Character—Devanāgarī. Place of deposit—Library of the Mahārāja of Banāras.

Prema Taranga Chandrikā.—The description of the different kinds of affection by the poet Deva (1620 A.D.) The manuscript is dated Samvat 1857 (1800 A.D.).

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ देवकवि कृत प्रेमतरंगचन्द्रिका लिप्यते ॥ मंगला चरण सवैया ॥ आखिन आवि लगाय रहे मुनिये धुनि कानन को मुखकारी ॥ देव रहो दिव्य मे चरके न हके निररे यिररे न निवारी ॥ फल मीठा मृ च्यो मूल मुयस को है फल फूलि रही फुलवारी ॥ प्यारी ठक्यारी हिये भरिपूरि मुदूरि न जोवन मूरि हमारी ॥ १ ॥

End.—दोहा ॥ भक्ति भाव आसक्ति हूँ नेह धाम अनुराग ॥ धेर सना यावत्तु हारि-हि मिलत वड भाग ॥ ६२ ॥ देव दीनउघु दयासिधुगति के सहारे हूँ अवधु को मदे-घता मुमारे है ॥ लो हरिष्यकसिध विश्वारथो नरसिह हूँ दयाल्यो प्रह्लाद सेना धनु को लुकाई है ॥ रायन को राम हूँ पठाये दिव्य धाम हूँ के वामन प्याल गति धनि को मुमारे है ॥ को करे प्रसदा धनस्याम लदु लदुपंसालय कंसादिक बेरी घोर यसागिनि लुमाई है ॥ ६३ ॥ श्री राधा हरि चरन जुग देव देव अछिदेव ॥ दुःख हयों सेयकनि के मुद चरनन की मेर ॥ ६४ ॥ ॥ हति श्री देवजी कृत प्रेमतरंगचन्द्रिकाया चतुर्थ प्रकाशः ॥ ४ ॥ लिखितं देववरीप्रसाद मोड ब्राह्मण काशी श्री मध्ये अपने पठनाई ॥ श्री संवत् १८५० निती वैशाख शुक्ल ॥ १ ॥ प्रतिपदा वार गुरु शुभं मयात् ॥

Subject.—प्रेम का स्वरूप, प्रेम केसा और निजनी प्रकार का होता है—इत्यादि का वर्णन ॥

Note.—प्रसिद्ध कवि देवदत्त कृत—लिपिकाल सवत् १८५० वैशाख शुक्ल प्रतिपदा गुरुवार है ।

No 29—कल्कि चरित्र *Verse Substance*—country made paper Leaves—74 Size— $7\frac{1}{2} \times 4\frac{1}{2}$ inches Lines—10 on a page Extent—1310 slokas Appearance—old Complete Correct Character—Devanagari Place of deposit—Library of the Maharaja of Banaras

Kalki Charitra—The story of the Kalki (24th) incarnation of Vishnu, which is yet to take place by Prānānītha Trivedi who composed it in Samvat 1765 (1708 A.D.) The manuscript is dated Samvat 1849 (1792 A.D.).

Beginning—ओं सिद्धि श्री गणेशायनम ॥ दोहा ॥ यत्न रदन करिधर ददन सिद्धि सदन शिवलाल ॥ विघ्न विनायन धिद सिर मूसासन गुन माल ॥ १ ॥ वारक वारन वदन कहि मुक्त ज्ञान विमल ॥ जेमे दोषक देहलो भोतर अनिर सृजाल ॥ २ ॥ नराच ॥ भजा नि विध्ययासिनी अखड जे प्रकासिना उदड पाप नासिना मुमुद्धि सिद्धि को भरे ॥ करे महाप रक ते प्रमाण मेह पर ते हरे किनाक सक ते कटास नेकहु ठरे ॥ जपे निरुक्त नाम को छडे विनाद धाम को पुजे समस्त काम को अगाध सिधु उद्धरे ॥ महा गुमान गजिनो विशाल गोक भनिनी नमामि प्राय रजिनी कृपालि पाहि करे ॥ ३ ॥

End—दोहा ॥ केहु सिद्धि कलकी कथा परे जु श्रवनि माहि ॥ योता यता भगत जन अपि कर नरक न पाहि ॥ इति श्री श्री कलकी चरित्रे भगानी भविष्यते कथन ग्लेख न विध्ययने उत्तर कांड सप्तम सोपानः ॥ ० ॥ * * * * * मुरधरि जू के उत्तर दिशि जोगन तानि सुदुरि ॥ मोरध्वजी नगरी बहु वरनि सो भरि पुरि ॥ वरनि सो भरिपुरि परम अभिराम कृपाप्रनि ॥ देख दनुज नर नाग सकल मुनि जन मन भागनि ॥ बुध वैदिक जह वसत लसत मानहु सत्र हर हरि ॥ निज निज मन लजि रहत लसत कोऊ नहि मुरधरि ॥ से रठा ॥ तेही पुर मतिमद बसन भवानी शर्म द्विज ॥ तेन लिपित मुखकद परम सुभग कलकी कथा ॥ से रठा ॥ मोहि न अजर ज्ञान ताते पंडित जन सुधा ॥ सोयव मति अनुमान अपनी ओर विचारि ॥ सवसर नव ६ वेद ४ धृति १८ चैत्र कृष्ण रविवार ॥ तिथि दशमी शुभ लिपि भई कथा सकल सुखसार ॥ सवत् १८४८ चैत्र मासि कृष्ण पक्षे दशम्या रविवार ॥ निजितमिद पुस्तक भवानी प्रसादकेन ॥ मंगल लेखकानाच पाठकानाच मंगलम् ॥ मंगल सर्व साधुना भूयो भूपति मंगलम् ॥ १ ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥

Subject—कल्कि अवतार की भविष्य कथा ।

Note—यद्यक्तो कथं ज्ञाननाथ विवेदी है । निर्मोक्षकाल का सातवां दौहा इस प्रकार है ॥ सवत् सप्तम से प्रगट पंथि मकर सुमास ॥ बुधवार श्री पंचमी कलकी कथा प्रकाश ॥ ० ॥ लिपिकाल सवत् १८४८ चैत्र कृष्ण १० रविवार है ॥

No 30—बृहस्पति कांड *Verse Substance*—country made paper Leaves—26 Size— $8 \times 4\frac{1}{2}$ inches Lines—8 on a page Extent—300 slokas Appearance—old Complete Correct Character—Devanagari Place of deposit—Library of the Maharaja of Banaras

Vrihaspati Kanda—The effects of the planet Jupiter in the twelve Zodiacs on the human body by the celebrated Jalsā Dāsa. (Died 1623 A.D.)

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ जे जे श्री रघुवश मनि दीनदया न कृपण ॥
 कस कहि प्रभु गोविन्दर कोने चसन माल ॥ १ ॥ सोपाई ॥ सुनहु टमा पाति गिर प्रमग ॥
 सुमति शिलास सकल भ्रम भगु ॥ भुर भुन टगा वर फल जेना ॥ द्वादश राशि घणने सोमा ॥
End—मारठा ॥ देहि सपाद भगवण यारहि बार छेद बह ॥ बसहि हृदय यागता
 सुपमा मिशु कृपायतन ॥ इति श्री तुलसीदास कृत वृष्टस्फुटि कांड समाप्तम् ॥ शुभ ॥

१	अथ मर्यास पर अथ गुरु रहस्यो	१३	तुना राशि पर अथ गुरु रहस्यो
२	भुर भुन जत्र वृषराशि मुधाना	१४	साराचक राशि अथ गुरु अथराशि
३	मियुन राशि पर भुर भुन अथरह्यो	१५	यम घन राशि कहति अग पावन
४	कर्क राशि सकेय यमेरा	१६	भुर कुल पुत्र मकर कुल वाग्रा
५	भुर भुन अथहि मिह अस्थाना	१७	कुभराशि कर जीव यमेरा
१४	रवि पवन नव कथा रामे	१८	भुर भुन मीन राशि अथ रहस्यो

Subject—वृष्टस्फुटि का बारहो राशियो की दश का फल ॥

Note—श्री गोपबन्धु तुलसीदास जी कृत । काल इसमें कोई नहीं है ।

No 31—द्वितीय Verse Substance—country made paper Leaves—97
 Size— $10\frac{3}{4} \times 6\frac{1}{2}$ inches. Lines—15 on a page. Extent—1,450 Shloka. Appearance—ordinary Complete Correct. Character—Devanāgarī. Place of deposit—Library of the Maharaja of Benares.

Chhandirupa—Hindi prosody by Bhikshari Dāsa Kāyastha, who wrote it in Samvat 1799 (1737 A.D.). Bhikshari Dāsa is considered to be one of the great masters of Hindi composition.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ कर बदन महिबोज पहित धुन पडित ग्यान पर ।
 गिरिनशिनि नदन बाधुर निकडन कीने वर ॥ भूपन मृग लक्षण खन पन रचन वीर विवचन
 पाव धर ॥ नय नय मन नायक चलन घायक दास सहायक विधुन हर ॥ १ ॥

End—दोहा ॥ छंदनि दोहरो मोहरा करि निज सुख विवेक । मन रोचक तुल
 कनिके दहक रसा अनक ॥ १ ॥ रागनि के वस कोनिय ताहि प्रबध यगनि । छन्द लिख
 मो पद्य है गवा छन्द विनु कनि ॥ २ ॥ ग्यारह ते छबीव सति वन दुपद तुल पत । मो
 विर दे बहु छन्द टन धरे प्रबध प्रियक ॥ ३ ॥ भेद छन्द दहकनि को दोड परागार ।
 भरनल पद्य धरा मे दीप मति अनुसार ॥ ४ ॥ सगह से निनामरे मरु छदि पये सविद्र ।
 दास यद्यपि छटारनो सुमिति साररे इन्दु ॥ ५ ॥ इति श्री भिषारीदास कायस्थ कृते छन्दान्वये
 दीपक भेद धर्मेन नाम पद्यसम संग ॥ १५ ॥ अथ सधुने ॥ शुभमस्तु ॥ सिद्धिरस्तु ।

Subject—विगल ॥

Note—कर्ता कवि भिषारीदास कायस्थ । निर्माणकाल सवत् १७८७ वैश्व संदी ६ ॥

No 32—सुदप्रकाश Prose & Verse Substance—country made paper
 Leaves—5 Size— $10\frac{3}{4} \times 6\frac{1}{2}$ inches. Lines—15 on a page. Extent—70 Shloka.
 Appearance—ordinary Incomplete Correct. Character—Devanāgarī. Place of deposit—Library of the Maharaja of Benares.

Chhandaprabāsa—Hindi prosody in prose by Bhikshari Dāsa. (See No. 31)

Beginning—योगयोगाय नमः ॥ अथ हृदप्रकाश पोथी लिख्यते ॥ दोहा ॥ गनयति गैरी शंभु को पग ददौ यह जोइ ॥ आपु अनुपट अगम ते दुगम बुद्धि को होइ ॥ १ ॥ श्री महाराजनि मुकुटमणि उदितनारायन भूप ॥ समुपरी कासी सुखल ताको राज अनूप ॥ २ ॥ सोरठा ॥ रहत आपु दरवार सात दोष के अयनि पति ॥ रच्यो ताहि करतार तिन मति उदित दिनेस सो ॥ ३ ॥ दोहा ॥ रज सत दाया दान मे रस मे राजित वीर ॥ जग पालक घानरु खलनि महाराज रनधोर ॥ ४ ॥ सोरठा ॥ मुकवि भिषारादास कियो यन्त्र हन्दारने ॥ तिन हन्टनि दरकास मो महाराज पसद हित ॥ ५ ॥

End—सध्या प्रसार वर्षके ॥ वृत्ति ॥ ७६९३४८३७३५९३९० ॥ हन्द ॥ १९८ ॥ सध्या माया वो वर्न प्रसारके ॥ वृत्ति ॥ ४६९६५७३३९६३३५६ ॥ हन्द ॥ ३८१ ॥ (आगे इति आदि कुछ नहीं है ॥)

Subject—कविता के प्रसार, वृत्ति और हन्द सध्या का कथन ॥

Note—इस ग्रन्थ के कर्ता कवि भिषारीदास कायस्थ हैं । ये काशिराज महाराज उदितनारायणसिंह के आश्रित थे ॥

No 33—आलम केलि *Verse Substance*—country made paper : Leaves—57. Size—10½ x 5½ inches : Lines—11 on a page Extent—1,350 ālohas. Appearance—old Complete Generally correct. Character—Devanāgarī Place of deposit—Library of the Maharaja of Banāras.

Alama Keli—An account of Rīdhī and Kṛishna by the poet Alama, who was a Brahman by birth, but on falling in love with a Muhammadan woman he embraced Muhammadanism and remained for a long time in the service of Muazzam S'āha, son of Aurangzeb, and afterwards of Bahādur S'āha (1707—1712) Dr Grierson says that he was born in 1700 A.D., but this date does not seem to be correct, as it only makes a child of 7 or 8 years an admired poet of his time. Besides, this manuscript copy of the *Keli* was made in Samvat 1753 (1696 A.D.), or 4 years earlier than the year of his birth as given by Dr Grierson. In my opinion the poet must be 30 or 40 years old before he could write such elegant poetry. He must have, therefore, been born about 1660 A.D.

Beginning—श्री गणेशायनम ॥ अथ आलमकृत कविता लिख्यते ॥ अथ आललीला । घनाहरो छंद ॥ पलन पेलत नद ललन छलन चल गोठ लेने ललना करति मांड गान है ॥ आलम मुकवि पल पन मेया पावे भुष पोषति विषुष मुररति पय पान है ॥ नद से कहत नदगानी हो महार मुन चद को सी कनन बडतु मेरे नान है ॥ आइ देखि आनंद से प्यारे फान्ह आनन में आन दिन आन घरा आन छवि आन है ॥ १ ॥

End—सैत्र सुपासन हेम होर पटवीर विविध उर । निरधि निरधि मन मुदित होत निजु सुग सपति पर ॥ आलम के कवि जु आपु वने वनिता बनार विलसत विलास अति ॥ जग रंजक जगदास सोजु मूल्योन अन्य मति ॥ अजहु सभारि आलम मुकवि जालो अतक नहि रसे ॥ पग डगमगत होत हसत मुखिरह मुअगम को डख्यो ॥ ४०० ॥ इति श्री आलम कृत कवित्व आलम केलि समाप्त ॥ शुभमस्तु ॥ सवत् १७५३ समये आसन पदो अष्टमी वार शुक्र ॥

Subject—श्री राधा कृष्ण की तोला के कविता ॥

Note—यह ग्रन्थ कवि आलम कृत है । निर्माण काल नहीं मिला । लिपि काल सवत् १७५३ आश्विन कृष्ण ८ शुक्रवार है ॥

Note—कत्तौ कवि गोकुलनाथ हैं । यह पुस्तक कवि ने महाराज हरिबंदासिंह की आज्ञा से ११ दिन में बनाई थी । इसके बनने का समय नहीं दिया है । लिपि काल सन् १८०० भाद्रपद शुक्ल ४ चन्द्रवार है ।

No. 56—*फिंगल Verse. Substance*—country made paper. *Leaves*—34. *Size*— $9\frac{1}{2} \times 5$ inches. *Lines*—9 on a page. *Extent*—630 slokas. *Appearance*—ordinary. *Complete. Correct. Character*—Devanāgarī. *Place of deposit*—Library of the Mahārāja of Banāras.

Pungala.—Hindi prosody, written by Chhatāmaṇi Tripathī (Fl 1650 A. D.), the eldest brother of the celebrated Bhūṣana and Mātī Rāma. He attended the court of Mahāranda Sāha of Nāgpur. The manuscript is dated Samvat 1956 (1899 A.D.)

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ चिंतामणि कृत फिंगल लिप्यते ॥ दोहरा ॥ गज-मुखा जननी जनक के पतिनि नाह निज सीस ॥ चिंतामनि कवि साहि को देत बनाइ असीस ॥ १ ॥ छप्पय ॥ मुकुट माल उत मंग इताहि घर मंग गंग गति । उत सित चंदन आहु इताहि निधिर ललाट मनि । उताहि भाल मणि लाल इताहि दृग अनल विराजत । उत कपूर तन लेव मस्म इत अति छवि छाजत । कहि चिंतामणि सम भेष धरि अति अनूप सोभा सहित । जय साजहु सुरजा साहि कहं गिरिजा हर अरधंग निर ॥ २ ॥ दोहरा ॥ मूरज बसो मोसिला लसत साहि मकरंद । महाराज दिगपाल जिमि मंगल मुद जमु चंद ॥ ३ ॥

End.—रूप घनादरी छंद लखन दोहरा ॥ सेरह सेरह घर जहा धिरति अंत लघु होइ सो ॥ रूप घन असीस वतिस चहर जोइ ५२ यथा । सिर शशि घर घर गौर अरधंग घर जटा जुट गंग घर गरै मुंड माल घर । शिपति बिनास कर दोह दिशि बासकर पलनि उर मूल हर उमर बेमूल कर । सेवत अमर घर बंगा मुर नर घर देत हरहर चिंतामनि को अभय घर । देख लखे विषयर मदन को गरब हर निज जन दुःख हर जे जे देख हर हर ३०३ इति श्री भगवद्भारजाधिराज सहि मकरंद कारि श्री चिंतामनि कृते छंदो विचारे वृत्तानि निवृत्तानि समाप्तं शुभं सन् १६५६ मितो कार्तिक सुदी २ वार सुधवार के लिख गया । साकेन पिपरी प्रयोषी दल दुमन की घाल की ॥

Subject.—फिंगल, कविता बनाने के नियमादि ॥

Note—यंयकत्तौ कवि चिंतामणि हैं । यह मकरंद साहि राजा के आश्रित थे और उन्होंने की आज्ञा से इन्दोने यह ग्रंथ रचा । इस ग्रंथ का लिपि काल सन् १६५६ कार्तिक सुदी २ सुधवार है ।

No. 57.—आनन्द अनुमय *Verse Substance*—country-made paper *Leaves*—21 *Size*— $8\frac{1}{2} \times 4\frac{1}{2}$ inches. *Lines*—15 on a page *Extent*—206 slokas. *Appearance*—old *Complete. Correct. Character*—Devanāgarī. *Place of deposit*—Library of the Mahārāja of Banāras.

Ananda Anubhava—A book dealing with spiritual principles and the worship of God by the poet, Ananda of Banāras. He wrote this book in Samvat 1842 (1765 A.D.)

Beginning—श्री कृष्णायनमः ॥ अनंदोदाय ॥ सेरठा ॥ आदी करें परब्रह्म । परम आत्मा कृष्ण के ॥ १५ आन के ग्राम । सर्व व्यापी दिगु के ॥ दोहरा ॥ मुने भीत चित लय के यह अध्यात्म विचार ॥ जो याको गावे मुने निश्चय हो भय नार ॥ उत्तम याको राखियो

चानद-चनुभव नाम ॥ दा की का न्न समुद्धि नरे मुक्ति हर धाम ॥ मुक्ति लेष बागेश्वरी
मय वे रा राम जोय ॥ चानद चनुभव यह यह वृष भवे गह मोय ॥ रात्रि रात्रि रात्रि
रात्रि रात्रि रात्रि ॥ यह हय चानद द्वा हो बाटा कीनी ज्ञान ॥

1. 1—देहा ॥ संज्ञा महा बुनीन हे टाग्ल मे खान्नेस ॥ चानद चनुभव दूय कर
हरिहि निशान घाम ॥ चानद यन कागपुरी तही यम के चानद ॥ गुट गट गट गट के टया
परी गेट ॥ इति श्री चानद चनुभव चानद कृत भाषायां सप्तमं समस्त ॥ ॥ ॥ श्री ॥
देहा ॥ चानद यन कागपुरी रात्रिरात्रि निश घाम ॥ चानद श्रुतिपरी श्रुति ने नाम बुला-
की राम ॥ १ ॥ श्री हरये नमः ॥

Subject—उपासना युक्त चान्दिका ।

Note—यह ग्रन्थ चानद कवि कृत है । यह केत कागपुरी कृत भक्त से । निर्मात
काल मय १८४९ है ॥

No 38—भारत प्रिय *Penn Substance*—country made paper *Leaves*
—232 *Size*—10½ x 7 inches *Lines*—17 on a page *Extent*—4400 shlokas
Appearance—old Complete, Generally correct *Character*—Desandgari
Place of deposit—Library of the Maharaja of Benares

Dharmata Vaidya—The story of the Mahabharata by the poet Dignya, who
wrote it in Samvat 1766 (1709 A.D.) under the patronage of Diwan Prithvi
Singha, son of Udaya Singha. It is not clear who this Prithvi Singha was.

Beginning—योगयोगायनमः ॥ मुग्धयोगमः ॥ टंकक अन्त ॥ मुद्र बदन एक रदन
विशेष ताहि मधुर प्रमद मुद्रादुद लपटावर्त ॥ दिग्गज सकल विविधा को मुद्रादुद स्थि
माकल मनि यह यनय यनारही ॥ यदन के बीच मुद्र मोहत मयक माने मुग्ध को चंद
वि ॥ विष्णु मे न पावही ॥ जानि करु ईश निज योग दिने योग यते गुरान के मुद्र
दा गयेन को पावही ॥ १ ॥

1. 1—देहा ॥ को विनास भारत यह वडे मुने विन लह ॥ ताको मुद्र कनक मय
देह चनुभुन आर ॥ ४४ ॥ मुद्र सर्वाति दिनदिन घनी टान जुटु मत नैति ॥ अष्ट सिद्धि
टागा यह भारत पारय शक्ति ॥ ४४ ॥ कृष्ण परायन यवन मुनि द्विज मेचन बहुदान । कृष्ण-
का मुद्र यवन ययावर्त कनमान ॥ ४४ ॥ मोटा ॥ भारत हरि गुन गुड । नानहि
मृगन विमल मति ॥ ले जडता यम मूढ । ले नानहि किम कृष्ण गुण ॥ ४४ ॥ इति श्री
ममहात्म्य उद्यानविद्यालय श्री दिवान प्रयोगविद विविधने भारत विद्याम इन्द्रायन कुचि-
ष्टि गयन नाम पञ्चगव्याय ॥ ४ ॥ ४४ ॥ सप्तमः ॥ शुभमस्तु ॥ ॥ ॥ ॥

Subject—महाभारत की कथा ॥

Note—इस ग्रन्थ के कर्ता दिग्गज कवि हैं । उन्होंने पृथ्वीसिंह की आज्ञा से यह ग्रन्थ ग्रन्थ
कोर ट हो के नाम से प्रकाशित किया । निर्माणकाल इसका मय १८८८ के शुक ५ गुप्तार है ॥

No 39—सज्जन विलास *Penn Substance*—country made paper *Leaves*
—97 *Size*—8 x 6 inches *Lines*—16 on a page *Extent*—1,940 shlokas
Appearance—old Complete Correct *Character*—Desandgari *Place of*
deposit—Library of the Maharaja of Benares.

Sujan Viliat—A book on rhetoric by the poet Datta who lived under
the patronage of Kunwar Fateh Singh of Tikhri District Gwal. He composed
this book in Samvat 1801 (1747 A.D.) The manuscript is dated Samvat 1849
(1792 A.D.)

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ कवित ॥ घटे मुर मुनि गधर्व मच्छ नाग नर
कमद निपानिधि सकल सिद्धि का हे घर ॥ अमर सरित को सरोज सुड अति सोहे चारयो
भुज धरे पास अकुस अमयशर ॥ सिद्धर मसुड गज तुड पक यक दन्त लोदर मने दन
सकल कलुष हर ॥ गणपति प्यारे जो दुलारे गिरिजा जू को सो सुमिरत देत सुष सपति
को निर ॥ १ ॥

End—श्री कृतेसकुमार जग भयो मोत्र अवतार ॥ मंडित पंडित कविन सेा रहत
सदा दरवार ॥ १३५ ॥ राख समाज प्रजानि जुत पुत्र कलष सभृद्धि ॥ श्री कृतेस जगमे लहो
सुजस मुधमे मुष्टि ॥ १३६ ॥ खोलगि गणपति गौरपति फनपति सिर भुशभार ॥ चिरजीव
तय ने रहो श्री कृतेस मुकुमार ॥ १३७ ॥ इति श्रीमनिमहाराजकुमार मागयेन्द्र श्री बाबू कृतेसिह
कारिने कवि दन कृते सनन विलासे त्रिवेग शंगर भेद वर्नेन नाम सप्तमो विलासः ॥ ७ ॥ समस्त
समाप्त ॥ श्रीरस्तु गुभंभूयात् ॥ काखो जो मये लिप्यत ब्राह्मण गौड कृपचन्द मितो वैशाख
सदी १४ खंड सवत् १८४६ ॥ ॥ श्री ॥ ॥ श्री ॥ ॥ श्री ॥ ॥ श्री ॥ ॥ श्री ॥ ॥ श्री ॥

Subject—नायिका भेद ॥

Note—ग्रन्थकर्ता कविदत्त है । ये राजा टिकारी जिला गया के आश्रित थे । इनको
कुमार कृतेसिह ने आचा जो, उसो पर इन्दोने यह पद्य । बनाया यद्य बनाने का सवत् इस
प्रकार लिखा है—सवत् ठारख से वरष आरि चेत मुदि बाद ॥ नैमी बुध दिन को भयो
नयो यद्य अवतार । इसका लिपिकाल सवत १८४८ है ॥

No 40—जहागीर चन्द्रिका Verse Substance—country made paper
Leaves—30 Size—5×5 inches. Lines—15 on a page Extent—450 shlokas
Appearance—very old Complete Incorrect Character—Devanagari Place
of deposit—Library of the Maharaja of Banāras.

Jahangīra Chandrikā—The praises of the Emperor Jahāngīra (1605—
1627) by the poet Kesava Misra who wrote this book in Samvat 1069 (1612
A.D.) The manuscript is dated Samvat 1848 (1791 A.D.)

Beginning—श्री गोविन्दपल्लभाय नमः ॥ अद्य जहागीर चन्द्रिका कवि केशवदास
कृत लिखिते । छप्पे । मुनहु गनेस दिनेस देस परदेस द्वेस कर ॥ अम्बोस फनेस सेस नप
सेस देसवर । पनोस प्रेतेस मुद्धसिद्धेस देखि अज ॥ बिलोस स्यादेस देव देवेस द्वेस सज ॥
प्रभु परतेस सोकेस मिलकाल कलेस के सव हरहु ॥ जग जहागीर राज साहि के पन रत ही
रक्षा करहु ॥ १ ॥ दोहा ॥ सोरह सँजनहता माहा मास त्रिवार ॥ जहागीर सक साहि की
करी चन्द्रिका चाय ॥ २ ॥

End—दोहा ॥ जहागीर जू जगतपति दे सिंगरो सुष साजु ॥ केशवराई जहाम में
कियो यतोते राजु ॥ १६० ॥ इति श्री सकल रव भूमडला पडलेखर सकल साहि सिरामनि
श्री जहागीर साहि यशवदेका केशव मिश्र विरचिता समाप्ता ॥ सवत् १८४८ मोतो आषाढ
शुद्ध १९ मंगलवार लिप्यते कृपचन्द ब्राह्मण गौड वाराणसी मध्ये मुभयस्तु श्रीरस्तु ॥

Subject—जहागीर शाह का यश वर्णन ॥

Note—कर्ता कवि केशव मिश्र है । निर्माण काल सवत् १६८६ म ॥ मास और लिपिकाल
सवत १८४८ आषाढ शुद्ध १९ मंगलवार है ॥

No 41—भावविलास Verse Substance—country made paper Leaves
— 00 Size—6½×4½ inches. Lines—12 on a page Extent—080 shlokas

Appearance—very old. Incomplete. Correct Character—Devanāgarī. Place of deposit—Library of the Mahārāja of Banārās.

Bhāva Vāda.—A treatise on rhetoric by the celebrated poet Deva. (Born 1601 A.D.) The manuscript is dated Samvat 1857 (1800 A.D.)

Beginning—श्री गणेशायनमः । भावविनाश लिख्यते..... (इसके आगे प्रथम पत्र पत्र आदा पड़ा है और दोमक का स्वागत भी है फिर १२ पत्र तक अनुष्टुप् पदों दोमक ने भनो भाति आट लिये है दूसरा पत्र इस प्रकार से आरम्भ है)

सो अंतर दोह । सो ताको धिति भाव है कहत मु० =
 स्र कोह । ५ । नर रस के धिति भाव स्र तिनके व
 विष्णु । तिनमें रति धिति भावसे द्रव्य
 सिंगार । ६ । अथ रति नेकु छु विष्णुन दे ।
 नि आन भाति विन दोह । रति कोविद रति
 न के सुमति कहत रति कोह । ७ ।

End—दोहा । अन्कार व मुग्ध है इनके भेद समत । आन गद्य के प्रतिन में जानि जाहु मतिमद । ७० । अपनी बुद्धि समान में कष्टो कहु निधार । तारे मोपर करि कृपा लहे सुमति मुधार । ७० । या कहिन समुद्र को बडेनु न पाये पार । हम ने कोहि कविन को तहाँ कहाँ आकार । ७१ । दोहरिआ कवि देख को नगर बटार्य पावु । जायन नवन भूमाय घर कोने भाव विनायु । ७२ । यटो पुरस्कं दृष्टा ताटो लिपत मया यदि शुद्धमशुद्ध पा मम दोषो न दीयते । ७३ । रति श्री कवि देवदत्त विरचितो भावविनाशे अन्कार निरूपने पंचमो विलासः । १ । समाप्त । सुभक्त्यु । श्री संवत् १८७७ मिति पावे मासे शुक्ल पक्षे रविपक्षे लिखितं श्री काशी श्री मधे ईश्वरप्रसाद गोडु ब्राह्मण अपने पठनाथे श्री दुर्गा देव्ये नमः । ओरस्तु सुभं भूमायु श्रीः—

Subject—काव्यसंग्रह—नायिका अन्कारादि चर्चन ।

Note—यह ग्रन्थ प्रसिद्ध कवि देख कृत है । लिपिकाल संवत् १८५० पौष शुक्ल ६ रविवार है ।

No. 42—रसदीप काव्य Verse Substance—country made paper. Leaves—63 Size—11 x 7 inches. Lines 15 on a page. Extent—925 slokas. Appearance—old. Complete. Correct Character—Devanāgarī. Place of deposit—Library of the Mahārāja of Banārās.

Rasadīpa Kāvya—A book on Hindi rhetoric by Rājā Guru Dājīa Singha of Amethi (?) He composed this book in Samvat 1799 (1742 A.D.)

Beginning—श्री गणेशायनमः । श्री रामायनमः । रस रसिपुरस के तुरत विचनहारो मुकता के दुरत वशाहिर जुजन के । पर अपरा के वेशो के मध्यमा के प्रतिभा के भेद संधी अनुबंधी कवितान में । मनन कविन्द्र प्रति पद नये नये कहे न्यारे न्यारे प्यारे नहू रस के विधान के । घायो के वराय युग परे ते चतुरमुख दोत है चतुरमुख वानी के समान के । १ ।

End—अथ दर्शन निरूप्यते । मल्लच्छम् । दोहा । दर्शन तीन प्रकार के भाषे है कवि चिन्त । दोत दुविध खगार में चिन्त स्वयं परतिष्ठ । १ । अथ दर्शन तृतीयमपि यथा । कवित । पीतम को पठ मे लिख्यो चिन्त निहारि हकी मन मोद बड्य । लागताही पलता पन मे अपने मुख मे अपने पिछ पाप । भूष मने बड्यो आनन्द बाल के धारतोरि ये लान के आर्य । यो एक घाट चित्तचित्त मे बडि जात बिहार चिन्तार के न्हाय । २ । दोहा ।

देवति नेह सनेह युत अनुभव दसा समोष ॥ वेति युक्ति से यह रच्यो सुवरन मय रसदोष
॥ ३ ॥ इति श्री भूपति गुरुदत्तसिंह विरचिते रस दोषाख्ये काव्ये दर्शनाभिधाने नाम द्वादशः
प्रकाशः ॥ १९ ॥ शुभमस्तु ॥ श्री ॥ रामायनमः ॥ श्री ॥ श्री ॥

Subject—नायिका भेदादि रस काव्य ॥

Note—यंयकृती राजा गुरुदत्तसिंह अमेठी के राजा थे । ऐसा ज्ञान पड़ता है कि
हन्हीने इस ग्रंथ को सन् १७८६ कार्तिक शुक्ल ललित तृतीया बुधवार को आरम्भ किया
जैसा कि इस दोहे से प्रगट होता है ॥ सप्त सनक निग्यानवे कार्तिक मुदि बुधवार ॥ ल-
लित तृतीया मे भयो रसदोषक अवतार ॥ ८ ॥

No 43—कविकुल कण्ठाभरण Verse Substance—country-made paper
Leaves—19 Size—11×7 inches Lines—15 on a page Extent—285 slokas
Appearance—old Complete Correct Character—Devanāgarī Place of
deposit—Library of the Mahārāja of Banāras.

Kavikulā Kanthabharana—A treatise on Hindi rhetoric by the celebrated
poet Dālāba, a great authority on Hindi composition. He flourished about
1750 A.D. He was the grandson of Kālī Dāsa Trivedī and son of Udaya Nātha
Trivedī, both celebrated authors of their time.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री हनुमतेनमः ॥ अय अलंकार को यद्य कवि दू-
लह कृत कंठाभरण लिख्यते ॥ देहा ॥ पारयती सिध चरन मे कवि दूलह करि प्रीति ॥ येरे
क्रम क्रम ते कहे अलंकार को वेति ॥ १ ॥ चरन चरन लचन ललित रवि रीम्यो करतार ॥
बिन भूपन नाह भूषण कजिता घनिता चार ॥ २ ॥ दोरघ मत सत कविन के अरथा से
लघु तने ॥ कवि दूलह याते कहे कविकुल कंठाभरण ॥ ३ ॥

End—सकरो प्रया ॥ होही मति मद पे पठाई देज सर को चाही चंद कला ज्ञान
मुप ते लटाई रे ॥ कहे कवि दूलह अपुरय प्रकाश्यो हेतु नाहन टपारी ठकुराहन है आई रे ॥
घारो भेद सर के तुरु मे बिचारो चार चातुरी दे मानो निदुराई सुख्याई रे ॥ पेप मनि
मदिर मे पलक की पीक पेझी सोई अरुनाई शनि आपिन मे झाई रे ॥ १० ॥ इति महा कवि
कालिदास

Subject—अलंकार काव्य ॥

Note—यंयकृती प्रसिद्ध कवि दूलह है जो सन् १८०० के लगभग हुए थे ॥

No 44—रसमालिका ग्रन्थ Verse Substance—country made paper
Leaves—44 Size—9×5 inches Lines—9 on a page Extent—675 slokas.
Appearance—ordinary Complete Generally incorrect Character—Devā-
nāgarī—Place of deposit—Library of the Mahārāja of Banāras.

Rasamālīkā Grantha—A book dealing with subjects like spiritual know-
ledge, wordly renunciation, love of God, good company, etc. The author is one
Rāmachārana, who composed it in Samvat 1844 (1787 A.D.) The manuscript is
dated Samvat 1854 (1797 A.D.)

Beginning—श्री सीतारामाय नमः ॥ वसत तिनक छन्द ॥ यस्योरमालतुलसी
हृदिन्दिरन भाल धनुर्वीर्य भुजकितास्य ॥ भक्तिश्च ज्ञानमभिपूषणमपित्तार ते वैष्णवाः
चरण रामचरणो नमस्ते ॥ १ ॥ श्रीरघुपरोर्वचन मोहनिसंधताण्डो वित्त ममालि चलजातक
सपुटाण्डो ॥ जानाकिमोरघर अरु अन्तर्धानका दृष्टं स्वरूप सतसग नमो नमस्ते ॥ २ ॥

काव्य छन्द ॥ श्री गणेश श्री शम्भु छन्द श्री सरस्वती श्री ॥ श्री सुरसरि श्री गौरिचंद श्री
सूर्य ज्ञाती श्री ॥ श्री दृगर्षाति श्री अग्नि पवन श्री वेदधरणी श्री ॥ श्री समेत सप्त देव धृति
यद रामचरण श्री ॥ ३ ॥

End.—हरिगीत छन्द ॥ तप नेम पूजा पाठ जप जोगादि क्रम रतिम मनो ॥
मोक्षादि सब नहि तुलाहि जो फल एक सतसंगति मनो ॥ खेरि सग पाय कुवेर में भिष्या-
न मिलु कोटिन मनो ॥ तनि सकल कर्मकर्म गति मरसग कर परि मम मनो ॥ ४ ॥ दोहा ॥
रामचरण सतसग विनु अग भग नहि होइ ॥ अग भग विनु कर्म जड घरे रहत सब कोइ
॥ ५ ॥ तीन टपर आठ हुत ईसर अवकास कियात ॥ पोलि कह्य जनि पिय घरस अपर करव
विप्यात ॥ ६ ॥ पर भाषा को कांठि के अपने लसहि बडाइ ॥ रामचरण ते स्वान कधि कयहु
न पेट अघाइ ॥ ७ ॥ मुति गिरि कदर में रहत कहत अनुठी बात ॥ रामचरण ते सिद्ध कधि
नज गयद नित खात ॥ ८ ॥ काव्य चर्म पुर्वपरहि अर्थ आप नहि जान ॥ ते सिद्ध हूपन
देत है विनु सतगुर के धाम ॥ ९ ॥ सवत सत अष्टादशे चौपालिस दिन मूर ॥ सरद विजे
दसमी बिमल रस भय भा पूर ॥ १० ॥ इति श्री रसमालिकात्रोघ साख्ये सधादोस्यने सद्-
गुरोर्बोद्धोये चर्णेन नाम पददोषाज्जास ॥ ११ ॥ अथोप्याख्यते ॥ वैसाप यदि मुकल पचे
दसव्या सपूरण समाप्रम् ॥ लिपित मुनूंप्रसाद वेणव ॥ श्री महाराजन् के स्थले ॥ सवत ॥ १८ ॥ १४ ॥

Subject—धान, वैराग्य, भक्ति, सत्सगादि ॥

Note—इसके ग्रन्थकर्ता कोई रामचरण खान पढ़ते हैं । सवत् १८४४ शरद
श्रुत आश्विन शुक्ल १० रविवार को ग्रह ग्रन्थ गुरा दुषा । लिपिकाल वैशाख शुक्ल १०
सवत् १८५४ है ॥

No 45—रससार *Verse Substance*—country made paper Leaves—
48 Size—10½ × 6½ inches Lines 18 on a page Extent—1065 slokas. Ap-
pearance—old. Complete Generally correct Character—Devanāgarī. Place
of deposit—Library of the Maharaja of Banārās

Rasa Sāra—A book on Hindi composition dealing specially with the
different kinds of heroines and styles etc. The name of the author is not clearly
given but in some places the word *Disa* occurs which may only be his nom-de-
plume. This book was written in Samvat 1791 (1734 A.D.)

Beginning—श्रीगणेशायनम ॥ दोहा ॥ प्रथम मंगलाचरण को तीन आत्मक
जानि ॥ नमस्कार अरु ध्यान पुनि आखिरवाइ यथानि ॥ नमस्कार आत्मक मंगलाचरण ॥
कदन अनेजन विघुन को एक रदन गन राउ ॥ बदन पुत बदन करो पुहकर पुहकर
पाउ ॥ १ ॥ ध्यान आत्मक मंगलाचरण ॥ छापे ॥ वक्रतुड कुडलित मुड भग बलित पाउ
रद ॥ आशि घुमड मडनित दान मडित सुगंध मद ॥ बाहु दड चडड दुप फुडनि अमुड कर ॥
विघुन पड कर पडवोन सत भारतड वर ॥ श्री पड परस नदन दास चड चडी तनय ॥ अ
भिलापु छाप लाहन समुक्ति रापु आपु बाहन हृदय ॥ ३ ॥ आखिरवाइ आत्मक मंगलाचरण ॥
सोरठा ॥ करो चद श्रोतस मे मन को अगमी सुगम ॥ काटो रस धारस मुमति मधानी
मथेनु करि ॥ ४ ॥

End—दोहा ॥ सबह से इहाने नम मुदि छठ बुधवार ॥ अर अर देस प्रताप
गठ भयो यथ अवतार ॥ १८६ ॥ कुमति कुटुपन लाइहे विगळी वरन विगारि ॥ मुमति
समुक्ति मुख पाइहे विगळी वरन मुधारि ॥ १८७ ॥ इति श्री रससार संपूरन लिप्यते ॥ मुम
मणु ॥ जो देण को लिपा मम दोष न दीयते ॥

Subject—काव्य नायिकाभेद रस आदि ।

Note—यद्यक्तो का नाम दो तीन कवितो मे 'दास' कवि मिलता है—निर्माण काल अत के दोहे मे १७८९ है । ये दास कवि कौन थे सो पता नहीं लगता ।

No 46—अङ्गारनिर्णय *Verse Substance*—country made paper Leaves—46 Size— $10\frac{1}{2} \times 6\frac{1}{2}$ inches Lines—18 on a page Extent—825 shlokas Appearance—old Complete Correct Character—Devanāgarī Place of deposit—Library of the Mahārāja of Benāras

Śringāra Niryaya—A treatise on Hindi composition dealing with the different parts of that subject. The name of the author is Bhukhārī Dāsa, who was born in 1723 A.D.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ लिखते पोखो सिंगार निर्णय ॥ कवित ॥ मूस मुण्डेस यल वृष बाह्यन किरर कोटो करोरि तेनोस को ॥ हाथनि मे फरसा करवाल बिमूल धरे पल पाहो पोस को ॥ जगत गुरु जग को ननो जगदीस भरे सुपदेत असोस को ॥ दास प्रनाम करे फर जोरि गन्धाय को गिरिजा को गिरीस को ॥ १ ॥

End—मरन दसा ॥ मरन दसा सज भाति सो हूँ निरास मरिजाह ॥ जीवन मत करि घरनिय तह रस भग घराई ॥ यथा ॥ नारी न हाथ रही उह नारी के मारिनी मोहि मनो ज महाको ॥ जीवन ठग कलति रछो पत्रक मे अग रही मिलि जाको ॥ यात को बोलियो गत को डोलियो हेरे को दास उसास डया को ॥ सीरी हूँ आई ताराई सिघाई कही मति मे कहा रछो याकी ॥ १२४ ॥ इति श्री पोखो सिंगार निर्णय भिपारीदास कृते सप्तमे भुममस्तु सिद्धिरस्तु । जो देण सो लिण मम दोणे न दीयते ॥

Subject—नायक, नायिका, उनके अंग, लक्षण, गोमा, शृंगारादि, हाव, भाव, दसो दसादि का वर्णन ।

Note—यद्यक्तो भिपारीदास है, यह अपना नाम कविता में दास रखते हैं ।

No 47—भाषार्थचन्द्रिका *Verse Substance*—country made paper Leaves—18 Size— $5 \times 4\frac{1}{2}$ inches Lines—10 on a page Extent 210 shlokas Appearance—new Complete Generally incorrect Character—Devanāgarī Place of deposit—Library of the Mahārāja of Benāras

Bhāṣārtha Candrikā—Translation of the *mahimna stotra* or the praises of Śiva. The translator is Maniyār Singh, son of Śyāma Singh, of Benāras. The translation was made in Samvat 1843 (1786 A.D.) and the manuscript is dated Samvat 1856 (1799 A.D.)

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ अथ सदाशिव महिम्नस्य पद भाषार्थचन्द्रिका टीका भाषा कवित निबधने लिख्यते ॥ आसेमगलार्थे गणपति प्रार्थयामि क । सिधुर वदन सिद्धिदहन रदन एक राजे भुजवारि चारो सिपा वलवेस के । ऊचो जर उदद समूचे जाति रासि होत भासमान मानो कोटि उदय दिनेस के । सिंह मनियार लाल सिद्धर घटा में विद्रु द्रुता मनि रख स्वर्न भूपन असेस के । विविध विनोद रसि मोदक ले पेल गणपति गोद गिरिजा मतेस के ॥ १ ॥ राम राम ।

End—होये जो अनुज्वल घराघर सो कज्जल सो जलधि सो वासन प्रयासने वनिजाप । कलविट डारे लेपनी सुघारे पुहमी सो पत्र सरवच सो वितानिजाप । यार कहे येसे आचारण ठाट ठठे विधि रटे रते कल्प जेत गन सो नगन जाय । विरद विगल लिखो सारदा सकल काल तदपि कृपाल गुन तेरो न वर्नि जाय ॥ ३२ ॥

सप्त के चक्र अथ वेद पञ्चन्द्र पुरो चद्र पुरो चंद्र मास सप्त परद धर्म धन को।
चाकर अपठित आरामचंद्र पठित वे। मुख्य विषय कवि कृष्णलाल के चरन को। मनिधार नाम
स्यामसिंह की तनय मो उद्यच्छवि यस का पुष्पदत्त महिम्न को ३३
इति श्री मनिधारसिंह जिरचित सदाशिव महिम्नस्य टीका भाषा कवितान्त्र निबधेन संपूर्ण। सप्त
१८१६ मि. चैत्र शुक्ल १३ भृगु यासरे प्रथम लिपित।

Subject—श्रीमहादेव जी की स्तुति। महिम्न का कवितो में भाषानुवाद समूल।

Note—यद्यपि स्यामसिंह के पुत्र मनिधारसिंह द्वितीय हैं जो काशीवासी आरामचन्द्र पठित के सेपक तथा कृष्ण कवि के मुख्य विषय थे। निर्माण काल सवत् १८४३ आश्विन शुक्ल ११ और लिपिकाल सवत् १८१६ मि. चैत्र शुक्ल १३ भृगुवार है।

No 48—राग विवेक *Verse Substance*—country made paper Leaves—15 Size—7×5 inches. Lines—18 on a page Extent—1,300 slokas. Appearance—very old. Complete. Generally incorrect. Character—Devanāgarī. Place of deposit—Library of the Mahārāja of Banāras.

Raga Videa—A book on the art of music by the poet Puraṇottama, who wrote it in Samvat 1715 (1658 A.D.) for one Fateha Chanda Kāyātha, son of Pancholi Bhāga Chanda. The manuscript is dated Samvat 1744 (1687 A.D.)

Beginning—योगयोगायनम् ॥ पुनो अक्षर मात्र करि प्रथम . . . ॥ १ ॥ मनसा याचा कहत पुनोनाम सिरनाह ॥ १ ॥ सविर धन रिपुन हान . . . ॥ २ ॥ पुनोनाम की . . . ॥ ३ ॥ को टोहु सदा अजन्म ॥ ४ ॥ सारद चद्र मुनी सदा ॥ ५ ॥ सम काह ॥ निगम . मरौदधि पावदा भजे। सारदा . . . ॥ ६ ॥ अति टण्डल कायस्य कुल ताके मेद अनेक ॥ ताहा . . . ॥ ७ ॥ मी नाम धर कहित है कुल यक ॥ ८ ॥ प्रगट भव तिहि वस मे जग मे लक्ष्मी दास ॥ केलिरटो ससार मे जाके मुजस प्रकास ॥ ९ ॥ पहिला पत्र कुट्ट फटा है इसलिये पडा नहीं गया ॥

End—सकर राग ॥ फतेचद्र की चाह पर कीना राग विवेक ॥ याके नीके समुझिके जानहु राग अनेक ॥ १० ॥ जो कवि राग विवेक मे कन्हू चुक्यो दोह ॥ लोको सज्जन सोधिके दुपै मति पल कोह ॥ ११ ॥ सवत् सवसे अधिक वदत कवि के रीत ॥ कीना राग विवेक तिधि पुनो मुद्रि आषाज ॥ १२ ॥ जेलो। गगा गिरि सिधिर श्री जेलो हरि अग ॥ तोलो राग विवेक यह जग मे रहै कमल ॥ १३ ॥ इति श्री चतुदश विद्या निधानेत्यादि विवेक विद्व वि. राजमान कायस्य कुल सेपर पवेली भागचद्र मुता श्री फतेचद्र कारते कवि श्री पुनोनाम कृते राग विवेके मेपराग परिहार स्वच्छ कथन नाम अष्टम प्रकास सपूर्णराग विवेके मध्य शुभ मस्तु ॥ १४ ॥ सवत् १८४४ समग्र नाम पुस सुदी दुवादसी लीपेत बधुराम कायस्य कासी मधे ॥ रामसहाई ॥ १५ ॥

Subject—संगीत ॥

Note—यह यद्य पुनोनाम कवि कृत है। ये किसी फतेचद्र नामक कायस्य के आश्रित जान पड़ते हैं। उहो की आश्रानुकूल यह यद्य रचा गया है। इसका निर्माण काल सवत् १८१५ आश्विन सुदी १५ शुक्रवार और लिपिकाल सवत् १८४४ पुस सुदी १२ है।

No 49—दीपप्रकाश *Verse Substance*—country made paper Leaves—32 Size—7½×4½ inches. Lines—17 on a page Extent—420 slokas. Appearance—very old. Complete. Correct. Character—Devanāgarī. Place of deposit—Library of the Mahārāja of Banāras.

Dipa Prākāśa—A book dealing with the different kinds of heroines by the poet Brahma Datta, who lived in the time of Mahārāja Udaya Nārāyaṇa

Singha of Banāras. He wrote this book in Samvat 1866 (1809 A.D.) at the request of Babu Dīpa Nārāyaṇa Singha the younger brother of Mahārāja Uditā Nārāyaṇa Singha. The manuscript which is dated Samvat 1860 (1803 A.D.), is in the author's own handwriting.

Beginning—श्रीगणेशायनम ॥ कजितु ॥ सेदुर से भरो भाल विशाल उडे गिरि पे मने भानु उडे को ॥ दत लसे मने द्वेन को चद विचारि के आये हे मित्र मिने को ॥ चदन लोक लो चद कला शिर चारि भुना अहे दानि अभय को ॥ कैसे कलेश को लेश रहे मन आनत रुम मदेश तने को ॥ १ ॥

End—कजितु ॥ जेनी विश्व काके कमडल में पानी चद मडल में मुनि की नि-
शानी जौलो गाहिरो ॥ जेनी अमरावती अण्डल अण्ड नम मडल में शूर शशिमडल उमा
हिरो ॥ कहे कविप्रभ धरिबड बसमणि तू हे धनि तेरो बस नौहू लडनि सरादिषी ॥ जौलो
कशिद फय मडल में मदी महोमडल में तो लगि अण्ड तेरो साहिबी ॥ १०६ ॥ सपूर्णाय यय ॥
दोहा ॥ अष्टादशयत अधिरूपट पट्टि यरप राय मास ॥ शुक्र पचमी के क्रियो दीप प्रकाश प्रकाश
॥ १ ॥ जैसे दीप प्रकाश से दुर्गति परत सब सुखि ॥ तैसे दीप प्रकाश से बसु परति सब
सुखि ॥ २ ॥ सबत् १८६६ फागुण पौर्णमासी लिषा ब्रह्मदत्त उपाध्याय दीक्षी ॥ शुभ श्री ॥

Subject—नायिका भेद ॥

Note—कली कवि ब्रह्मदत्त हैं । ये काशिराम महाराज उदित नारायणसिंह के समय के कवि हैं और स्यात् इन्हो के आश्रित भी थे । इन्होंने महाराज के ममेले भाई बाबू साध्व दीपनारायणसिंह की आचा से यह ग्रन्थ बनाया । इसका निर्माण काल सबत् १८६६ फागुन सुदी पचमी और लिषिकाल सबत् १८६६ फागुन सुदी १५ है ॥

No 50—नख छिद्र Verse Substances—country made paper Leaves—10 Size—6½ × 5 inches. Lines—18 on a page. Extent—152 slokas. Appearance—very old. Complete. Generally correct. Character—Devanāgarī. Place of deposit—Library of the Mahārāja of Banāras.

Nakha Śikha—Description of the different parts of the body of a heroine by the poet Mirzā Abdur Rahmāna, who wrote this book while Farrukh a Śiyar (1713-19 A.D.) was on the throne of Delhi. The manuscript is dated Samvat 1850 (1803 A.D.)

Beginning—श्रीगणेशायन ॥ अथ नयसिध यथेन ॥ मित्रा अजदुरहमान प्रेमी कृत लि ॥ दोहा ॥ गुर मनेस सटिस कर रुबि से रससमान । नयसिध मुन्दर सज कियो कवि अवदुर रहमान ॥ १ ॥ फरकसेर मुनतान वर मुन्दर मुभट मुनान ॥ ताको मनचवदार सुम कजि अवदुर रहमान ॥ २ ॥ कजि अजदुर रहमान कृत नयसिध कठ जो होइ ॥ होइ सभा पांडित मुमर रोके सज कजि लोइ ॥ ३ ॥ जो नर हिय विद्या धरे सो विद्याधर मान ॥ गुथ धरे मजूस में विद्यायान न जान ॥ ४ ॥ मन मजूस सुधार के विद्या पुष्कर धार ॥ कोट लगे ना धुन लगे नोके करो विचार ॥ ५ ॥ अथ पगनष य ॥ तारे जोतवारें दिन दिये निहारें लग लाग हे प्यारे रूप मगल को लहे हे ॥ केधे हे सुहाग धीन जोवन के धीज केधे अनुराग धीनराज गुन धीन कहे हे ॥ रहमान प्रेमी प्यारी ससि भान की प्रधान काठ पग पल्लव पे राधे दुति गहे हे ॥ पगनष लाल से समन छीन धरी केधे मननि के भाय मन पाइ लाग रहे हे ॥

End—दीपक की लोइ कापे दामिन की देह जापे सरला सी देप तापे जाने लग सब हे ॥ मूल मुक्कद गिरि अजर से तारे मरे चद्रमा हू डरे सेत भयो पीत दब हे ॥ रह मान प्रेमी कह्यो मैं तो अचरण सह्यो प्याल की लपट लाजे माने अज तब हे ॥ प्यारो को

लपे उटोता सपे लाव लीन दोत यक नम खीत कोल छविनी की छवि है ॥ ६८ ॥ दोटा ॥
 व्यास गोस मनार के नप मिष रच्यो सवार ॥ मुलि कटोष जो कटुक ... लीको मुज यिमुवार
 ॥ ६९ ॥ इति श्री प्रेमो कृत नवमिष ... यदि श्री मयत् १८४८ मि -येष्ट कृत १ भोम
 यासरे लि ... स्वरोप्रसाद गोड ब्राह्मण की कासी जो मय्ये ॥ शुभ भूय ... ॥

Subject.—प्रत्येग की भोभा का वर्णन ॥

Note.—यह ग्रन्थ कवि मिर्झा अष्टद्विमान प्रेमो कृत है, ये फर्कवमियर के समय के
 कवि हैं । योगे निर्माण काल कछ नहीं दिया ॥ लिखिकान सवत् १८४८ वैश्व यदो १ मंगल-
 वार और लेखक ईश्वरी प्रसाद गोड ब्राह्मण कागोवासी है ॥

No 51—रसरहस्य *Verse Substance*—country made paper *Leaves*—119
Size— $10\frac{1}{2} \times 6\frac{1}{2}$ inches. *Lines*—15 on a page *Extent*—1,785 *Shloka*. *Appear-*
ance—new *Complete* *Correct*. *Character*—Devanāgarī *Place of deposit*—
 Library of the Mahārāja of Banāras.

Rasa Rahasya—A book on rhetoric by Kulapaṭi Mītra of Agra. He
 composed this book in Samvat 1727 (1670 A.D.) Dr Grierson says that he was
 born in 1657 A.D. but there appears to be some mistake in this as Kulapaṭi
 Mītra cannot be expected to write a book on Hindi rhetoric when he was only
 13 years old

Beginning—श्रीमते रामानुजाय नमः ॥ अयं रसरहस्य लिख्यते ॥ सवेष्टा ॥ कैसिय
 कुन यने छवि मुन रहे अलि गुनायो मुष लोके ॥ नेन विमान द्विगे बनमान विलोकत रूप
 मुचारस पजे ॥ जामिनि जाम की कोतुग ते कुग जात न जानिये छयो छिन छोजे ॥ पानद
 यो उमरयोह रहे विष मोहन को मुष देविष्ये कीजे ॥

End—सवत्तु जागरे जागरे गुन तप सोल बिलास ॥ विश्व भट्टारिया मिष दे हरि
 चरनन के दास ॥ १४१ ॥ अष्ट मिष तिन यस में परस राम जिमि राम ॥ तिनके सुत कुन
 पति क्रियो रस रहस्य मुषचाम ॥ १४२ ॥ निने खान हे कविता के भमट कहे योनि ॥ ते
 सय भाण में कहे रस रहस्य में जानि ॥ १४३ ॥ सवत्तु सवह मे धरप पीसी सनाइस ॥
 कारिक यदि यकादसी वार धरन धानीस ॥ १४४ ॥ इति श्री मिष कुनपति विरचिते रसरहस्ये
 अर्थान्तर निरूपन नाम अष्टमा प्रकात ॥ ८ ॥ सवने ॥ शुभमस्तु ॥ श्रीरस्तु ॥ श्रीराम ॥

Subject—काव्य चत्वारिदि ॥

Note.—निर्माणकर्ता कुलपति मिष हैं । निर्माण काल सवत् १८२७ कारिक वदो ११
 सुक्रवार है ॥

No 52—प्रथम कोमटो *Verse Substance*—country made paper
Leaves—72 *Size*— $10\frac{1}{2} \times 6\frac{1}{2}$ inches. *Lines*—15 on a page *Extent*—1,050
Shloka. *Appearance*—new *Complete*. *Correct*. *Character*—Devanāgarī
Place of deposit—Library of the Mahārāja of Banāras.

Vyāṅgartha Kāṁṇṇi II—A book dealing with the different kinds of heroes
 and heroines with special reference to the sarcastic style of Hindi composition.
 The name of the poet is Pratiṭāpa, who attended the court of Vikrama Śāhi of
 Charkhiān and wrote this book in Samvat 1865 (1825 A.D.) The author of
 the Śiva Singh & Śiroya is decidedly wrong when he says that Pratiṭāpa attended the
 court of Chhatrasāl Bundeli (1649—1731 A.D.) for there is a difference of more
 than a century between these two persons.

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ रामायनमः ॥ अथ विंग्यार्य कोमुदी लिप्यते ॥ दोहा ॥
गनपति गिरा मनाए के मुमिरि गुरन के याइ ॥ कवित रीत कछु कहरा हो विंगि अयं
चित्तुलाइ ॥ १ ॥ बाचक लच्छक विंजको सहू तीन विधि मानि ॥ पाव्य लच्छ अरु विंगि सहं
अर्थ विविधि पहिचानि ॥ २ ॥ इनके लच्छन लच्छ यहु रस यंयन ठहराइ ॥ साते हरि बरने
नही बढे यंय समुदाइ ॥ ३ ॥

End—दोहा ॥ सवि दूती दरसन दसा हाय भाव बहु ओर ॥ याते नहिं वर्नन
करे बरने कवि सय ठोर ॥ १२३ ॥ विंगि अरथ अतिसे कठिन को कहि पाये पार ॥ ममठ
मत कछु समुक्ति वित कीने मति अनुसार ॥ १२४ ॥ यह विंग्यार्य कोमुदी पढे गुने विंगु
लाइ ॥ ताकी मति साहित्य को कछुकर अर्थ दखाइ ॥ १२५ ॥ समतु सवि पसु पसु मु ह्वे गनि
अपाठ को मास ॥ किय विंग्यार्य कोमुदी मुक्ति प्रताप प्रकास ॥ १२६ ॥ विंगरी देत मुधारि के
ते गनि मुक्ति मुजान ॥ धनो विंगारत के मुयनि ते कवि अघम समान ॥ १२७ ॥ इति श्री
विद्वत् कुल मनेसाध कारिनो विंग्यार्य कोमुदीया मुक्ति प्रताप विरचितया नाइका नाइक
वर्ननो नाम सपुरन प्रकास ॥ छ छ छ छ ॥

Subject—नायिका नायक आदि वर्णन ।

Note—कृति मुक्ति प्रताप है । निर्माणकाल सवत् १८८९ आषाढ है ।

No 53—उत्तम काव्यप्रकाश *Prose and verse* Substance—country-made paper Leaves—67. Size—11×6 inches Lines—18 on a page Extent—1,195 slokas. Appearance—ordinary. Complete Correct. Character—Devanāgarī Place of deposit—Library of the Mahārāja of Banāras.

Uttama Kāvya prakāśa—A book on Hindi composition with special reference to sarcastic style by Mahārāja Viśwanātha Śingha (1840) of Rewah. The manuscript is dated Samvat 1896 (1839 A.D.) in which year it appears that the book was also completed.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ उत्तम काव्यप्रकाश लिप्यते । दोहा । हरि गुन श्री प्रिय दास के के खिय दिवा गनेस । सरस्वती सोता राम के के राधा राधेस ॥ १ ॥ गोपी मुकिया है सने रिक्खन हिल वृजनाथ । करहि चरित कुल नाइकनि कहत सु कछु विंगुनाथ ॥ २ ॥ उत्तम काव्य प्रकास यहि नाम विषार अमान । मुक्ति समति गुन गनहिगे या सम यंयन आन ॥ ३ ॥ वक्ति घेघण्य काहु पाव्य अथ सनिधि प्रस्ताय देस कानादिक आदि पद ते चेष्टा येती वैशिष्ट है तिन में प्रथम या कवित मे वैशिष्ट लम्ब अरु पति नायक है । आबु अकेली आगारिही जाइ लई कली फूलन की मन भाई । देपत ही धन देखी तहां गहि के गई आपने अैन लिगई । जाय दे किये घ्याह सिंगार कही कछुये रहो ताहि डेराई । केहु के छोये छुटो कानन ग्हे डिंग तेर ले आई पहर मे माई ॥ ४ ॥ वक्ति है नाइका तामे विहार की वैशिष्ट है सो कहे है देजो प्याहु के सिंगार किये सो कहि ब्रह्मा को सर्वाव के दियो जो विवाह सो गोपन कियो ओ वनते भगी चली अहो मैया कहि विवाह भये भयो को विहार सो गोपन कियो या वस्तु व्यजित भई विवाह ते पति नायक आये याते श्री राधा जी को विवाह तो आइहो गये ओ गोपिन को वस्त्राहरन समे मे सब गोपाल वाल भये श्री कृष्ण ताही वर्ष मे सय गोपिन को विवाह भयो कान्ह रूप गोप चालन सो अरु गीता मे लिपे है की परा सर्ति घोष है याते सर्व जीव मान श्री कृष्ण की मुको या है अरु गोपी तीन प्रकार की हैं नित्या प्रेमा श्यामा इनको ज्ञानि के मुमति के हम ते समाधान करि लेइने तिनको वेराय यथ के विस्तार के भय ते नही लिप्यो ॥ ४ ॥

1 vol.—सिद्धि श्री वाधय धनी राजाराम वधेल। रामु यम राधा धने रीया आर नयेन ॥ १ ॥ ता कुन श्री धधमिह को विस्वनाथ भूपाल। पुनि प्रकाश कोना भने राधा मे रे ताल ॥ २ ॥ सिद्धि श्री महाराजाधिराज गोमटाराना श्रीराजा बहादुर मोता रामचंद्र कृपापाधिकारी विस्वनाथसिंह जु देव कृत उत्तम च्यम काव्य सदा समाप्त भवति। गुप्त भूयात् मिती दुती जेठ सुदी ६ का सप्त १८८६ के (१८८६ के बाद यह धर्माकार केष्टवद्ध हे निचमे एक बार १६ केष्ट और एक बार ८ केष्ट हे उनमे अक्षर भरे हे उसके ऊपर "मध्य-हरो" यह शीर्षक लिखा हे।

Subject—च्यम काव्य।

Note—कर्ता रोवाधिपति महाराज विस्वनाथसिंह हे। इस ग्रंथ का लिपिकाल सन् १८८६ हे जो इसका निर्माण काल भी जान पड़ता हे।

No 64—*खतखतक Prose and verse* : Substance—country made paper Leaves—23 Size—10x6 inches. Lines—24 on a page. Extent—2580 slokaa. Appearance—ordinary Complete. Generally correct Character—Devanāgarī Place of deposit—Library of the Mahārāja of Banāras.

Sinfa Satala—A book dealing with spiritual subjects by Mahārāja Vīśvanātha Singha of Rewāh. The book is divided into three chapters, dealing with worldly renunciation, spiritual knowledge and final beatitude. The manuscript is dated Samvat, 1890 (1838 A.D.) (See No 53)

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ खत खतक लिख्यते ॥ दोहा। श्री रघुनंदन सरसुतो गौरि समु गनईस ॥ हनुमान हरि गुरु प्रिया दास वरन धरि सीस ॥ १ ॥ टीका मुक्ति प्रदीपता कहत अहे विष्णुनाथ ॥ गुह मुष मुनि यहि विवि कविह रच मुक्ति तेहि दाय ॥ २ ॥ कविन ॥ नर्पनि नपत कटि केहरो कपट टर मुनिन भुषण धारो क्रिस्ने करन मे ॥ बदन मे विष्णु धारो नैनन नलिन धारो मन सचरीक धारो कुचिह कवन मे ॥ नाथ विस्वनाथ के मसह्य ग्रंथ रामचंद्र जगत के नाथ धारो आप गुन मन मे ॥ काल सदा कृपता मे विधि वेद विद्वता मे धारो विष्णु धार धार करन सरन मे ॥ १ ॥

End—बहुत जे हे वेदात् तिनको अभ्यास करिके जे बहुत जे हे सत तिनको सग करि तिनके जे बहुत मत हे तिनको या सत सतक मे बनाये हे या मे सतन के जे गुप्त गुप्त भावना हे ये को कविन को अभ्यास करिके याकी रीति को करि हे को या ससार समुद्र को हे ताको सीपही गोषद्ध सम उत्तरि जेहे यह को या भाति कोऊ साधन न करि सकैगो को याको सटी माच करैगो मूल तिनको को अर्थ समुक्ति के दित धरैगो ताको वैराग्य, ज्ञान भक्ति रोवदो करैगो जेनो भाति को धारो बहुत अभ्यास करैगो ताते याकी परिचा करि लेत यह उपदेश ध्याजित भयो २३ ॥

इति सिद्धि श्री महाराजाधिराज श्री महाराजा श्री राजा बहादुर मोतारामचंद्रकृपा पाधिकारी विस्वनाथसिंहजुदेव कृत मुक्तिप्रद खत खतक समाप्त। सुभमस्तु जेठ वदी ३ का सप्त १८८५ ॥

Subject—वैराग्य, ज्ञान और भक्ति इन तीन खंडों में पुस्तक विभक्त है।

Note—यह कर्ता महाराज विस्वनाथसिंह रोवाधिपति हे। इसका निर्माण अथवा लिपिकाल पुस्तक के अंत में सन् १८८५ जेठ वदी ३ दिया है।

No 55—लालित्यलता *Verse Substance*—country made paper Leaves — 23 Size — $9 \times 4\frac{1}{2}$ inches. Lines — 12 on a page Extent — 550 slokas Appearance — old. Complete Correct Character — Devanāgarī Place of deposit—Library of the Mahārāja of Banāras

Lalhya Latā—A book on Hindi rhetoric by the poet Deva Duttā of Jājamaū. He wrote this book in Samvat 1791 (1734 A.D.) The manuscript is dated Samvat 1805 (1748 A.D.) This Deva Duttā should not be confounded with the celebrated Deva Duttā of Mainpurī. There is another manuscript copy of this book dated Samvat 1862 (1805 A.D.) in this library

Beginning—श्री गणेशायनम ॥ कविन ॥ बड़े सुर मुनि गद्यरय यक्ष नाग नर कामद कृपानिधि सरल सिद्धि को है घर । अमर सरित को सरोज सुदृश्य सो है चाख्यो मुन धरे पास अकुम अमय हर ॥ सिद्ध भूमि गन तुल्य वक्र दत्त लयोदर भनै दत्त सरल कलुष हर । गद्यपति धारो को दुलारो गिरिजा जू को सो मुमिरत देत मुख सपतिन को निरर ॥ १ ॥ अथेया ॥ अतर वेद पवित्र महा अखनी और कनेन के मध्य यिलास है । भागीरथी भवतारनि के तट देखत दैत सो पातक नाश है । देव सङ्घ सवे नर नारि दिने दिन देषिये पुन्य प्रकास है । नथ निनानवे कोने जिनाति सो आश्रमज कवि दत्त को वास है ॥ १ ॥

End—दो० ॥ सित सारी गोरे अगनि धीर केन से जैन ॥ सले चांदनी में मुमिलि चद्र-मुषी लपियेन ॥ १५१ ॥ सकर ॥ चद्र कला मुख चद्र में नदलला मुख पानि ॥ योद्धो अजन है लयो बैगुर से अघरानि ॥ १५२ ॥ समष्टि ॥ सकल सवह से बरे यकानवे प्रमान ॥ यह लालित्य लता ललित रघो पोष सुदिवान ॥ १५३ ॥ इति श्री कविदत्त कृत लालित्यलता संपूर्ण मुभ-मस्तु ॥ दो० ॥ वरय अठारह से अधिक पाव पोष सुदि राम ॥ तिथि रचिवासर को लिखी भोयम ललित ललाम ॥

Subject—अलंकार ॥

Note—कर्ता कविदत्त जानमऊनिवासी है । इस ग्रन्थ का निर्माण काल सवत् १७९१ और लिपिकाल सवत् १८०५ है ।

No 56—रसिकमोहनकाव्य *Verse Substance*—country made paper Leaves—74 Size— $11 \times 8\frac{1}{2}$ inches. Lines—17 on a page Extent—1560 slokas Appearance—ordinary Complete Generally correct Character—Devanāgarī Place of deposit—Library of the Mahārāja of Banāras

Rasika Mohana Kāvya—A book on Hindi composition by the poet Raghunātha Bandhiana (Fl 1745 A.D.) who was the court poet of Mahārāja Barivanda Singha of Banāras. The manuscript is dated Samvat 1862 (1805 A.D.)

Beginning—श्रीगणेशायनम श्री सख्येत्येनम । विघ्न हरन दुरमति दहन करन सरल कल्याण ॥ सिद्ध सुत श्री गननाथ को सब पुख दाघक ध्यान ॥ १ ॥ श्री गुरदेव मुकुन्द को लहिके क्रिया सहज ॥ करिषे की पाप्मी सकति यथनि को समुदाइ ॥ २ ॥ ब्रह्मा को सुत मानसिक गैतम परम प्रसिद्धि ॥ ताके कुल कीटू मिंसि प्रगट भये तपनिद्धि ॥

End—अपर ॥ पर असक लक्ष्मिनि मेरी बिने सुनो पुर पारपार को पहारनि भरो भयो ॥ आयत बसत ज्यो ज्यो वन उपवन सब रघुनाथ हरो भयो फूलि के फरो भयो ॥ करिषे जो है सो अर कीजि मच मचिन से नगर बसेयन के पास को हरो भयो ॥ तोखन

विपत्ति के होय राम राम ताके आग उग्रायें ईद्वय विमोहन परे भयो ॥ ३२३ ॥ शशि श्री
कवि रघुनाथ यदोनन कागि बायो विरिन्दो काय रसिक मोहने उष्मादि बनकार यननं
मुभमन्तु ॥ सवत् १८८९ ॥ भरर मासे कृष्णपक्षे ॥ १४ ॥ श्री राम राम ॥

Subject—बनकार वन्य ॥

Note—ग्रन्थकर्ता कवि रघुनाथ यदोनन काशीवासी हैं। ये मदारराज चरित्रटीप्पिह के
आश्रित थे। इन्होंने इनमें चोरा याम पाया या जो काशी में ठहर ४ कोस पर है और पच-
क्रांती से १ कोस दक्षिण तरफ गंगा के समोप पड़ता है। इस ग्रन्थ का लिपिकाल सवत्
१८८९ माघ कृष्ण १४ है।

No 57—श्री सुन्दर स्यामविनाय *Verse* Substance—country made paper
Leaves—249 Size— $9\frac{1}{2} \times 6$ inches Lines 18 on a page Extent—5,370 slokas.
Appearance—ordinary Complete Correct Character—Devanagari Place
of deposit—Library of the Maharaja of Banāras.

Sri Sundara S्याmvi Vaidya.—Description of certain scenes from Krishna's
life and the mention of certain Bhaktas. The name of the author is Sundara
Dāsa. He was the son of Dulha Rama who was alive when Vazir Ali was de-
seated in Banāras. Sundara Dāsa wrote this book in Samvat 1867 (1810 A.D.)

Beginning—श्री राधा कृष्णायनमः ॥ चोरे ॥ हरि को गुर को प्रथम मनावो ॥
रसिक जनन के बलि बलि नाचो ॥ हरि गुर को मन से। जो ध्यावो ॥ वुरन काम धाम पद
पावो ॥ रसि रसि रसि भवि हरि गुण गावो ॥ रसिक जनन पर रस बरपावो ॥ छूमि छूमि
भूमि भूमि जावो ॥ भूमि भूमि पर सीक नचावो ॥ रोम रोम से आनद पावो ॥ धूम धूम
रस बरपि सिरावो ॥ अद्भुत रचना रचो रचावो ॥ भूमि भूमि मुख दे मुख पावो ॥

End—करि है श्री काशो मेवास ॥ धरै ध्यान दर्पण को विनाय ॥ कृपा करो हरि हरि के
सा ॥ तिनकी कृपा वुरन भयो धय ॥ सवत् अठारह मे जानागे ॥ सगवठ ता उपर मानागे ॥
चेत माम शुद्ध पद मगन मन ॥ नेामी श्री श्रीराम जनम दिन ॥ जो हित बित से। पडे
मुनैगे ॥ हरि हरि मन माह गुनैगे ॥ जो अजरय हरि जो पद पावे ॥ दोड अचाते
मुदर गावै ॥ लिख्यो कष्टो अपना नहि जान ॥ हरि प्रेम से कियो अपान ॥ केवल दर्पाति
को कष्टा से ॥ वुरन भयो वन्य यह तासे ॥ इति श्री सुन्दर स्याम विनाय घमाप्रम् शुभ-
मन्तु सिद्धरस्तु दोहा ॥ सुन्दर सुन्दर ही जणो रटो यह सुन्दर नाम ॥ यह रटना सब तें
भलो बेत न आवै काम ॥ सुन्दर हरि के चलन से यहै यह नित आर ॥ सुन्दर मुन्दर कहन
को मन में रहे टमाह ॥

Subject—कृष्णलीला तथा कुह भक्तो का वर्णन ॥

Note—ग्रन्थकर्ता का नाम सुन्दर जान पड़ता है और यह जीति के कायस्थ काशी
वासी थे। इन्होंने इस ग्रन्थ को सवत् १८८७ चैत सुदी ८ को पूर्ण किया। लिपिकाल नहीं है
कदाचित् इहोके सामने की यह प्रति लिपी है। सुन्दराय के पिता का नाम दूनहराम
था जो बनारसनी श्री लडाई के समय काशी में विद्यमान थे।

No 58—शिराजमुयन *Verse* Substance—country made paper Leaves
—58 Size— $10\frac{1}{2} \times 6\frac{1}{2}$ inches Lines—15 on a page Extent—855 slokas.
Appearance—new Complete Correct Character—Devanagari Place of
deposit—Library of the Maharaja of Banāras.

Śivardja Bhūṣana—A book on rhetoric in which the examples are almost all written in the heroic style by the celebrated poet Bhūṣana who composed this book in Samvat 1730 (1673 A.D.). Bhūṣana's history is long and interesting. He remained at no less than 5 different courts viz. Aurangzeb, Chhatrasal, Śivaji and his son Sambhaji. The date of Bhūṣana's birth may be fixed between 1640 and 1650 A.D. as he is said to have been a young poet when he attended the court of Aurangzeb prior to joining that of Śivaji, who was born in May 1672 A.D.

Beginning—ओ गणेशायनम । अथ शिवराज भूषन लिख्यते ॥ कवित ॥ विरुट
अपार भय पथ के चले को भम हरन करन घोष नाचे बरम्हाइये ॥ इहि लोक पर लोक सफल
करन कोकनद से चरन हिये आनि के जुडाइये ॥ अलि कुल कलित कपोल घ्याइ ललित
अनद रूप संहिता मे भूषन आहाइये ॥ पाय तनु भजन विधन गठ गजन भरत मन रजन
दुरद मुप गाइये ॥ १ ॥

End—सयतु सचह से तीस सुवि यदि तेस भान । भूषन शिव भूषन कियो पठो मुनो
सग्यान ॥ ३१६ ॥ विष कवित्व ॥ येक प्रभुता को धाम सजे तीने वेद काम रहे पवानन पडा
नन रानी सबैदा ॥ सती घर आठो जाम जाचिक निराजे अतरार धिराजे कपान ज्यो हरि
गदा ॥ शिवराज भूषन अटल रहे तेने जोसो चिदस भुवन सब गग और नरमदा ॥ साहि
राने साहसीर भोसला खरणा बस दासख्यो जा रसता मरणा विसरदा ॥ ३२० ॥ इति श्री
कवि भूषन विरचिते शिवराज भूषन गृथ अलंकारनि को संपूर्ण ॥ समाप्त ॥ * ॥ राम

Subject—अलंकार यथ, धोर रस की कविता मे ॥

Note—यद्यकर्ता प्रसिद्ध कवि भूषन हे । निर्माण काल सवत् १७३० हे ॥

No 59—रसिकविलास Verse. Substance—country made paper. Leaves—63. Size—9 × 6½ inches. Lines—13 on a page. Extent—700 śloka. Appearance—very old. Complete. Correct. Character—Devanāgarī. Place of deposit—Library of the Mahārāja of Banāras.

Rasika Vilāsa—A treatise on Hindi composition by the poet Bhojarāja, who attended the court of Rājā Vikramājita of Bundelakhanda. Rājā Vikrama was born in 1780 and died in 1828 A.D. consequently the time of Bhojarāja may approximately be fixed at 1800 A.D.

Beginning—ओ कृष्णायनम । अथ रसिक विलास लिख्यते ॥ दोहा ॥ कलुष कदन
सोभा सदन सस हय बदन मुदेष ॥ बसिये प्रभु कवि भोज के हृदय सरोज हमेश ॥ १ ॥
ताजी तानी रघु कियो भोज हिये सुत सोव ॥ सानो सानो भुमत रव राजी बाजी पीव ॥ २ ॥
रोज राज कवि भोज उर चरन सरोज उछाह ॥ बसिये महारानी सदां बानी खानी माह ॥ ३ ॥

End—अथ दिसाबन्द दोहा । नाइका परकिया प्रेषित पतिका ॥ वाय बहत ईसान
हिय अगिन नई रित देत ॥ पूरव मुष उतर मुषद पत दसन के हेत ॥ २१ ॥ समय रोकहे
रसिक कर बदन सरोज प्रकास ॥ रसिकन को रसमय सरस को हो रसिक विलास ॥ २२ ॥ सिध्द
मुखिक विलास भो घरने विविध विचार ॥ भापत होइ जु भूल कहु लोको मुकवि
मुधार ॥ २३ ॥ सिध्दग्री बुद्धेलवसावतस श्रीमान महाराजधिराज श्री राजा विक्रमाजीतज
देवागिरि भोज राज मुकवि विरचिते रसिक विलासे काव्ये सपूर्ण शुभमस्तु ॥ भगल ददात ॥
श्री राम ॥

Subject—वाक्य नीतिशास्त्र ।

Note—यद्यपि मुद्रित भोक्तृगत है । इनके संग में मामूली टिप्पणी है कि ये बुद्धि-पंड के राजा विश्वनाथ के आश्रित थे और हमें की आशा में इसे बनाया । समय आदि का कुछ पता नहीं ।

No 60—हितापदेश उपपाया पावनो । *Verse* Substance—country made paper Leaves—8 Size— $10\frac{1}{2} \times 5\frac{1}{2}$ inches Lines—11 on a page Extent—160 Slokas Appearance—old Complete Generally correct Character—Devanāgarī Place of deposit—Library of the Maharaja of Banāras.

Hitopadeśa Upasādhā Bāvanī—A collection of 34 Kundaliyas dealing with moral instructions by Swāmi Agrā Dāsa († 1575 A.D.) The manuscript copy was probably made in Samvat 1753 as this book is bound in the same volume with Kāmkeśi (No 33) and is in the handwriting of the same man.

Beginning—योगयोगानन्द । अष्टदास जी की कुहनीया लिपि । महती दुखी बरार में की कहि घेरी दोर । की कहि घेरी दोर लोच माया निम रचे । हरि हीरामयि त्यागि कहा काँचहि कनि भाये । मृगगुण्या बसर समुद्र लीं की धावहि । भीषति यद विमुख मुनि मुपने नहि पावहि । अष्टदास झूठी कहे तो दुष्ट नैन निज वार । महती दुखी ० १ १ ।

End—उपपाया उपदेश हित ल्यो । दुम गाथा चद । ल्यो । दुम गाथा चद दुतिथ दिन दास दिपाये । यह कथन प्रवच अनुमाद हूँ हरि चरस ब्रह्मारे । विष्णु वदो धारनी बुद्धि भावन विधायी । भव सागर पुराण ताहि तरि लगे न चार । अष्ट अटल रावे भगति सत सग सदानंद । उपपाया उपदेश हित ० ॥ १॥ । इति हितापदेशमुपपाया धारनी संपुष्टे ।

Subject—उपदेश ।

Note—जी अष्टदास कृत । निर्मायकाल नहीं है । लिखि काल भी हमें तो नहीं है परंतु बालमकेलि केर ये दोनों पुस्तकें बरुटी लेखक की लिखी हैं और दोनों एकही निन्द में बची हैं अतः लिखिकाल लगभग १०७३ है ।

No 61—काव्यनिर्णय । *Verse* Substance—country made paper Leaves—171 Size— $10\frac{1}{2} \times 6\frac{1}{2}$ inches Lines—14 on a page Extent—2,423 Slokas Appearance—old Complete Generally correct Character—Devanāgarī Place of deposit—Library of the Maharaja of Banāras.

Kāvya Nirṇaya—A treatise on Hindi composition written by Bhukhari Dāsa of Bundelakhanda in the name of the prince of Bundelakhanda whom he calls Hindupati Bahā Sāhib The poet gives his nom-de plume as Dāsa only He flourished in 1750 A.D. The manuscript is dated Samvat 1871 (1814 A.D.)

Beginning—योगयोगानन्द । लये । एक रदन है मातु नृ चष सो बाहु पक्ष कर । बट आनन पर वष सेष्य सम्राटि भालवर । अष्ट सिद्धि नव निधि प्रदाति दस दिशि लक्ष विप्लार । मद्र रगारुष शुद्ध द्वादसादित्य वानर । के निदर घट बंदिता धन चोदह विपनि आदि गुरु । तिदि दास वल्लभ हूँ तिथिन धरिम कोटयो ध्यान हर ॥ १ ॥

End—जानो मक्ति न ग्यान को सक्ति हो टास अनाथ अनाथ के स्वामिजू । मागे होत पर दीन दयानिधि दीनता मेरो चिते भरो हामि जू ॥ च्यो विच नाम के नेह को ध्यो हे अतरजामो निरंतरजामि जू । मो रसना के रुचे रसना तनि राम नमामि नमामि नमामि ॥ इति श्री सकल कलाधर कलाधर वसावतस श्री मन्महाधन कुमार बाबू द्विदूषति विरचिते काव्य निनये रस दोष दोषोद्धार वर्नन नाम पञ्चीसतिमोऽङ्कः ॥ ११ ॥ यथ समाप्त सुभ भूयात् ॥ सवत ॥ १८८१ ॥

Subject—काव्य के सब अंग, उनके लक्षण आदि ॥

Note—ग्रन्थकर्ता का नाम अत में महाराज कुमार द्विदूषति बाबू साहब लिखा है परन्तु कविता में इस ग्रन्थ में दास नाम ही मिलता है । एक जगह भिणारीदास भी लिखा है । इससे यह निश्चय होता है कि यह ग्रन्थ भिणारीदास का बनाया है । समय के विषय में अत में केवल सवत् १८८१ है जो लिपिकाल जान पड़ता है ॥

No 62—शृङ्गार Verse Substance—country made paper Leaves—41. Size—6½×4½ inches. Lines—14 on a page Extent—750 slokas Appearance—old. Incomplete Correct Character—Devanāgarī Place of deposit—Library of the Mahārāja of Banārās.

Śringāra—Description of the different kinds of heroes and heroines written in the erotic style by the poet Beni of Asni in Samvat 1817 (1760 A.D.) under the patronage of one Nihachala Sinha. The manuscript is dated Samvat 1820 (1763 A.D.) Dr Grierson mentions only one Beni Kavi of Asni and he gives his date of birth as 1633 A.D. If he is the same poet as the author of the book under notice, his date of birth must be fixed a century later.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ प्रथम गणेशहि वर्णयेये याते सब सुभ होत ॥ सोत कठे जग मुनस के बडे मुकुत में गीत ॥ १ ॥ लख्यो कुभ सेंदुर पखौ बिलसे नीली कोर ॥ एक रदन रवि रसि मनो गह्यो राह सर जोर ॥ २ ॥ कीनो निहचनसिद्ध जू येनो कवि सो नेहु ॥ लोला राधा काह की भाषा में करि देहु ॥ ३ ॥ परबनु राधे काह को सज्जन ये मुनि लैहि ॥ बयो मिथिरी के साथ ते कामे दामे देहि ॥ ४ ॥ करियतु रस मय ग्रन्थ यद्य रसिकन की रवि पाद ॥ वरयनु राधे कृपन को सब विधि कविन मुनाह ॥ ५ ॥

End—... मु है असनी दर सुभ ग्यान ॥ वसत सरे पटकुल कहा करि वेद को गान ॥ ४४ ॥ दोहा ॥ अष्टादस सत वर्ष गत सबह जोरो जानि ॥ कामुन दशमी सित सुभग चद्रवार अनुमानि ॥ ४८ ॥ दोहा ॥ राध सुकूल सब द्विजन के होट नाथ के हाथ ॥ लिपि पुस्तक पुरन भई कोनो कविन सनाथ ॥ ४९ ॥ दोहा ॥ विनती कीजतु कविन मो भूल परी को होइ ॥ सोधि सुयोरी वरन घरि ग्रन्थहि नोके जोइ ॥ ५० ॥ दोहा ॥ भाषा को समुदाइ बहु परे कहा लागु जानि ॥ मूढम याने मे कठ्यो अपनी बुधि अनुमानि ॥ ५८ ॥ दोहा ॥ चरन परसि लगदम्ब के मनपति के सिव नाइ ॥ ग्रन्थ रच्यो शृंगार सुभ दीहो कविन वताइ ॥ ४५० ॥ शुभमस्तु ॥ श्री सवत् ॥ १८९० ॥ समे नाम ॥ आगठ कृपन पद ॥ ० ॥ वामरे शुकवार ॥ लोः धानसीद धासी मेरनापुर ॥ श्री राधे कृपन ॥ राम ०

Subject—शृंगार रस के कविता में नायिका भेद आदि ॥

Note—कवि येनी कृत—यह ग्राम असनी के रहने वाले श्री जोर निहचनसिद्ध के आश्रित जान रहते हैं । उन्ही की आज्ञा से इन्होंने यह ग्रन्थ बनाया चेवा कि आदि के तीसरे दोहे से स्पष्ट होता है ॥

निर्माण काल भवत १८१० कात्थुय शुक्र १० चटवार और तिथि काल वयम् १८५०
आराठ वृष्ण ० गुरुवार है ।

No. 63—उदितकीर्तिप्रकाश Verse Substance—country made paper
Leaves—4 Size—10½ x 6½ inches Lines—27 on a page Extent—50 shloka
Appearance—old Complete Correct Character—Desautgarh Place of
deposit—Library of the Maharaja of Banāra.

Udit Kirti Prakāśa—Praises of Maharaja Udit Nārāyaṇ Singh of
Banāra (1785-1835 A.D.) by the poet Benja Lal who wrote this manuscript
copy himself in Samvat 1879 (1835 A.D.)

Beginning—श्री हनुमन् नमः ॥ अथ उदितकीर्तिप्रकाशं लिख्यते ॥ दोहा ॥ अमल
अमल विद्य कर लख दिव्याभरण विमल ॥ जय श्री सुखरन चरन कवि • वृत्तान्त ॥ १ ॥ गग
अस अवराम दुय मान राने वृत्तान्त ॥ उदित कीर्तिप्रकाश मय भाग कविता रमान ॥ २ ॥
आसीर्योदित दृष्टि ॥ कवि करदि राय नरगि चरन धर जनगि धरहि धर ॥ जनगि अयन
आकाश जनगि केलास याम हर ॥ जनगि शृष्टि विधि रचहि जनगि लग अर्चहि देव घर ॥
जनगि राम लख लखदि • जनगि मुर वसदि मेघ घर ॥ कविप्राज्ञ मनत निमि शति जनगि
जनगि रैन दिन उगवय ॥ उद्योतनरायन भूष मनि तनगि भोग भूष भुषायय ॥ ३ ॥

End—विक्रम अक्षरा मान कवि दे करिद घर मुद्र ॥ ता मुद्राने यह प्रति निखी
कोधु मुद्र अमुद्र ॥ ५६ ॥ इति श्री महेश्वर अम्बर उगार काशी मुर उदित नारायणस्य श्री
मान कविज्ञ रानय वृत्तान्त भट्ट कविशान् निरचिते कीर्ति प्रकाशे सप्तमे शुभ भूयात् ॥ १ ॥
मिती कार्तिक वदी ११ सनेा वयम् १८५६ सु महा रामनगर लिखित स्वहस्त ॥

Subject—काशिराज महाराज उदितनारायणसिंह श्री का यय वर्णन ॥

Note.—कवि वृत्तान्त कृत । सवत् १८५६ मिती कार्तिक वदी ११ अतिवार को यह
पुस्तक कवि ने अपने हाथ से लिखी ॥

No. 64—शीलाल मुकुन्दविलास Verse Substance—country made paper
Leaves—80 Size—8½ x 5½ inches Lines—14 on a page Extent—1,380
shloka Appearance—ordinary Incomplete Correct Character—Kaithi
Place of deposit—Library of the Maharaja of Banāra.

Śrī Lāl Mukunda Vilāsa—Description of the different kinds of heroes
and heroines by the poet Mukunda Lal who was a contemporary of Raghunātha
(1745 A.D.) of Banāra.

Beginning—योगयोगायनम ॥ दोहा ॥ करि लग प्रतिबिम्बो मुहों तो मे लग
यहु मेय ॥ दरसनीय राही सदा नमो नमो श्री देव ॥ १ ॥ दरमु कहावे जानिनी चारि भाति
मे जान ॥ इस प्रतिच्छ अनुमान पुनि शब्द निपुन उपमान ॥ २ ॥ आनेदिक अन्निहि विसे
तिहि लग मय सुमान ॥ सो परतिच्छ कहावही सकल यय परमान ॥ ३ ॥

End—मुग्धा उत्तमा स्याथीन प्रियतमा ॥ मया ॥ मुद्रो सपानी रस मंदिर समोप
पाडे रोमता पिशा मे चेरो केरो दोमु लीजिगे ॥ मायरो कहाव ग्याद गहं हो पयादे पाद ये
मुद्रु लाल कवे आवे आवे मीनिगे ॥ मरेही सदैवनि प्रवेद दोर प्यारो के चनतो उत्तरो नया
पलाय पाद दीजिगे ॥ चितु पाहती हो तो गरयि मोह चूनी को खोलते हो पेहो सो भरोषो

भारो कीजिअ ॥ ३॥ मुग्धा मध्यमा स्वाधीन प्रियतमा जथा ॥ चौथी चार चौक चौक होता क्यों
उदास पाये पुरे भाग मेन मानो सेवके सेनाहरी ॥ चारै कर चौकना च
(आगे कुछ नहीं है) ॥

Subject — काव्य ग्रन्थ नायिकादि ॥

Note — ग्रन्थकर्ता मुकुन्दलाल — यह कवि रघुनाथ का समसामयिक था ॥

No 65 — कमरुद्दीण हुलास Verse Substance — country made paper
Leaves—60 Size— $10\frac{1}{2} \times 6\frac{1}{2}$ inches Lines—15 on a page Extent—1,100
Shlokas Appearance—old Complete. Correct. Character — Devanāgarī.
Place of deposit.—Library of the Mahārāja of Banāras.

Kamaruddin Khān Hulāsa—An account of Delhi, the emperor, his
ministers, etc., and a short description of the different kinds of heroes and heroines
by the poet Ganjanī, who wrote this book in Samvat 1785 (1728 A.D.) under the
patronage of Nāwab Kamaruddīn Khān whom the poet describes as the Vazīr
Azam of the Emperor Mohammad Śāha (1719 1748 A.D.) The original name of
Kamaruddīn Khān was Mīrā Muhammad Fāzī. He was appointed Vazīr
Muhammad Śāha after the resignation of Ās-
tīon of Ahmad Śāha Abdālī at the battle of
two copies of this manuscript in the possession of the Mahārāja of Banāras One
is dated Samvat 1856 (1799 A.D.), and the other Samvat 1861 (1804 A.D.)

Beginning — भोगयेष्टायनमः ॥ सरस्यत्येनमः ॥ हृष्ये ॥ करहि प्रथम मंगलनि बंधुरि
प्रहृष्टु बुद्धि प्रकाशहि ॥ जगत मुनस कह देहि नाम मुख लेत हुलासहि ॥ रिद्धिसिद्ध कह क-
रहि दरहि घेरैति मुन निजु जन ॥ माल देहि अति मुजन कान मानहि भूपति मन ॥ सुहृ
सपुत मुपदाय हित हुय अखरन कह अति सरन ॥ बड भाग राम गंजन मुकवि हियहि धन्यो-
गनपति चरन ॥ १ ॥

End — अथ हृष्ये कलस ॥ चौपठ कला प्रवीन चौदहे विद्या जाने ॥ मुन्दर मुघर
सदर दस सय के मन माने ॥ स्वामिकाव अनुराग लखी अति तेन बली है ॥ रस निधान
गुन बीर धडो जग माह धली है ॥ मुनि मुजन मरदान मन आजम उजीर सय जग कहह ॥
कमरुद्दीण नवाय से अष्ट सिद्ध गजन लखह ॥ २८ ॥ इति श्री मुकवि गजन विरचिताया कम-
रुद्दीण हुलास संपूर्ण गुणमस्तु ॥ कल्याणमस्तु ॥ सवत १८५६ मिति ज्येष्ठ कृष्ण ८ चद्र पाचरे
लिपितं वैखरी प्रसाद गौड काशी जी मधि पठनाये ॥

(दूसरी प्रति जो इसी की नकल मालूम पड़ती है "श्री सवत् १८६१ आषाढ शुक्ल चतुर्दश्या
॥ १३ रविवारे ॥" की लिखी है) ॥

Subject — पुर्य मे जमुना दिल्ली पादशाह महल बजोर बस चतु नय रसादि फिर
नायिकादि का वर्णन है ॥

Note — ग्रन्थकर्ता गजन कवि गौड गुर्जर काशी वासी है । नवाब कमरुद्दीण ने इनको
आदर दिया और फिर ग्रन्थ रचना की आजा दी । इनके लेख से मालूम होता है कि गजन
कुछ हिन्दी कविता का रसिक था ॥

निर्माण काल । सवत सचह से वर्ष योनि पचासोत । बैसाखी सुदि पचमी मृगु पासर
विधीत ॥ २३ ॥ = सवत् १७८५ बैसाख शुक्ल ५ शुक्ल वार है । इस ग्रन्थ की दो प्रतिया है ।
न १ सडो और पीछे की लिखी और न २ छोटी पुर्य की लिखी है । इसी से नकल ली हुई
न १ मालूम देती है ॥

निर्माण काल संवत् १८१० काष्ठपुत्र शुक्ल १० चन्द्रवार चोर तिथि काल संवत् १८१०
आषाढ कृष्ण ० शुक्रवार ऐ ॥

No. 63 — उदितकीर्तिप्रकाश Verse Substance — country-made paper. Leaves — 4 Size — $10\frac{1}{2} \times 6\frac{1}{2}$ inches Lines — 23 on a page. Extent — 50 slokas. Appearance — old Complete. Correct. Character — Devanagari. Place of deposit — Library of the Mahārāja of Banāras.

Udita Kīrti Pralāsa — Praises of Mahārāja Uditā Nārāyaṇa Singha of Banāras (1785-1835 A D) by the poet Braja Lalā, who wrote this manuscript copy himself in Samvat 1879 (1852 A D)

Beginning — श्री हनुमते नमः ॥ अथ उदितकीर्तिप्रकाश निघण्टे ॥ दोहा ॥ कमल
कमल विय कर लसत दिव्यभरन यिसाल ॥ अथ श्री मुशरफ चरन कवि.....पूजनाम ॥ १ ॥ गंग
यस अरांस ह्व मान तने वृजलाल ॥ उदित कीर्तिप्रकाश मय भाष कवित रचाल ॥ २ ॥
आसीर्यादिक दूषये ॥ कवि कवि तप जगति चरन धर जलनि धरहि धर ॥ जलनि अयन
आकास जलनि केनास घाम हर ॥ जलनि छवि विधि रचहि जलनि जग दवाहि देव घर ॥
जलनि राम लस लसहि जलनि मुर पदादि मेक पर ॥ कविराज भनत निधि पति जलनि
जलनि देन दिन उगमय ॥ उद्योतनरायन भूष मनि रत्ननि भोग भुय भुगयय ॥ ३ ॥

End — विश्रम अंचित मान कवि दे करिंद सर मुहु ॥ हा मुतने यह प्रति निघी
सोपहु मुहु अमुहु ॥ १६ ॥ इति श्री महेन्द्र समार उगार कापी मुर उदित नारायणस्य श्री
मान अविष्ट तनय वृजलाल भट्ट कविराज विरचिते कीर्ति प्रकाशे सप्तमं शुभ मुयात् ॥ १ ॥
मिती कार्तिक वद्यी ११ संवत् १८८६ सु महा रामनगर लिखितं स्वहस्त ॥

Subject — काविराज महाराज उदितनारायणसिंह जी का यह ग्रंथ ॥

Note — कवि वृजलाल कृत । संवत् १८८६ मिती कार्तिक वद्यी ११ शनिवार की यह
मुद्रक कवि ने अपने हाथ से लिखी ॥

No. 64 — श्रीलाल मुकुंदविलास Verse Substance — country-made paper. Leaves — 99 Size — $8\frac{1}{2} \times 5\frac{1}{2}$ inches. Lines — 14 on a page. Extent — 1,380 slokas. Appearance — ordinary Incomplete Correct. Character — Kāthī. Place of deposit — Library of the Mahārāja of Banāras.

Śrī Lalā Mukunda Vilāsa — Description of the different kinds of heroes and heroines by the poet Mukunda Lal, who was a contemporary of Raghunātha (1745 A.D.) of Banāras.

Beginning — श्रीगणेशाय नमः ॥ दोहा ॥ करि खग प्रतिविष्यो तुहीं तो मे लग
यहु मेव ॥ दरसनीय तुहीं सदा नमो नमो श्री देव ॥ १ ॥ दरमु कहारे जानिये चारि भांति
सो धान ॥ इक प्रतिच्छ अनुमान पुनि शब्द निघन उपमान ॥ २ ॥ ग्यानिंदिय अरु लिहि विषे
तिहि लग मय जुगान ॥ सो परतिच्छ कहावही सकल गय्य घरमान ॥ २ ॥

End — मुग्या वल्गा स्वधीन प्रियारामा ॥ वल्गा ॥ मुंदरी सपानी रस मंदिर सनीय
आडे रोजता विद्या मे प्रेमा केसो दोमु लोत्रिये ॥ मावरी कराइ ल्याइ गई हो पमादे पाइ ये
मुकुंद लाल कहे आवे आप मोलिये ॥ मेरेही सदेहनि प्रवेद दौत प्यारी के बनतो ठपरे नया
चलाइ पाइ दीजिये ॥ चेतु साहसी हो तो गरबि माइ कुनरी की पोखरी हो पेहे सो भरोसो

भारो कीजिये ॥ ३॥ मुग्धा मध्यमा स्वाधोन प्रियतमा वर्या ॥ चौथी चार चौक बीच होता धोरा
उदास पाये धुरे भाग मेन माने सेरके सौनाहरी ॥ चारै कर बीजना च
(भागो कुछ नहीं है) ॥

Subject—काव्य ग्रन्थ नायिकादि ॥

Note—ग्रन्थकर्ता मुकुन्दलाल—यह कवि रघुनाथ का समसामयिक था ॥

No 65—कमरुद्दीन हुतास *Verse* Substance—country made paper
Leaves—60 *Size*— $10\frac{1}{2} \times 6\frac{1}{2}$ inches. *Lines*—15 on a page *Extent*—1,100
lokas *Appearance*—old *Complete*. *Correct* *Character*—Devanāgarī
Place of deposit—Library of the Maharaja of Banāras.

Kamaruddīn Khān Huldā.—An account of Delhi, the emperor, his ministers, etc., and a short description of the different kinds of heroes and heroines by the poet Ganjāna, who wrote this book in Samvat 1785 (1728 A.D.) under the patronage of Nāwāb Kamaruddīn Khān whom the poet describes as the Vazīr Azam of the Emperor Mohammad Shāh (1719 1748 A.D.) The original name of Kamaruddīn Khān was Mīrā Muhammad Fāzīl. He was appointed minister of Muhammad Shāh after the resignation of Āsāfjāh. He was killed in the opposition of Ahmad Shāh Abdālī at the battle of Samūd in 1748 A.D. There are two copies of this manuscript in the possession of the Maharaja of Banāras. One is dated Samvat 1856 (1799 A.D.), and the other Samvat 1861 (1804 A.D.)

Beginning—‘श्रीगणेशायनमः’ शरस्वत्यैनमः ॥ छापे ॥ कहहि प्रथम प्रगलनि बहुरि
बहु बुद्धि प्रकासहि ॥ जगत मुजस कह देहि नाम मुख लेत हुतासहि ॥ रिद्धिमिद्ध कह क-
रहि बरहि घोरहि गुन निजु जन ॥ माल देहि अति मुजन काम मानहि भुषति मन ॥ सङ्कर
सपुत सुपदाय हित हुय अवरन कह अति सरन ॥ बह भाग राग गंजन मुकवि हियहि घखो-
गनपति चरन ॥ १ ॥

End—अथ छापे फलस ॥ चौसठ कला प्रवीन चौदहो विद्या जाने ॥ सुन्दर सुधर
उदार दख सब के मन माने ॥ स्वामिकाल अनुराग लसी अति तेज बली है ॥ रस निगन
गुन बीर यडो जग माह बली है ॥ मुनि मुजान मरदान मनि आशम उजीर सब जग कहइ ॥
कमरुद्दीन नवाब से अष्ट सिद्ध गजन लहइ ॥ ९८ ॥ इति श्री मुकवि गजन विरचिताया कम-
रुद्दीन हुतास सपूर्ण शुभमस्तु ॥ कल्याणमस्तु ॥ सवत १८५६ मितो ठयेष्ट कृष्ण ८ चद्र वामरे
लिपितं वैश्वरी प्रसाद गोड काशी जो मधे पठनाये ॥

(दूसरी प्रति जो हमो की नकल मालूम पड़ती है “श्री सवत १८६१ आषाढ शुक्ल चैत्रोदस्या
॥ १३ रविवार ॥” की लिखी है ॥)

Subject—पूर्व में जमुना दिल्ली पादशाह महल बजोर बस अतु नर रसादि फिर
नायिकादि का वर्णन है ॥

Note—ग्रन्थकर्ता गजन कवि गोड गुर्जर काशी वासी है। नवाब कमरुद्दीन ने इनको
आदर दिया और फिर ग्रन्थ रचना की आज्ञा दी। इनके लेख से मालूम होता है कि नवाब
कुछ हिन्दी कविता का रसिक था ॥

निर्माण काल। सवत सचइ से वर्ष होते पचासीत। बैसाखी सुदि पचमी भूगु वासर
विप्रीत ॥ २३ ॥ =सवत १७८५ बैसाख शुक्ल ५ शुक्ल वार है। इस ग्रन्थ की दो प्रतिया हैं।
न १ बडो और पीछे की लिखी और न २ छोटी पूर्व की लिखी है। इसी से नकल ली हुई
न-१ मालूम होती है ॥

No 66—श्री कृष्णकंद निबन्ध Verse Substance—country made paper Leaves—102 Size—11 x 7 inches. Lines—18 on a page Extent—1,836 slokas. Appearance—old Complete Correct. Character—Devanāgarī Place of deposit—Library of the Mahārāja of Banāras.

Sri Kṛṣṇakanda Nibandha—A Kāvya written in the erotic style with special reference to the praises of Kṛṣṇa, by the poet Ghaṇānanda or Ānanda-ghana, who was killed in 1739 A D in the capture of Mathurā by Nādira Shāh.

Beginning—श्री गवैशायनमः ॥ श्री कृष्णकंद निबन्ध लिख्यते ॥ नेत्र तर आये ही बहुत दुष्ट दूरि जात ताप त्रिनु ताहि आप चन्दन कृपा करे ॥ लगनि दे लागनि दे पाग अनुरागनिदे जागत नगाव लेके मदन कृपा करे ॥ धानी के विष्णु धरमाये धन आनन्द ह्वे मूठ रूप प्रमट मूठ रुदन कृपा करे ॥ आरति निर्वदन मिनाये नद नदन सु आनदन मेरी मति घदन कृपा करे ॥ १ ॥

End—सग लगे कियो हो अलग लगे रहे मोहने मेल लगवत क्यों नहीं ॥ निस राख निहि घरमो रस मूरति प्रीति बगावत क्यों नहीं ॥ डीन पक्षो मुमने धन आनन्द हो गुन रासि वधावत क्यों नहीं ॥ जागत सेवता से हो कटा कटो सेवत मोहि लगवत क्यों नहीं ॥ ४४८ ॥

Subject—शुगर रस को कविता ॥

Note—ग्रन्थकर्ता धन आनन्द प्रसिद्ध कवि है—ये सन् १८३६ में मथुरा में मारे गये थे ॥

No 67—ललितालम्बाम Verse Substance—country made paper Leaves—46 Size—10½ x 6½ inches. Lines—16 on a page. Extent—720 slokas. Appearance—old Complete Correct. Character—Devanāgarī Place of deposit—Library of the Mahārāja of Banāras.

Lalita Lalāma.—A book on Hindi Prosody by the poet Maṭi Rāma (1650 A D) who wrote this book for Bhāva Sīnha of the family of Rāja Surjana Rao Hādī of Bāndī.

Beginning—योगवैशायनमः ॥ दोहा ॥ मुखद साधु जन को सदा गन्मुख दानि सदा ॥ सेवनीय सज जगत को जग मा बाप कुमार ॥ १ ॥ कवि मतिराम गनेस को मुमिरत मुख सरसात ॥ योन योन लगे जिघन तूल तूल छडि जाति ॥ २ ॥ मद रस मत मलिनद गय गान मुदिरा मननाय ॥ मुमिरत कवि मतिराम के सिद्धि निद्धि निधि हाथ ॥ ३ ॥

End—भक्ति अरथ भुषन जे रवि जाने मतिराम ॥ ताकी बानी जगत में बिपसे अति अभिराम ॥ ३६४ ॥ जलजि कच्छप कोल सहस मुख धरनि मार घर ॥ लजलजि बाटो दिगनि दिग्ध सोदत दिग्गज वर ॥ जलजि कवि मतिराम सगिर भागर मडि मडल ॥ अनिन अनल जल धनय कोति मडल आधन ॥ मुख सखपाल नदन भवत भावसिंह भुषल मनि ॥ जग चिरीजि तय लजि मुखद कहत सरल सखर धनि ॥ ३६४ ॥ कठ करे सो समनि में बिपसे अति अभिराम ॥ सरल मयो सखर हित कविता सनित ललाम ॥ ३६६ ॥ (आगे दति नहीं हे परन्तु कविता के अनुमान से ग्रन्थ पूरा जान पड़ता है स्पष्ट कोई टोका कविता रह गई हो तो हो ॥)

Subject—कविता के नियमों का ग्रन्थ ॥

Note—ग्रन्थकर्ता कवि मतिराम प्रसिद्ध है। उन्होंने इस ग्रन्थ को बुद्धो के राजा हाटा भुजनाय ॥ सख भावसिंह के लिये रचा ॥

No 68—कौशलेन्द्रहस्य या रामरहस्य Verse. Substance—country made paper Leaves—204. Size—9½ x 6 inches. Lines—19 on a page Extent—4845 slokas Appearance—new Complete Incorrect. Character—Devanāgarī Place of deposit—Library of the Mahārāja of Banāras.

Kaushalendra Rahasya or Ramarahasya A religious book dealing with subjects like spiritual knowledge and love of god etc by Rama Charan Dīsa (Fl 1780) The manucript is dated Samvat 1886 (1829 A.D.)

Beginning—श्रीमने रामानुजाय नमः श्लोक १ श्रमन्गुणयोगि विश्वविधाम
देव विविधविभक्तदेहभ्रमरचयनार ॥ चिदम्बरजम्बू दिव्यलोकाधिनाथ मन्त्रिण जन-
निवास रामचन्द्र नमामि ॥ १ ॥ अर्चनगुण ज्ञानसत्त्यादिबोधदाय कृपाविष्णुमादा परेश ॥
मुचेद्वारा रामानुज विशेष प्रसम्पादुत सद्भिमाणकरोमि ॥ दोहा ॥ श्रीपति श्रीसेनाधिपति
सठरिपुनाथ कृपाल ॥ पदुम नयन श्रीराम पद घटौ भुधोर माल ॥

End—दोहा ॥ निभुवन सपति लषति जित दपति सीताराम ॥ ध्यानहु उर आवत
हृन्क रामचरन विधाम ॥ इति श्रीमद्दामवरनदास विरचित विभवेन्द्रमौलिकोषनेन्द्र रहस्ये
चतुर्विंशत्यध्याय ॥ सप्त १८८६ मितो फागुन चार सोमार सुपु . सुभ ॥

Subject—ज्ञान भक्ति प्रेम आदि का वर्णन ॥

Note—यद्यकतो रामचरनदास है । इस ग्रन्थ का लिपिकाल सवत् १८८६ है ॥

No 69—बाजनामा या दौलतनामा Prose. Substance—country made paper Leaves—82. Size—8½ x 5 inches. Lines—18 on a page. Extent—385 slokas Appearance—very old Complete Correct Character—Kaithī Place of deposit—Library of the Mahārāja of Banāras

Dāzandama or Daulatandma.—An account of the birds of prey such as eagle etc. The name of the author and the date of composition are not given In one place it is said that Firoza Śīha once asked the physicians of his court to prepare a treatise dealing with the kinds and treatment of the birds of prey and this book was accordingly written by them There have been 3 Firoza Śīhas who were connected with the Royal family of Delhi The first who reigned from 1282 to 1296 belonged to the Khilji dynasty The second, who reigned from 1351 to 1390 A.D. belonged to the Tughlak dynasty The third belonged to the Mogal dynasty and was the son of Bahādur Śīha II. If by Firoza Śīha is meant one of these princes then it must be the last one as the language of the book will bear testimony and consequently the time of this may be approximately fixed at 1850 A.D.

Beginning—विषमिज्जादिरहमानिर्दोषि ॥ बहुत सारीफ खुदाइतआला की के
पीछे ॥ जो पैदा करन आला हे रात और दिन का जिसने इशारत फुन केकुन की से ह
जद हजार आलम और आसमान वे सितुन पैदा कीया ॥ जमो की बेल पर रफा बेल को म
छलो की पीठ पर रफा ॥ मछली हवा पर रापी ॥ माने घड कादिर शक ने इनसान को
एक मूठी पात्र से और गरदिस आसमान से अरस व कुरखो व लोह व कलम व पैदाइस
आदम की रोक साइत मे रोता सज किया ॥ तमाम आलम तेरो आत मे हेरान हे तँ नोचे
परदे के छिया हे तिस युद्ध का शुक्र वेशुमार ॥ सारीफ हजरत मुहम्मद मुसतफा ॥

End—इनाज कुलन ॥ तिल का तेल लेके नये वासन मे। नई रुई की बत्ती डालके
विराम जलाये सजाही ताई तब जो तेल बचे सो रफ छोडे मरोव जानवर को देवे तामा तर

करके रोक दफ़ता मिलाने ॥ तिस पोछे घेरा सा गुनाज लेवे जियमो बर घानगी तर होवे ॥
रोक घाता पिलावे चगा होर ॥ रिषाला मे कामलुल मनमूर का तमाम लिपि छ ॥

Subject—दास इत्यादि शिकारी पक्षियों की पहिचान उनकी आदत मित्रान
बोमारिया इत्यादि की पहिचान उनके रचाने और सिधाने की तरकीबें उनके इलाज
इत्यादि ॥

Note—कता के नम का पता नहीं लगता न समय मिलता है । पुस्तक प्राचीन है ।
यक जगद किताब में लिखा है कि फ़ोरोजगह ने हकीमों में कहा कि एक जानपरी की
पहिचान व इलाज मुकर्र करी और उन्होंने इस किताब को बनाया ।

No 70—खटमल वार्हसी *Verse*. Substance—country made paper
Leaves—8 Size—11×7 inches Lines—18 on a page. Extent—130 slokas
Appearance—old Complete Correct Character—Devanāgarī. Place of
deposit—Library of the Mahārāja of Bārāns

Khata-mala Būfat—Praises of bug by Abi Mubība Khān of Agrā, who
composed this book in Samvat 1637 (1630 A.D.) when he was going from Agrā
to Delhi on some private business and had put up at an inn where he was sorely
troubled by bugs

Beginning—श्लोकोपशमनम् ॥ जान दृष्टि करि देख ने घर से रामहि राम ।
कारी पीरो मूलि के राख लियो बक नाम ॥ १ ॥ नगर आगे बसतु है अलीमुद्दिनका
नाम । एक बार दिल्ली चला होता मोहि कछु काम ॥ २ ॥ हो डेरा ते दुख निकट घरस
पछो अति मेह । कट लोग पाछे रहे काहू कियो न नेह ॥ ३ ॥

End—वाघन के गन भाजि धन में बसे हे दूरे व्याखन कँगन भुय तर हर बरके ।
गज सिर डारे घूरि कछु न बषाय गार्ते औषी देह पाई कोर बने बल धरि के ॥ इनकी का-
हा है ये तो बसु हैं बिचारे तिहु लेकही मे को बलो को डरे हे मे भरि के । भूमि पे
उतारे लव आय दान हरे मोच पाठ पे न आवे बटमलनि के करि के ॥ १९ ॥ इति श्री
प्रीतम कवितान शिरचिते बटमल वार्हसी समाप्तः ॥

Subject—खटमलो की प्रशंसा ॥

Note—आगे के रहने वाले अलीमुद्दिनका उपनाम प्रीतम कवि ने सवत १६८०
(रिषि वसु दोषक चन्द) में इस ग्रन्थ को बनाया ।

No 71—मुश्नहार *Verse* Substance—country made paper Leaves
—105 Size—10½×6½ inches Lines—20 on a page Extent—2000 slokas
Appearance—ordinary Complete Correct Character—Devanāgarī Place
of deposit—Library of the Mahārāja of Bārāns

Sauratāhārā—A book on Hindi Prosody by the poet Gajraj of Bārāns
He composed this book in Samvat 1903 (1846 A.D.) Dr Grierson says that he
was born in 1817 A.D.

Beginning—श्लोकोपशमनम् ॥ अथ मुश्नहार लिख्यते ॥ दोहा ॥ सिद्धि करनि
जग जननि के घामे नाम मनाथ ॥ रावति वृत्त मुक्तानि में अनि सरोज सिर गाय ॥ १ ॥
गोद लिये गिरिजा भन नायक है अपने चनको प्रणाली । छुटी लखे अलके मुखपोल पे माने
विशुद्ध की पजाली ॥ पान के हेतु विशुद्ध भयो मन्थन पयोधर पे प्रति पानी । पचन

कुम्भ अमी सो भरें मनो। रक्क वेठो है तबक ताली ॥ १ ॥ सोरठा ॥ गनाधि पे १६०३ गति
वाम । घरस माघ सुदि पचमी ॥ गुरु वासर अभिराम । पुर्थ भाद्र उड्डु परिच जुजि । ६ ॥

End—सोरठा ॥ ईश्वर गुरु दयाल । सानो बानी अमृत की ॥ कविशर गर की माल
कही मुक्ति गजराज सो ॥ १० ॥ दोहा ॥ तेरो कविता पौप के मे दिखि आरति लान । यत्र
वचन बहु वचन को समुझि घरो गजराज ॥ ११ ॥ क्रिया भूत व्रतयान को सहित भविष्य
विशेष ॥ नारी नर बाचो सप्रद समुझि रचो ताज टेक ॥ १२ ॥ लुक्ति उक्ति दरसन कही दरसाये
सब होहि ॥ निरपि पद्य मुक्तियों की भये ग्यान तब मोहि ॥ १३ ॥ इति श्री गजराज विगुणित
मुमुक्षु हार सूर्यम् ॥

(इसके दाने इसी कवि की एक पत्र में कुछ और कविता है) ॥

Subject—काव्य के नियम ॥

Note—यन्त्रकर्ता कवि गजराज है । इस ग्रन्थ का निर्माण काल सन् १६०३ माघ सुदी
५ गुरुवार है । लिपिकाल नहीं दिया है ॥

No 72—हरिमक्तिविलास पुराई Verse Substance—country made paper
Leaves—286 Size—9½ x 6 inches. Lines—14 on a page. Extent—3 500
shlokas Appearance—ordinary Complete Correct Character—Devanāgarī
Place of deposit—Library of the Mahārāja of Banāras

Haribhaktivilāsa Purvārtha—Translation of the first half of the 10th
canto of the Bhāgavat Purāna by Rāj Vikrama Śāstri of Bundelakhanda, one of
the descendants of Chhatra Śāstri (B 1649 and D 1731 A.D.) Vikrama Śāstri
was born in 1785 and died in 1828 A.D. (See No 73)

Beginning—श्रीमणेशायनमः ॥ अय श्री हरि भक्ति विलास लिप्यते ॥ दोहा ॥ यत्र
रदन गज यदन घर गिरिजा तनय सपूत । चहो मुमति हरि भजन हित गहो धारु मजबूत
॥ १ ॥ कृष्ण कया जमना विमल गोवरधन मन मोद ॥ प्रेम प्रगट ग्रंदा विपन राधा रयन
विनोद ॥ २ ॥ सोरठा ॥ नारायण नर पास । मुक्त सनकादिज सारदा ॥ तिन पद पकन आस ।
जन विरुम हरि अस बहत ॥

End—द्वद्व हरिमौतरा ॥ यह कृष्ण चरित अपार पारवार को कवि कहि सके ।
मुक्त सेस सभु स्वयंभु नारद कहत सारद मति थके ॥ कह्य कह्यो हृदय विचार मति अनुसार
श्रुति समत गहो ॥ को मुने गाये मुदिति मन सो परम पद पावे सही ॥ १५ ॥ सोरठा ॥ अपनी
गति अनुसार । उडल विग्न अरुस विमि । पावत नाहो पार । तिमि विरुम हरि अस कहत ॥
इति श्रीमन महाराज हृत्साल वसावतस नृपति विरुमादित्य कृते हरिभक्तिविलासे हत-
नापुरी भवने नाम येकानपचासतमे अध्याय ॥ ४८ ॥

Subject—श्री कृष्ण की ब्रजलीला । श्रीमद्भागवत दशमस्कन्ध का छंदोबद्ध भाषानुवाद
पुराई ॥

Note—यन्त्रकर्ता हृत्साल वराज राणा विरुमादित्य हैं । ये सन् १८२३ में जन्मे
और १८२८ में मरे थे ॥

No 73—हरिमक्तिविलास उत्तराई Verse Substance—country made
paper Leaves—357 Size—9½ x 11 inches Lines—14 on a page Extent—
4 370 shlokas Appearance—ordinary Complete Correct Character—
Devanāgarī Place of deposit—Library of the Mahārāja of Banāras

Haribhaktivijaya Ujjwala a.—Translation of the second half of the 10th canto of the Bhāgavat Purāṇa in Samvat 1880 (1823 A.D.) by Rājā Vikrama Śāhi of Bundelkhanda (See No 72). The manuscript is dated Samvat 1883 (1826 A.D.)

Beginning—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ हरिभक्त विजय की उत्तमार्थ लिपि ॥ दोहा ॥
पंचायन अध्याय कहि लगायन धमपानि ॥ पुनि पठये प्रभु यद्यु निज हृदयधरि मृगमानि ॥ १ ॥
निजु लीन जरतन धरो जदुकुल कृपा निजेत ॥ मूर भार भो भूम वे ताहि लगान हेत ॥
उनचास अध्याय कर सुख कथ्य ध्यान ॥ अथ हरि को उत्तर चरित मुनिये नरति मुमान ॥

End—दोहा ॥ नहि करिता समर्थ कह्यु नहि यन छुटि विचार ॥ जन विरम प्रभु
चरित कहि निज मत की अनुसार ॥ २१ ॥ इति श्रीमन्महापन्न हृदयान्वयकायने वृद्धति
विरमादित्य कृत हरिभक्तिविजय नामे नये अध्यायः ॥ २० ॥ दोहा ॥ मयत् अष्टादश चमो
माघ माघ शुभ वार ॥ किय हरि भक्ति विलास यह मरुन गृहिन को मार ॥ १ ॥ आपठे मार्गे
शुभे शुक्र दृष्टे चोदस्यां रवि चापरे ॥ अस्मिन् मयत् १८८३ मुद्राम महाराज नगरे ॥ सपुन
मुममन्नु संगन ददाति ॥ श्री ॥ श्री ॥

Subject—श्री कृष्ण कथा । श्रीमद्भागवत दशम स्कंध उत्तरार्द्ध की भाषा छंदों में अनुवाद ।

Note—अन्यरत्नों हृदयान्वयका राजा विरमादित्य हैं । निर्माण काल मयत् १८८०
माघ माघ शुभ वार और निषिक्कल मयत् १८८३ आपठ शुक्र १३ रविवार है ।

No 74.—अमरप्रकाश *Perce. Substance*—country made paper. Leaves—51. Size—10½ X 6½ inches. Lines—15 on a page. Text—850 Slokas. Appearance—ordinary. Complete Generally correct. Character—Devanagari. Place of deposit—Library of the Maharaja of Banāras.

Amaraprakāśa—The translation of the Amarakosa by the poet Khumāna, made in Samvat 1893 (1836 A.D.) He lived under the patronage of Vikrama Śāhi of Charakhāra (1785-1828 A.D.). There is no doubt that he is the same poet who according to Dr Grierson composed *Laachhamana Śataka* and *Hanumāna Nakhastika*.

Beginning—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री राधाकृष्णाय नमः ॥ श्री मते रामानुजाय नमः ॥
श्री हृदयीयाय नमः ॥ श्री सारदायै नमः ॥ अथ लिप्यते अमर प्रकाश ॥ दोहा ॥ श्री योगेश्वर
पद पदम रन यदो सानद ॥ मठाकिनि मकरन्द लह परिमल परमानन्द ॥ १ ॥ हिनदिनाट
हय यदन के यदो जिन मुमिात ॥ विपन्न घर के पट के हाट हाट भटका ॥ २ ॥ यदो
पात्री यदन की तात्री यरज सतार ॥ मुम रात्री सात्री फिरे भात्री विपन्न कतार ॥ ३ ॥

End—कमल के केमरा ठडु फेदा मुरारि के दो दो नाम ॥ यारिज केपर किंजलक साधु
दई नल नाल ॥ सिफायंद करहाट अथ तिहिचर विष मुमनाल ॥ ६३ ॥ योन कोस पुनि
घराटक छतिया भापत चाहि ॥ अरु नय दल सर्यतिज्ञा से नशोन दन ताहि ॥ ३४ ॥ इति श्री
मुकेशि दुमान कृत भाष्य अमर प्रकाश ॥ मोर धर्म यह नाम करि पुरन दशम विलास ॥ ६१ ॥

Subject—अमरकोश का अनुवाद ।

Note—अन्यरत्नों सुमान कवि हैं । ये हृदयान्वयका 'देलखंडीय विरमादित्य' के आग्रह से । निर्माण काल मयत् १८८३ (१८ शुभ चतुर्थी) वैशाख शुक्र तृसिंह चतुर्दशी
बुद्ध वार है ।

No 75—शकुंतला नाटक *Verse Substance*—country made paper
 Leaves—48 Size—10½ x 6½ inches Lines—15 on a page Extent—1500
 slokas. Appearance—old Complete Generally correct Character—Devanāgarī
 Place of deposit—Library of the Mahārāja of Banāras

Śakuntala Nāṭaka—Translation of the Śaṅkhalopākhyāna by the poet
 Nivāja (1680 A.D.) He made this translation under the orders of Azam Shāh
 son of the Emperor Aurangzeb. The manuscript is dated Samvat 1801 (1834
 A.D.)

Beginning—श्री गणेशायनम ॥ राघव न मूरज सखी की परयाहि निसि वासर प्रकु
 लित रहत यक धानो के । ध्यानहु किये ते देत राम मरुट्ट वास नाक मे लहेया निनकी
 कहानी के ॥ कैसे सोर पानी के सरोन सरि करे सोचेमान मेजे सिउ सोस मुरसरि पानी के ।
 सिद्धि की मुगधि पाइ मेरे मन मधुर पाव पकरन पद पकर भगानो के ॥ १ ॥

End—दोहा ॥ यो मुनि बैठि विमान म मुनि के करि परनाम ॥ शकुंतला मुत
 सहित नृप आयो अपने घाम ॥ चो ॥ इहि विधि भाग भाल मे जाये । राणा राजु करन
 फिर लाये ॥ नृप के मुप सब रैयत राणी । घर घर पल मे भेयत वाणी ॥ शकुंतला अब
 भई पटरानी । इतनी यह चुकी कहानी ॥ इति श्री शकुंतला नाटक कथाया चतुर्थोपका
 समाप्त भुभमस्तु ॥ सप्त १८६१ मिति वैशाख कृष्ण पक्ष सप्तमी ॥ ॥ श्रीरामायनमः ॥ श्रीराम ॥

Subject—शकुंतलापद्यन ॥

Note—यद्यकर्ता निदान कवि है । ये आग्निप्रसाह के आश्रित थे और उन्ही की
 आज्ञा से इन्हीं ने शकुंतला भाषा में बनाई । लिखिताल सप्त १८६१ वैशाख कृष्ण ७ है ॥

No 76—नायिका भेद परवा छंद *Verse Substance*—country made paper
 Leaves—20 Size—10 x 6½ inches Lines—7 on a page Extent—200 slokas.
 Appearance—old Complete Generally correct. Character—Devanāgarī
 Place of deposit—Library of the Mahārāja of Banāras.

Nāyika Bheda Parva Chanda—A detailed description of the heroes
 and heroines. The name of the author or any other information regarding him
 or his work could not be ascertained.

Beginning—श्री गणेशायनम ॥ अथ नायिका भेद परवा छंद दोहा लिख्यते ॥ दोहा ॥
 कवित कहा दोहा कहा तुने न रूपे छंद ॥ विरचे गरी चितारके पद परवा रसकद ॥ १ ॥
 वैद्यक अनिचारो बडे समुझे धतुर मुगान । मुनत जात वित जात्र पे यह वरवे के जान ॥ २ ॥

End—परिहास वरवा ॥ जिसत मोह चलाय धनुष मनेन ॥ लावत उर उपटनत्रा
 बेति उरोज ॥ १६१ ॥ दोहा ॥ लवन दोहा जानिये उदाहरन वरवान ॥ तुने के सयह भय
 रस शृंगार निर्मान ॥ १६६ ॥ गहि नवीन सयह मुनो जो देखे वितदेइ ॥ विविध नाइका
 नायकनि जानि भलो विधि लेइ ॥ १६७ ॥ इति श्री नायिका विभेद संपूर्ण ॥ शुभ मस्तु ॥
 सिद्धि रस्तु ॥ श्रीराम ॥

Subject—नायिका भेद दोहा तथा वरवा छंद में ॥

Note—इसके अंतिम दोहे से यह सयह जान पड़ता है परन्तु सयहकर्ता का नाम
 नहीं मिलता न कोई कालही इसमें है ॥

इति श्रीमन्मानसिंह चरण शिष्यत गुलावसिधेन गौरी रामात्मजेन विरचिते मोक्षपंच-
प्रकाशे विदेहमुक्तिनिर्णये नाम पंचमोनिर्वाहः ॥ १ ॥ शुभं भूयात् ॥ * ॥ श्रीरामाय नमः ॥
* राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे ॥ सहस्र नाम तत्तुल्यं राम नाम धरानने ॥ सयत् ॥
१८३० ॥ शुभमस्तु सर्वज्ञगतां ॥

Subject—वेदात्त ॥

Note—यद्यकर्ता गुलावसिंह अमृतसर निवासी हे । यह ग्रंथ सन् १८३५ माघशुक्ल
वसंत पंचमी सोमवार को अमृतसर में पूर्ण हुआ । इसका लिपिकाल सन् १८३० हे ।

No 79—ज्ञानकीमंगल *Verse Substance*—country made paper Leaves—
32. Size—11 x 5 inches. Lines—5 on a page. Extent—260 slokas. Appearance—new. Complete. Correct. Character—Devanāgarī. Place of deposit—
Library of the Mahārāja of Banāras

Jānaki Māngala.—Description of the marriage of Rāma and Sītā by
Tulasī Dāsa. There are two manuscript copies of this book in this library. The
text of the other copy is mostly incorrect.

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ गुह गनपति गिरजापति गौरि गिरापति ॥ सारद शेष
मुक्ति श्रुति सत सरल मति ॥ हाय जेहि करि जिनय सबहि सिर नावजं ॥ सियं रघुवीर
विनाह जघामति गावज ॥

End—इद विकर्षाहं क्षुमद निमि देवि विधु भरे अय्य सुप सुप सोभा मरे ॥
सहि विधि विशहि राम गायहि मुक्ति कल कोरति नरे ॥ लपसीत व्याह सदाह जे सियराम
मंगल गाह है ॥ तुलसी सकल कल्याण ते नर नारि अनुदिन पाह है ॥ १४ ॥ इति श्री गुसाई
तुलसीदास विरचितं ज्ञानकी मंगल संपूर्णम् ॥ शुभमस्तु ॥ सिद्धि ॥ रस्तु ॥

Subject—श्री राम ज्ञानकी का निहाह ॥

Note—यह ग्रंथ प्रसिद्ध श्री गोस्वामी तुलसीदास कृत है ॥

No 80—बरदारामायण *Verse Substance*—country made paper Leaves—
23. Size—13 x 5 inches. Lines—7 on a page. Extent—460 slokas. Appearance—old. Complete. Correct. Character—Devanāgarī. Place of deposit—
Library of the Mahārāja of Banāras

Barad Rāmāyana.—The story of Rama Chandra's life in the Barad
metre by Goswāmī Tulasī Dāsa. The manuscript is dated Samvat 1873 (1816
A.D.)

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ बरवा रामायन लिखते ॥ बरवा गननायक बर-
दायक देव मनाय ॥ निघ जिनस वरन प्रसक होत सहाय ॥ १ ॥ श्री गुह पद अनुज रस हृदय
सभारि ॥ ॥ वरनन करौ राम जस कृपा सुधारि ॥ २ ॥ श्री रघुवर अग सोमित अनुलित काम ॥
मक्त जेकर पूर्ण विधु करौ प्रनाम ॥ ३ ॥

End—मंत्रन प्रभाव माति बहु वरनेउ वेद ॥ तुलसी गायउ हरि जस मिटि भव वेद
४०३ ॥ कल पुनीत हेतु निन वचन विवेक ॥ तुलसी येहेहु सेमत रापत टेक ॥ ४०४ ॥ सीता
राम लपन सग मुनि के सान ॥ तुलसी चित चिचकूटहि वस रघुराज ॥ ४०५ ॥ इति श्री उत्तर
कांड बरवा रामायन संपूर्ण ॥ शुभमस्तु ॥ सन् १८०३ ॥ इति बरवा रामायन । संपूर्ण ॥
कीमुने पहे माघशुक्ल ॥ सीत प्रणद के पोखी ॥

(इसके अनन्तर १ पृष्ठ और है उमर १ संतियों में यह लिखित है) — मनी छायी
 लिन के दृष्टि होत भीषी ॥ बहुरि देत तेहि देखिय मानहु धनुषायी ॥ भात लखन ग्यु-
 दमनहु धरे नाम प्रिय नोके ॥ गये मोय मरुट मिटे तब पुरतो के ॥ कफल मनारय विवि
 क्रिये मर विधि सररी के ॥ अथ हुं हे गये मुने सब
 (आगे कुछ नहीं है)

Subject — बरवा हृद में संक्षिप्त रामायण ॥

Note — प्रसिद्ध श्री गोस्वामी तुलसीदास कृत — निषिद्धान्ध सप्त १८०३ ? ॥

No 81 — वेदायमदीपिनी *Verse* Substance — country-made paper
Leaves — 11 *Size* — 9 x 4½ inches *Lines* — 5 on a page *Extent* — 55 slokas
Appearance — new *Complete* Generally correct. *Character* — Devanāgarī.
Place of deposit — Library of the Mahārāja of Banārās

Vaidya Sandipani — Moral lessons on worldly renunciation by Goswami
 Tulsī Dās.

Beginning — योगयोगायनम् ॥ दोहा ॥ राम याम दिशि जानकी लखन दहिनी पार ॥
 ध्यान सदन कन्धान मय मुर तन तुलसी नार ॥ १ ॥ तुलसी मिटे न मोह राम कोये कोटि
 गुन याम ॥ हृदय कमल फुले नहीं विनु रविकुल रघिराम ॥ २ ॥ सुनत लपत मुति नेन
 विनु रमना विनु रघु सेत ॥ याम नासिका विनु लहे पसग यिना निहेत ॥ ३ ॥

End — कर्ता दोहारै राम को ने कामाद्रिक भावि ॥ तुलसी व्यो रात्र के हटे तुरत
 जात तम लानि ॥ ६१ ॥ यह विराम सदीपनी मुनन मुचित मुनि लेहु ॥ अनुचित वदन विरारि
 जर सो मुधारि तह लेहु ॥ ६२ ॥ इति श्री वेदायमदीपिन्या मोहाय विद्यामिन्या श्री गोस्वामी
 तुलसीदास कृतया जात वर्णन नाम तृतीयः प्रकाशः ॥ ३ ॥

Subject — उपदेशयुक्त ज्ञान ॥

Note — कर्ता प्रसिद्ध गोस्वामी तुलसीदास की है ॥

No 82 — हृदयकी रामायण *Verse* Substance — country-made paper
Leaves — 12 *Size* — 9 x 4 inches *Lines* — 7 on a page *Extent* — 120 slokas
Appearance — new *Complete* Incorrect. *Character* — Devanāgarī. *Place of*
deposit — Library of the Mahārāja of Banārās

Chhandāśaśī Rāmāyana — The story of Rāma Chandra's life in several
 metres by Goswami Tulsī Dās.

Beginning — श्री मते रामायणम् ॥ श्री रामायन की इतिहास लिख्यते ॥
 ॥ दोहा ॥ दशरथ धटकने अच भार धरा दुख होह ॥ गई मगन मो देख धरि कदि मुर-
 पति मो रोह ॥ १ ॥ हृद चौपड्या ॥ मुरपति मुर पूसा मुनू मतिमका मे विधिनेक तुरता ॥ विधि मुर
 समुझाये सग विधाये जह सोझत थोक्ता ॥ दशमुख की करनी बहुत विवि घरनी धरनी लेहि
 विधि रोह ॥ मुनि सारग यानी भई नम यानी विधि जाना नहि कोह ॥ विधि घवन
 मुनाये मुर समुझाये तजहु मोघ मन देश ॥ जे वन हितकारी प्रभु अमुरारी कहि पार सेह
 येथ ॥ जानर गो पुडा तनु धरि रोहा बसहु जाइ नहि मारी ॥ अथपेन निहेता गूह स-
 मेता प्रभु आवत तुम राहो ॥ देहा ॥ इति विधि विबुध विरोहि मे मुर निज निज घाम ॥
 कहू काल घीते अरघ प्रगट भये श्रीराम ॥ ३ ॥

End—छंद ॥ नित प्रात सरित अन्दास वधुन सञ्चित प्रभु मोजन करे ॥ गज बाजि राज समाज लपि सब देखि वन उपजन फिरै ॥ बैठे समा मह जाइ श्री रघुवीर दुख सज के हरे ॥ करि ग्याय स्थान उलूक को लपि लोग सब विषो करे ॥ माइयो भुति कीरति ठमिना सो सथनि सुत द्वे द्वे धने ॥ धानकी सुत जुगत छाये सथनि मन आनंद धने ॥ सनकादि नारद आदि मुनिवर सकल अवधहि आवहो ॥ लपि जाइ रघुवर के चरित सब विधिहि जाइ सुनावहो ॥ एक धार कहु महिदेव को सुत समा मह आयो मछो ॥ शुभ धूमि तपते मारि मुद्रहि तबहि सो ठठि जिय परयो ॥ इहि भाति रामचरित परम पवित्र नित नूतन करे ॥ कहि दास तुलसी मुनत सब के वचन मन पातक छरे ॥ १६ ॥ दोहा ॥ मुनि सीता के जुगल सुत रामकीन्ह अनुमान ॥ लोक सिपावन देन हित बोले श्री भगवान ॥ इति श्री उत्तर कांड समाप्तः ॥ ० ॥ श्री गुवाहे तुलसीदास कृत छंदावलि रामायनसः ॥

Subject—विचित्र छंदो मे सचित्र रामायण संप्रकांड ॥

Note—कर्ता प्रसिद्ध गोस्वामी तुलसीदास की है ॥

No 83—शतप्रश्नोत्तरी Verse Substance—country made paper Leaves—14 Size—10½ x 5½ inches. Lines—13 on a page. Extent—500 shlokas. Appearance—ordinary Complete Incorrect. Character—Devanāgarī. Place of deposit—Library of the Mahārāja of Banāras.

Satprasngottari.—A book on the knowledge of the creator according to Vedāntism by Manohara Dāsa Niranjan.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ सो प्रश्नोत्तरी लिप्यते ॥ सोरठा ॥ वाच्य लक्ष करि जान निर्गुण सगुण को कह्यो ॥ करि नमस्कारि दखानि वाच्य स्थान करि लक्ष को ॥ १ ॥ चौ० ॥ अज्ञान शक्ति आत्मा की कह्यो ॥ आत्म अज्ञान अनादि मिले लक्ष्यो ॥ अज्ञान अमिल रख्यो शृद्ध दखाना ॥ ताको ब्रह्म कहिके सो जाना ॥ २ ॥ अज्ञान मिल्यो सो साक्षी कह्यो ॥ दोह भाग अज्ञान को लक्ष्यो ॥ जीवेश्वर कह्यो पुनि तामहि ॥ साक्षी नाम कह्यो है जा महि ॥ ३ ॥

End—लक्ष अर्थ कह्यो यह मेहि ॥ जामहि द्वैत भान नहि दोह ॥ द्वैत भान बाधा कह्यो तामहि ॥ फल फलनाम दोह नहि तामहि ॥ ११ ॥ फल चिदाभास परमात्मा ॥ अह ब्रह्म फल कह्यो विधाता ॥ स्वहृदमाह दोह फल नाही ॥ विकल्प रहित रहे सो माहि ॥ १२ ॥ सोरठा ॥ हो मे हो तू माहि हो तू हो मे हे कह्यो ॥ सब हे हो तू माहि हो तू होरा एक है ॥ १३ ॥ इति श्री शतप्रश्नोत्तरी भाषा मणिहरदास निरञ्जनो कथ्यते नवमोऽधः ॥ ६ ॥ समाप्त ॥ शुभमस्तु ॥

Subject.—वेदान्त ब्रह्मज्ञान ॥

Note—यद्यकर्ता मनोहर दास निरञ्जनी है ॥

No 84—जान वचन चूर्णिका Verse Substance—country made paper Leaves—14 Size—10 x 5 inches. Lines—13 on a page. Extent—550 shlokas. Appearance—old. Complete Incorrect. Character—Devanāgarī. Place of deposit—Library of the Mahārāja of Banāras.

Gyāna Vachana Churnikā.—The doctrines of Vedāntism by Manohara Dāsa Niranjan. The manuscript is dated Sunat 1831 (1774 A.D.).

No 86—कवित्त बेनी कृत Verse Substance—country made paper Leaves—63 Size—10×6½ inches. Lines—15 on a page. Extent—935 ślokaś Appearance—new Complete Correct Character—Devanāgarī. Place of deposit—Library of the Mahārāja of Banāras

Kauffa Bent Krifa—A collection of 267 kavittas of the poet Benī (1760) written in the erotic style

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ भौंजीं फुलेन पुली अलकें मूकुलीं अलिआ वतिया तुतरोदे ॥ बेनी चलो टाँठ के अगिराव उठाव भुजा जमुहाव पिछेहिं ॥ पीर को लीकें कपोलन मडित पडित से अथरा मुरभोहे ॥ मोर को मोरी से बानि मडो चितये चित मे चर्वां वे चर्की भोहे ॥ १ ॥

End—पायस कान सुनेहो परो से सकुप भरोसो परे अलिआ खे ॥ बेनी चवाड रहे पसरो से मुमाड बरोसो न ओर छके हूँ ॥ कान्ह परो से रहे बतहो चित जातु हरो से विमिर कलावे ॥ अगनहू को भरोसो न दे कगरो से रहे ठर मारे न मे हूँ ॥ २६० ॥

Subject—शृंगार रस की कविता ॥

Note—ग्रन्थकर्ता बेनी कवि है । इस प्रति में २६० कवित्तों का सयह जान पड़ता है ।

No 87—रामायण सगनौती Verse Substance—country made paper Leaves—30 Size—10½×4½ inches. Lines—8 on a page. Extent—334 ślokaś Appearance—new Complete Incorrect. Character—Devanāgarī Place of deposit—Library of the Mahārāja of Banāras.

Rāmāgyā Saganautī—Consideration of auspicious moments for doing anything, by Goswāmī Tulāsī Dās.

Beginning—श्रीमते रामानुजायनमः ॥ प्रथम सर्वं लिख्यो ॥ पहिली दाहाई ॥ बानो विनायक अरु हर रवि गुह रमा रमेस ॥ मुमिरि करहु सब काच शुभ मंगल देश विदेश ॥ १ ॥ गुह साटा विधुर बदन ससि मुखरि सुरगार ॥ मुमिरि करहु मंगल मूडित मन होईहि मुकृत सहार ॥ २ ॥ गिरा गिरि गुन मनपति हरि मंगल मंगल मूल ॥ मुमिरत करतल सिद्धि सब दाह देस अनुकूल ॥ ३ ॥

End—कोई बेहि कान्हि अनुसरे सो दाहा नय छोई ॥ सगुन समाय सत्र सत्य फल कह्य राम मति सोई ॥ ६ ॥ जन विमवास विशिष मनि सगुन मनोहर द्वार ॥ तुलसी रघुबर भाँति डर विलसति विमल विचार ॥ ७ ॥ इति श्री तुलसीदास कृत सगनौती रामायण सपूर्ण ॥ एक सौ आठ कमलगढा अरन तीन मूठी छौं सात को भाग दे गने पहिलो मूठी को धर्म ॥ दूसरो मूठी को दहाई ॥ तीसरो मूठी को दाहा ॥ चमे दे गने चाकी विवि ॥ ॥

Subject—शकुन चचार ॥

Note—ग्रन्थकर्ता श्री गोस्वामी तुलसीदास है ॥

No 88—विनयसार Verse Substance—country made paper Leaves—52 Size—6×6 inches. Lines—12 on a page Extent—775 ślokaś Appearance—old Incomplete Correct Character—Devanāgarī. Place of deposit—Library of the Mahārāja of Banāras.

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ अथ ज्ञान वचन सूरिंया लिखते ॥ दोहा ॥ रवि
गुरु द्वे सप्त मुख्य ध्यो तप्त अध्यान करे दूर ॥ जगत्तर में प्रकाश करि संतन को निज दूर ॥ १ ॥
कोवेश्वर चेतन्य महि कहिय हे द्वे नाम ॥ सर्वव्याप्य अन्वय पुन मसारी सुखदाम ॥ २ ॥
सहित पुनि रहित हे सहित कर्म कह्यो जोय ॥ मसारी गाते भयो रहित भयो भाइ भोय ॥ ३ ॥

End—तप नीर धूरत भये टट्टर रोग मुख जाय ॥ ऐसे माधन सहित विद्या में समार
रोग नपाय ॥ समय रोग मसार मय माये करे विशारद कहे मनोहर निरवनी यह निहने
निरधार ॥ ३ ॥ इति श्री ज्ञान धूरत धर्तनिका समाप्तम् शुभभयनि ॥

(इसके आगे कुछ संस्कृत श्लोक संस्कृत टोंग सहित ६ पंक्तियों और सन् १८६१
आषाढ़ वटी ४ भृगुशरमे लिखा है)

Subject.—भाषा वेदान्त ॥

Note.—कर्मो मनोहरदास निरवनी है—लिपिकाल सन् १८६१ आषाढ़ वटी ॥
भृगुशर है ॥

No 25—गोरखसार *Prose Substance*—country made paper *Leaves*
—17 *Size*—6½×4½ inches. *Lines*—17 on a page *Extent*—300 *lokas* *Ap-
pearance*—ordinary *Complete*. *Correct*. *Character*—Devanāgarī. *Place of*
*deposi*t—Library of the Maharaja of Banāras.

Gorakhsara—The principles of Yoga philosophy by Gorakha Nātha.
For particulars about Gorakha Nātha see Report for 1903. The manuscript is
dated Samvat 1859 (1802 A.D.)

Beginning—श्रीरामचन्द्रायनमः श्रीगणेशायनमः श्री गुरुपरमात्मनेनमः श्रीलक्ष्मीयतये
नमः ॥ अथानुसुक्तदाय नमः श्रीगणेशायनमः श्री राधावल्लभायनमः ॥ श्री जीतायतननमः
अथ गोरखसार लिखते ॥ मगवाचन ॥ श्री गुरु परमानन्द तिनिको दहवत है ॥ हे जैसे पर
मानन्द आनन्द स्वद्वय है ॥ सरीर त्रिनिर्गो जिनिके निज गये हैं सरीर चेतति अरु आनन्दमय
हीतु है ॥ मैं सु हो गोगिष को मददनाय को दहवत करत है ॥ हे जैसे वे मददनाय ॥
आत्मा जोति निश्चय है ॥ अनन्दकरन तिनिको ॥ अरु मन्दाकार से छह चक्र तिनिको
तरह जानै ॥ अरु कुण्डलान कल्प इनि को रचना तत्त्व तिनिको गायो ॥ ग्यारन मुग्ध के समुद्र
तिनिको मेरी दहवत ॥ २ ॥

End—जो यह पुरुष सपुर्न तीर्थ अध्यान करि चुको ॥ अरु सपुर्न प्रथी ब्राह्मर्षि
को दे चुको ॥ अरु सत्स जग्य करि चुको ॥ अरु देवता सर्व पूजि चुको ॥ अरु पितरनि को
पतुष्ट करि चुको ॥ स्वर्ग लोक प्राप्त करि चुको ॥ या मनुष्य के मन हन माय वृत्त के
विचार बैठो ॥ अरु धिर हो ॥ ६० ॥ इति श्री गोरख भग्न ज्ञान मास्त्र सपुर्न समाप्तम् ॥ अरु-
दन सुदि १ सन् ॥ १८७६ ॥

॥ २ ॥ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥

Subject—योग ॥

Note—यह कर्मो गोरखनाथ है ॥ इस प्रति का लिपिकाल सन् १८७६ है ॥

No 86—कविता बेनी कृत Verse Substance—country made paper Leaves—63 Size—10×6½ inches Lanes—15 on a page Extent—935 slokas Appearance—now Complete Correct Character—Devanāgarī Place of deposit—Library of the Mahārāja of Banāras.

Kavitta Bent Kṛita.—A collection of 267 kavittas of the poet Benī (1760) written in the erotic style

Beginning—श्रीमणेशायनमः ॥ भोजी फुनेन पुत्नी अलर्के मकुली अलिखा वतिया मुतरौहे ॥ बेनी चलो डठि के अगिराड डठार मुजा वमहाद पिठौहे ॥ पोक की लीके कपोलन महित पडित से अघरा मुरफौहे ॥ भोर को भोरी सो वानि मही चितये चित मे चढी वे चढी भोहे ॥ १ ॥

End—पायत जान मुनेही परो से सङ्ग भरोसे परे अलिखा २२ ॥ बेनी सजाउ रहे पसरी से पुभाउ दरोसे न ओर छके हूँ ॥ काहू परो से रहे इतही चित जातु दरो से दिमुरि कलावे ॥ अंगनहू को भरोसे न दे मंगरो से रहे दरं मारे न मे हूँ ॥ २६० ॥

Subject—शुगर रस की कविता ॥

Note—अथर्वनाम बेनी कवि हैं । इस ग्रंथ में २६० कवितों का संग्रह जान पड़ता है ॥

No 87—रामाद्या सगनेली Verse Substance—country made paper Leaves—30 Size—10½×4½ inches Lanes—8 on a page Extent—334 slokas Appearance—now Complete Incorrect Character—Devanāgarī Place of deposit—Library of the Mahārāja of Banāras

Rāmdyā Saganēli—Consideration of auspicious moments for doing anything, by Goswāmi Tulsi Dās.

Beginning—श्रीमते रामानुजायनमः ॥ प्रथम सर्ग लिख्यते ॥ बहिनो दाहाई ॥ बानी विनायक अथ हर रवि गुरु रमा रमेश ॥ मुमिरि करहु सन का न शुभ मंगल देश विदेश ॥ १ ॥ गुरु सादा सिधु अदन ससि सुसरि पुणई ॥ मुमिरि करहु मंगल मूदित मन होईहि मुकृत सदाई ॥ २ ॥ गिरा गौरि गुरु गनपति हरि मंगल मंगल मूल ॥ मुमिरत करतल सिद्धि सब दैव ईश अनुकूल ॥ ३ ॥

End—जोई लोहि कावहि अनुसरी से दोहा जय रोई ॥ सगुन समोय सब सत्य फल कह्य राम मति रोई ॥ ६ ॥ जन विश्वास विविध मनि सगुन मनाहर द्वार ॥ तुलसी रघुधर भक्ति उर शिलसति विमल विचार ॥ ७ ॥ इति श्री तुलसीदास कृत सगनेली रामाद्या सपूर्ण ॥ एक से आठ कमलगटा अरन तीन मूठी घरे सात को भाग दे गने पहिलो मूठी को सर्ग ॥ दूसरी मूठी को दहाई ॥ तीसरी मूठी को दोहा ॥ चमे दे गने याकी विधि ॥ ॥

Subject—शकुन चिह्न ॥

Note—अथर्वनाम श्री गोस्वामी तुलसीदास हैं ॥

No 88—विनयसार Verse Substance—country made paper Leaves—52 Size—6×6 inches Lanes—13 on a page Extent—775 slokas Appearance—old Incomplete Correct Character—Devanāgarī Place of deposit—Library of the Mahārāja of Banāras.

Pingayadan—Praises of God by the poet Sundara Das (1800) (See No 57)

Beginnang—श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ श्रितयसां निष्यति ॥ चैतार्ह ॥ यो हरिं गुप्त
 के मृगिण कुरु ॥ मृगान् धनन पर मिर घट्ट ॥ हरि को गुप्त के अति अति पाऊ ॥ पन पन
 दिन दिन जयें गयाऊ ॥ कुरुकुरु मी करो वननाय ॥ मर्षा अहर्निमि कृपा को गम ॥ अने प्रभु
 के निग गुप्त गावें ॥ गाय गाय गुप्त अति मुख पावो ॥ जिनके सेस कटस मुख गावें ॥ गाय गाय
 कहु पत न पावें ॥ जिनको शत्रुमुख छप्पा ध्यावें ॥ शिष्य जनकादिक पार न पावें ॥ नारद
 माद्व ध्यान से मगन ॥ ध्याम को शुक भोजे दोने मन ॥ शिषि मन्वादि अहर्निमि पावें ॥
 मोषी गिनके रस से नावें ॥ कोठ शक्ति कहे कहु खेन ॥ ताके लिपत होत अति खेन ॥

First—बोपाई ॥ मुद्रा नाम को निषु टिन् गये ॥ जग के पार अपार हो जाये ॥
 अपनी देख कुमति भोगि हीनी ॥ बैसन पतिताई में मीनी ॥ बृह्म मुह मन हीनी हीनी ॥
 ताते हरि से धिननी कीनी ॥ मेरो धिननी को मुनि संजो ॥ पावन पतिता त्रिद विम टाजो ॥
 अपने दास पिचार विचार ॥ अघम उधारनता टर पार ॥ हरि कृपा से कुन मे पयार ॥
 मुद्रा दोउ मुद्रा को निहारै ॥ राख करुना करि हरि घर टिये ॥ दिनसी मुनि भति एमयो
 द्वियो ॥ जो कोउ या धिननी को गये ॥ सो लूथे मीरो मउ पाये ॥ दोहा ॥ मुद्रा हरिकी
 प्राप्ति मो धिननी करी पुरार ॥ हित चित मो गये मुने हो ॥
 भोगि यत्र यत्र नादा डुटा है जोर कुछ नहीं है ॥ यहाँ मे पुस्तक होड टा है ॥ कुछ पोसा
 या गेप जान पहगा है ॥) ॥

Subject—प्राचीन और दीनगा ।

Note—कर्मो सुदरदायक है ।

No 82—*विश्वविद्यालय* Versa Substance—country made paper Leaves—90 Size—9½ x 6 inches Lines—16 on a page Extent—1,620 slokas Appearance—old. Complete. Incorrect. Character—Devanāgarī. Place of deposit—Library of the Maharaja of Baroda.

Ranka Prayd—A book on Hindi composition by Kesava Dāsa, who wrote this book at the request of Indrajita Sinha, younger son of Madhukara Sīha of Orchha in Simvat 1648 (1531 A. D.) This is one of the standard books on Hindi Sahitya.

[illegible]

End—दोहा ॥ केशव कृष्ण द्वार्य मह श्वर शिवाय सिगार ॥ वरनग धोर भवा
नरुहि मतग येक विवम ॥ मे उपजे धोभम ते श्वर सिगार ते श्वास ॥ केशव श्रुत धोर
ते वरुना को प्रकास ॥ यदि त्रिधि केशवदास रम अनरम कहे विचारि ॥ वरनग नूल परा
नही कश्चिनुन लट्ट सुधारि ॥ केने रक्क प्रिया शिना देधि यदिन दिन तीन ॥ रथोर्ध्व

भाषा कवि सबे रसिक प्रिया विनु हीन ॥ बाड़े रति मति अति घटे जाने सब रस रीति ॥
स्वयं परमारय लहे रसिक प्रिया की प्रीति ॥ ११८ ॥ इति श्री मन्महाराज कुमार श्री इंद्र-
जीत विरचिताया रसिकप्रियाया अनरस यनेन नाम षोडश भावः संपूर्ण ॥ सुभमस्तु
श्री श्रवत् ॥

Subject—रस काव्य ॥

Note.—कवि प्रसिद्ध कवि केशवदास है । इन्होंने षोडशे के राजा मधुकरसाहि
गहरवार घंसी के कनिष्ठ पुत्र इन्द्रजीतसिंह को आजा से इस ग्रंथ को रचा । निर्माण
काल संवत् १६४८ कान्तिक शुक्ल सप्तमी चंद्रवार है ।

No 90.—नखशिख *Verses*. Substance—country-made paper. Leaves—
14 Size— $6\frac{1}{2} \times 5$ inches Lines—21 on a page. Extent—297 slokas. Appearance—very old. Complete. Incorrect. Character—Devanāgarī. Place of
deposit—Library of the Mahārāja of Banāras

Nakhsikha—Detailed description of the body of a heroine by the poet
Kānha, who, according to Dr Grierson, was born in 1857 A.D

Beginning—श्रीमणेशायनमः ॥ कवि कान्ह कृत नख शिख लिख्यते ॥ कः ॥ मूषक सयारी
दुष्ट दूषक सयारी पुष्ट दूषक पहारी कोटि विघन को रंदा है ॥ लोदाद नाम पुजे कान्ह मन
काम कोटि मूर को शे धाम भाल वंदन को वंदा है ॥ पड़े अरदानी सेवे सारद भवानी देखे
मुक्ति मनमानी देखे रापन को फंदा है ॥ सोहे गन मुंड पर चंदन भुसुंड पर घुंड पर कोल धरे
मुंड पर चंदा है १ ॥

End—चौपदेः नख पद अंगुरी बढी लाल । पापजेव पिंडुरी ठर साल ॥ जंचा कटि
क्रिकिनो मनकार । नभि पिखली रोमावलि आव ॥ ऊच्य ठरल अहता भरे । ऊपर स्याम
कंचुकी करे ॥ नख अंगुरी कर चाह हथेरी । कंकन चुरी भुजा सुभ हेरी ॥ मार पीठ योवा
सतलरी । चिजुक अघर दसनावलि भली ॥ रसना घानी हसन सुमेध । नख मुक्ता नासा सुभ
वेध ॥ गात कपोल लखे सुम बरनी । कोप पलक गुतरी बरनी ॥ डोरे लाल लखे अति काजर ।
पेनी डोट नैन छवि हाजर ॥ मूकुटी टेडी बेंदा गोल । भाल वंदनी जटित अमोल ॥ कारनफूल
कलिकावलि कान । सीसफूल माग मुक्तान ॥ पाटी बेनीवार विराजे । अग मुवाच बसन छवि
झाजे ॥ ७१ इति श्री कान्ह कृत नख शिख समाप्त संपुरन बनारस मध्ये लिख्यते रूपचंद ब्राह्मन ॥
(इसके आगे की पंक्ति दोमकं या गर्दहे और प्रत्येक पंक्ति की अन्तिम पंक्ति का भी यह हाल है)

Subject—नख शिख पर्यन्त प्रत्यंग की योभा वर्णन ॥

Note—कवि कान्ह कृत । हाकुर पियारसन के लेखानुसार ये कवि संवत् १२०४ में जन्मे थे ॥

No 91—श्री हनुमत बाल चरित्र *Verses*. Substance—country-made paper
Leaves—33 Size— $7\frac{1}{2} \times 5$ inches Lines—15 on a page Extent—420 slokas
Appearance—old. Correct. Character—Devanāgarī. Place of
deposit—Library of the Mahārāja of Banāras.

Sri Hanumata Bālacharitra—The story of Hanumāna's younger days
by the poet Brijā Lāla, who composed the book in Samvat 1876 (1819 A.D)

Beginning—श्री मणेशायनमः श्रीहनुमते नमः ॥ अथ हनुमत बाल चरित्र लिख्यते ॥
टोहा ॥ कमल कमल विय कर लपट ॥ दिव्याभरण विखल ॥ अथ जय श्री सुवरन वरन ॥

यदा कवि वृत्तान्त ॥ १ ॥ अयति जानकीनाम प्रभु यदहु पवन कुमार ॥ जिन्को किविज
 कपाकर ॥ यादा अन्ध अपार ॥ २ ॥ रामानुज पद यद कर ॥ गुन चरनन विगुल ॥ ३ ॥
 मत्त अम कथा रचहु ॥ द्विगे ध्याव सुषार ॥ ४ ॥
 सयत पट रिनु घमु मयी ॥ माह द्यटे गनिवार ॥ जान कथा वृत्तान्त रवि चादि मुकाय
 विचारि ॥ १६ ॥

End—अथ कवि तिन कर नय यो ॥ नहि हर हरि के दास ॥ भक्तमर धानो लपत
 कता सकल उपदास ॥ १८ ॥ चेष कृष्ण कुन जेय मन मयत चक्र प्रमान ॥ घाल चरित हान
 भयो ॥ ये प्रताप हनुमान ॥ १९ ॥ दोलति मुषति खनी जहा राय यी महराज ॥ सिद्धि
 स्थल मुमान मुन मुनिराज वृजान ॥ २० ॥ इति श्री मनगमचन्द्र प्रभोत्तर अगस्त मुनि-
 मवादे श्रीमदामायय उत्तर कांड वयानमर्गत श्री हनुमत बाल चरित ग्रंथेन श्रीमन मान
 कर्षोद सान्दय वृत्तान्त मट्ट कविराज विरक्ते गुरु तट साष्टाङ्गने अर्पणोपातो दृष्टवि
 मुनीय निष्कृति पुष पंचमोऽध्यायः ॥ २१ ॥ सूरसे सुमे भूषान् ॥ श्री हनुमते नमः ॥ रामायनम् ॥

Subject—श्री हनुमान की के घालपन के चरित रामायण उत्तर कांड से अनुवादित ॥

Note—कर्ता वृत्तान्त कवि है ॥ निर्माण काल हमका सयन् १८०६ आद्य ६ गनिवार है ॥

No 82—साहित्यमुद्राकर *Verse Substance*—country-made paper
Leaves—185 *Size*—10½ X 4½ inches *Lines*—7 on a page. *Extent*—1880
lokas *Appearance*—new *Complete* *Incorrect* *Character*—Devanāgarī.
Place of deposit—Library of the Maharaja of Banāras.

Silhitya Sukhālara.—Hindi prosody and composition by the poet Śrīdhara
 of Lalitpur, who composed this book in Śaivav 1902 (1845 A.D.) under the
 patronage of Maharaja Īvarī Prāsīda Nārāyaṇa Singha of Banāras.

Beginning—श्रीमधेशायनमः श्रीगुरवे नमः श्री गुरु पद रण यद के कर वर मुन
 प्रनाम । करल यरु हैं अथ मुवि कुवि कुन मन विधाम १ पदन चहे साहित्य को अयरा पठि
 अय लेह । तय सरसी साहित्य की देखन को मन देख २ कविन समुद के यद चन्द्रमा के जैसे
 बुधवार बिपन हरन मनपति जैसे हर के । शत्रु के हनुमत बल को न जाने आ दान को
 करन दीपियत भावकर के । कवि सरदार चेत रामचन्द्रज के लव कलि में न बुझे उपमा के
 और नर के । भयो वैरोचन के बल मो सपुत जेयो ईश्वरीप्रसाद उद्धतेष दान घर के ॥ १ ॥

End—सरद एक घट बीस यत ताके उपर दोह । पूरन कोय सरदार कवि राम
 बनम तिये जोह ॥ १ ॥ नगर ललित पुरवास है काशीपति के पास । कवि हरिजन नद गद्द
 हरिजन हेल विलास ॥ २ ॥ इति श्री साहित्य मुद्राकर ॥

Subject—पिंगल ॥

Note—अयर्काल सरदार कवि ललितपुर निवासी है । ये काविराज मरारज ईश्वरी
 प्रसाद नारायणसिंह के आश्रित थे और उन्हींकी आज्ञा से इन्होंने यह ग्रन्थ रचनाया ॥
 निर्माण काल सयन् १८०२ चैत सुदी ८ है ॥

No 83—रसमपन ग्रन्थ *Verse Substance*—country made paper *Leaves*
 —15 *Size*—7½ X 4½ inches *Lines*—15 on a page *Extent*—180 *lokas* *Ap*
pearance—old *Complete* *Incorrect* *Character*—Devanāgarī *Place of*
deposit—Library of the Maharaja of Banāras.

Rasabhūṣaṇa Grantha—A description of the different kinds of heroes and heroines by Rāmanātha Upādhyāya.

Beginning—श्री राम लो सूरन ॥ श्री गणेशायनमः ॥ प्रथम मनाड गनपति कट
जो फुप चाहु ॥ बढे सकल भुष सपति मिटि हे दाहु ॥ १ ॥ चरन तोरि चित सेरो सिप
ठकुरानि ॥ कठिन सरल सब हूँ गा पर मुहि जानि ॥ २ ॥ करहु नीक सिवराजी सब विधि
सोधि ॥ रचेहु यय तोरे बलधन प्रेम पयोधि ॥ ३ ॥

End—अथ ललित हाव को उदाहरन यथा । लागहु तहनि फुलेलवा पिय रसमाति ।
पहिरपा दाह गहनवा भलि भलि भाति १४४ अथ कुट्टमितहाव को उदाहरन यथा । मि-
लेट मोत अज भुषभा गा दुष भागि । चारति चेतु जेन्हेया परसत आगि १४५ अथ विहित
हाव को उदाहरन यथा । मिलिगा मोत दुषरवें लागवन साथ । धिरि समुचि नहि बोली तिय
लचि माय १४६ इति इति श्री घरये वाजपेयै रामनाथ कृत सूर्य शुभमस्तु रसभूषण ग्रन्थ स-
माप्त । श्री राम राम राम । घरये रामनाथ कृत ॥

Subject.—नार्यिका भेद ॥

Note.—ग्रन्थकर्ता वाजपेयी रामनाथ है । इसमें कोई समय नहीं दिया है ॥

No 94.—रतन हजारा *Verse Substance*—country made paper *Leaves*
—91 *Size*—9½ X 6½ inches *Lines*—13 on a page. *Extent*—1,007 slokas
Appearance—ordinary *Complete Correct Character*—Devanāgarī *Place*
of deposit—Library of the Mahārāja of Benāras.

Ratana Hajara—A collection of one thousand couplets by Rasa Nidhi.
Nothing more is known about this poet. The manuscript is dated Samvat 1894
(1837 A.D.)

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ श्री सृजुती देव्येनमः ॥ दोहा ॥ लसत सरस सि-
धुर घटन भालथली नपतेस ॥ विधन हरन भगल करन गवरो तनय गनेस ॥ १ ॥ नमो प्रेम
परमारथी यह वाचत हो तोह ॥ नदलाल के चरन से दे मिलाइ किन मोहि ॥ २ ॥ नमो
प्रेम जिने कियो दिय लग आइ प्रकास ॥ रगरत आसी नाक गो नाक गोपकन पास ॥ ३ ॥
निशि दिन गुजत रहतमे विरद गरीबनियाज ॥ हे निज मधकुर मुतन की कमल नैन
तुहि लाज ॥ ४ ॥ धरन मधुर सुदर अरथ हरि सोहित निरधार ॥ रसनिध सागर मद्य लये
दोहा रतन हजारा ॥ ५ ॥

End—अथम उदाहरन प्रभु कहू करतो को न समहार ॥ हे तो मेसो पतित ज्यो
या मयसागर पार ॥ ६०४ ॥ हेरत कहू जु दीन तन पाहि आवतो लाज ॥ प्रीतम तैं व
कदावते दीनयद प्रजराज ॥ ६०५ ॥ वदपि अकरनी हू बरी में हर भाति मूरारि ॥ प्रभु
करिनी करि आरही हरि विधि लेहु सुधारि ॥ ६०६ ॥ कहे अलप मति कोन विधि तेरे गुन
जिस्तर ॥ दोनप्रध प्रभु दान को ले हरि विधि निस्तर ॥ ६०७ ॥ इतिश्री महाराजाधिराज
श्रीरसनिधि कृत रतन हजारा संपूर्ण ॥ श्रीरस्तु मंगल ददात् ॥ कार्तिक शुक्र ॥ सवत् १८६४ ॥
श्रीराम ॥ श्रीराम ॥

Subject—प्रेमरस के दोहे ॥

Note—ग्रन्थकर्ता महाराज रसनिधि है । लिपि काल कार्तिक शुक्र ३ सवत् १८६४

No 95—रामायन महाकाव्य Verse Substance—country made paper Leaves—109 Size—8½ x 6½ inches. Lines—20 on a page. Extent—3000 slokas. Appearance—very old. Complete. Incorrect Character—Dorandari. Place of deposit—Library of the Maharaja of Banaras.

Ramdyana Mahadhatka.—The story of Rámachandra's life by Prína Chanda Chauhána, who composed this book in Samvat 1667 (1610 A.D.) when Síha Salma was the Emperor of Delhi. This Salma cannot be of the Súra family, being the younger son of Súra Súra Súra for he was dead in the year 1554. Probably it refers to the Mogal Emperor Jahángira, who was called Prince Salma before his accession in the year 1605. It is just possible that for some years after the accession Jahángira might have been popularly known as Síha Salma. The manuscript is dated Samvat 1775 (1718 A.D.)

Beginning.—शुद्धाश्रित परब्रह्मणः नमः शुद्ध विष्णु गुप्तेन । नमः तेन शतौष
लेो रामलक्ष्मणः । महायज्ञो रामः । ज्ञातो मुनीषोः । राघवे नामः । पालनी । प्रथम करी
ताहो की चेया । जेहो गुह कद सय मानी देवा । गुह गनेश कोइ जाने । इन्द्र आदी भू नग
बधाने । शीघ्र मुत केनी शीघ्र महो । गुह उठावे छरी नन लीहो । घालो बेट मह काठी अठारा ।
कहउ मद्र कहउ पवेउय हमारा । कहउ शेष कहउ शेषन करवा । ब्रह्मा कहउ ध्याम के घरना ।
शीघ्र मुत पीके काठी अठारा । तेहो दिन येो जन को पाप । अगमग धिर जानीक । रहे
शेष नरनाथ येो जल कीका गनेश की । परी श्रीरति हन माह ॥ ॥ ॥

कातीक मास पड़ो उज्जयिनी तीर्थ पुनो सोम कर धारा ॥ ताहो दोन कथा कीह
अनुमाना शह सनैम दीलीपती घाना समत सारह स सत साठा पुय प्रगास राप
भय नाठा को सारह माता कन दाया बरना साद पुन को माया जेह माया कद
मुनी वग मुला ब्रह्मा रहे कमल के फुला नीकस न सके माया के भाया देवहु
कपल नाम क रंघा साद पुन बरना कीहो भाति साद मुख तहां दीवस न राता
नीरगुन रूप रूप कहो शीघ्र घाना चार घेद गुन जेहि यथना तीना गुन जाने
सवारा शीघ्र पाले मनन द्वारा अथम जिनायो सय बटु गुना मन म होइ नु पहन
मुना देवे सय पे आही न आयो अचकार वार के धारी लोदी कर दहु कोकर बणना
लोदी कर मर्मभेद नही जाना माया शीघ्र मे कोउ न पात शहर पहर धीव होइ धारा ॥

१

शारदे पतका सक मह भगनु लागु न वार ॥

धरनी सग पातान ते मही माया अगम अपार ॥

End—

राम सवित्र को कह्ये बणना	साठे धर्म सय दोष हाना
अह जो मुने सवन चीत लार्ह	शेो समुद्र के नोकट न लार्ह
येो मा आनक येह बशारा	राम नाम धीन होइ न पारा
नाद बालमीक दुर्वासा	रोहटु राम नाम की असा
चारो लुग जाने सफारा	अत काल कह राम अदारा
जेहो मोति शङ्ख धरहो घाना	चारो घेद धि ब्रह्म भुनाना
मुनीषो राषा शीघ्र सन्यसो	जल थन येो अकाश के वासो
उन सय मोली येह वत राषा	राम नाम धीन पौर न भाषा
येो महोमा साद कह भाषो	तेहो बरने कह सली हमारो
आदी कथा येह येह पुराना	येो मे माष कीह बयाना

चालमीक हनीयत मोली प्रथम कीह चस्तुती भार
भाषेउ प्रानचन्द्र येह जेहो तेनके उधार

इति श्री महानाटक सपुर्ण सुममस्तु शोधिरस्तु जो कीहु देण से लीण मम दोषे न दीयते
॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ सवत् १७७५ मास मागसीर बीदी गुर बासरे लो० मोथचद्रे स्वरेण ठा०
फकीरचदनी पाठनाथे ॥ मुम—मुम ॥ दीवत् गोवीद रामनाथजी नी पोथी हे ॥

Subject—रामचन्द्र की कथा ॥

Note—प्रानचद चौहान ने शाह सलोम दिल्लीपति के समय में इस ग्रन्थ को बनाया ।
निर्माण काल सवत् १६६० और लिपि काल सवत् १७७५ हे ॥

No 96—*Hitopadeśa Verse. Substance*—country made paper. *Leaves*—
104 *Size*—11 x 7 inches. *Lines*—15 on a page. *Extent*—2900 slokas. *Ap-
pearance*—ordinary. *Complete. Correct Character*—Devanāgarī. *Place of
deposit*—Library of the Mahārāja of Banāras.

Hitopadeśa—Translation of the Sanskrit Hitopadeśa by Prayāga Dīsa
who lived at the court of Khumāna Sinha of Charkhārī (1830 A.D.) (See
No 74) The manuscript is dated Samvat 1889 (1832 A.D.)

Beginning—श्री राधाकृष्णायनमः ॥ योगवेशयानमः ॥ दोहा ॥ सीय सहित रघुनाथ
को नमह बारहो बार ॥ निहि तैं हित उपदेश यह होहि सरल सुपदाय ॥ १ गोपनि जूत सुमन
नित गो पालत घन के बीचि ॥ अजर मुरलिका धुनि उठत माथे मुकट मरीचि ॥ २ ॥ सत
चित आनद रूप घन अखिय कुसुमसरोर ॥ वेद गीत नद नद प्रभु करहु कृपा रनधीर ॥ ३ ॥
जामे डरन होइ यह करहु कृपा श्रीराम ॥ श्रुति हितकारी यह कथा हित उपदेश मुनाम ॥ ४ ॥
॥ चारठा ॥ देत सै मन काम ॥ हे ध्यारे श्री राम के ॥ याते शिखहि प्रनाम ॥ शिष बिन
शिष न कहूँ मिने ॥ ५ ॥ दोहा ॥ हर प्रसाद ते सत सभ सिद्धै लहत मुपेन ॥ जाके शिर
सहि लसत अनु गगा जू को फेन ॥ ६ ॥

End—दृश्य ॥ जलनि घर धरनि जलनि धुन घाम धराधर ॥ जलनि वेद बिलि
यास जलनि सोमस प्रकास कर ॥ जलनि देव दिगपान जलनि गोपाल गनेसह ॥ जलनि धनेस
अनेस जलनि अमरेस प्रदेसह ॥ कवि प्रग कहे कौतुक कलित जलनि सरस सिठ गावहि ॥
भूपति पुमान पदम प्रवन तलनि रात्रय भुय भुगजहि ॥ १६ ॥ इति श्री हितोपदेशे श्री मम
ह्याराजाधिराज महाराजा श्री राजाधुमानसिंह छूदेवाचया श्री कवि प्रयागदास विरचिते सुसुधि
मयहो नाम चतुर्थे ॥ सर्ग ॥ सुभमस्तु ॥ सवत् ॥ १८८६ ॥ मीति कुशार यदि ॥ ६ बार मगर ॥

Subject—संस्कृत हितोपदेश की भाषा ॥

Note—यह कर्ता कवि प्रयागदास है—ये कर्तरी के राजा शुमानसिंह के आश्रित थे
और उन्हीं की आज्ञा से उन्होंने यह ग्रन्थ बनाया ॥ लिपिकाल सवत् १८८६ आश्विन कृष्ण ६
मेम बार है ॥

No 97—राम मुक्तावली *Verse. Substance*—country made paper. *Leaves*—
29 *Size*— $7\frac{1}{2} \times 4\frac{1}{2}$ inches. *Lines*—16 on a page. *Extent*—about 350 slokas. *Ap-
pearance*—ordinary. *Complete. Generally correct. Character*—Kathī. *Place of deposit*—Library of the Mahārāja of Banāras

Rama Mukhdall—Spiritual lessons in regard to the worship and virtues of Rāmadāsa by the poet Tulasi Dāsa. The manuscript is dated Samvat 1859 (1802 A.D.)

Beginning—श्रीगणेशायनमः । श्रीरामचंद्रायनमः । पोखीराम मुक्ताश्ली । दोहा । राम नाम भनि दोष धन जोह देहरी द्वार । गुनगो भीतर साहर जो बाही भोजिहार । १ । राम नाम के मोहदे पोखरी धीन अयाह । मरगहु चम मुग्य बरे समहु न निहफल लाह । २ । राम नाम श्रुति सार हे मुक्ति देखि सब कोह । राम नाम सम मय रहि मुक्ति नन लेहि मिलोह । ३ ।

End—द्वेनामान से योनती करि अमिय माह जो ईश । दोही दृष्ट करि बचने पाव मोष अद योष । सब सेको सब पाह के राम कीन्ही परगाह । पठि मुनि हे ते निकषि हे जो हहि हरि के दास । इति श्री हरि चरित मानसे कलिकलुष विघमने नाम राम मुक्ताश्ली तुलसीदास की कृत राम के अनुसर संपन्न शुभमस्तु मवत् १८५६ जेठ सुदी १५ मंगलवार काशी महे अतरगृही मह रामचरन मिष्ट ने लिखा करने वाले । पंडित लन से बिनती मारी । टूटल अच्छर बावज कोरो । दोहा । मोह लहरि माने मही मन समुद्र अदगाह । तुलसी धीरज के बरे सब पावहुगे याह । हम हम हम हमार हम हम हमार के घोष । तुलसी अलखदि को लपै राम नाम कहु मोष ।

Subject.—राम नामोपदेश तथा नाम माहात्म्य ।

Note—ग्रन्थकर्ता गोस्वामी तुलसीदास हैं । लिपिकान सवत् १८५६ जेठ सुदी १५ मंगलवार है ।

No. 99—रामगजाका *Persa* Substance—country made paper. Leaves—26. Size—6 x 4½ inches. Lines—17 on a page. Extent—about 450 shloka. Appearance—ordinary. Complete. Incorrect. Character—Devanāgarī. Place of deposit—Library of the Maharaja of Bandras.

Rāma Sūdda—A small book dealing with the means of finding out the would be consequences of actions by the poet Tulasi Dasa. Such books are very numerous in Hindi and appear to me to be a later development of Hindu astrology. The manuscript is dated Samvat 1852 (1765 A.D.).

Beginning—श्रीगणेशायनमः । पोखी रामगजाका की । प्रथम ३ वर्ग प्रथम दहाह । अथ दोहा । गुर सहाह । यानी बीन एक यष्टु रजि गुर हर रामा रमेस । मुमिरि करह सब काम, सुख, मज्ज, देह विद्वेष । १ । गुर गुर येन अदुर चदन सही सुखोर गुर गाह । मुमिरि चलहु मंगल मुरती, दोहरी मुकृत सदाह । २ । गोरा गोरि गुर गनय हरः मंगल मंगल मुल । सुमोरत करत शीघी सब दोह ही सज अनकुल । ३ ।

End—सतवा वर्ग के सहाह दहाह । दोहा । मुदोन सारी पोखी नेयती, पुत्री प्रभात सप्रम । समु विचारव चाह्यतो सादर सख्य मुनेय । १ । मुनि गनी दिन गनी धनु गनी दोहा देशी मोधारि । देखक करता यचन घरः अचगुन समे अनुहारि । २ । सगुन सत् सही नैनगुन अग्रधी अग्रध नैयान । दोह मुफ्त जसु आमु नमु प्रीतो प्रतोती प्रमान । ३ । गुर गनेश हर गोरो सीख राम लपन हममानः तुलसी दसरथ मुमोरी मय सगुन बोचार नो धान । ४ । द्वेनामान सानुन भरत राम बोचा हर आनी । लपन मुमोरी तुलसी कटल सगुन बोषर वषानी । ५ । जो खेही कानही अनसरे, सो दोहा अथ दोह । सगुन समे सब सत्य फल, कदव राम गतो कोह । ६ । गुनी योषस योषीन मनो, सगुन मनोहर द्वार । तुलसी

रघुवर भक्तो हरः धीलसत धीमल धीधार ॥ ० ॥ इति श्री सीता सर्ग सप्तर्न शुभमस्तु जो देवा सो लिषा मम दोष न दोषते सबत् १८२२ मितो थापन वदी ॥ १ ॥ वार गुण लोः भोमसेन कायस्य मोकाम पचबनोया परोगनकेण ॥

Subject—शकुनाजली ।

Note—कर्ता गोस्वामी तुलसीदास जी है । इस प्रति का लिखिताल सन् १८२२ थापन वदी १ मुखार है ।

No 99—भाषा रामायण *Verse Substance*—country made paper Leaves—22 Size—9½ x 5 inches Lines—11 on a page Extent—about 480 slokas. Appearance—ordinary Complete Incorrect Character—Devanāgarī Place of deposit—Library of the Mahārāja of Banāras.

Bhāṣā Rāmāyaṇa.—A short story of Rāma Chandra's life by the poet Kapūra Chanda (alias Chanda only) who wrote it in Samvat 1700 (1643 A.D.) when Śahajahāna was the Mughal Emperor in Hindustāna.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ रामायण भाषा चंद कृता लिख्यते । देहरा ॥ गुरु गणेश अह गोरिछा मुमिरे होय आनंद ॥ कहुक हकीकत राम की करण करत है चंद ॥ १ ॥ आद अनादि जुगाद है जाहि जये सब कोइ ॥ राम चरित अदभूत कथा मुन्य पुन्य फल होई ॥ २ ॥ आदि पुरुष परमात्मा निरकार है सोई ॥ भगत हैत सरगुन भयो राम कहत सज कोई ॥ ३ ॥

End—सबह से सवत् भूप विक्रम को गनिये यत् । हजार पचा हजार सन हजार गनिये ॥ १०९९ वदी वैशाख चातुर्न जाने प्राता । साहिजहां पातिवाह दिल्ली अदल विघाता ॥ एक सो ग्यारह कविता हहयोर को ये पठत मुनत हरै दियो बस धरनन रघुनाथ को कपूर-चंद लिप्यो कियो ॥ १७ ॥ चारि कवित पहिले व्याह समे राम जी ॥ जुचे तिस समेति एक सो ग्यारह पुरन हुवे ॥ १४६ ॥ इति श्री रामायन चंद कृत भाषा सप्तर्ण ॥ श्रीः ॥ शुभमस्तु ॥ श्री सीतारामाय्य नमः ॥ श्रीः ॥

Subject—सत्सेप मे श्री रामचन्द्र की कथा ।

Note—ग्रन्थ के अन्तिम भाग से जान पड़ता है कि ग्रन्थकर्ता का पूरा नाम कपूर-चंद था तथा यह दिल्ली के बाघी और शाहजहाँ के समय में हुए है । निर्माण काल सवत् १००० वैशाख वदी है ।

No 100—हमीरदठ *Verse Substance*—country made paper Leaves—30 Size—13 x 7 inches Lines—12 on a page Extent—725 slokas. Appearance—new Complete Correct Character—Devanāgarī Place of deposit—Library of the Mahārāja of Banāras.

Hamīra Hatha.—History of Hammīra Sinha Chauhāna by Chandra Bexara of Patālī. He composed this book in Samvat 1902 (1841 A.D.) under the patronage of Mahārāja Narendra Sinha of Patālī.

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ सन्दर्भपर कृत हमीरदठ लिख्यते । देहरा ॥ गिरिवरधर अह गगवर धरन धरन धितु लाइ ॥ या हमीर दठ की कथा कटो सवहि सिह नाइ ॥ १ ॥ परसतम छुत्र मुख अचन अहिफन पर जिमि एव ॥ श्री नरेन्द्र मृगताप नृप ताव

लगि तय वष ५३ ॥ ५३ श्री नरेन्द्र मृगराज नृपति दिन प्रति दया निधान ॥ दीन जानं
कीनी कृपा मोर धाम मुगन ॥ ३ ॥ निकट बोलि 'दोना' द्रुक्रम यह हमोर हठ जैन ॥
छंद रंद् कारि रथ कया मुहायन तीन ॥ ४ ॥ महाराज के द्रुक्रम ते अदि विधि विष
सरि ॥ सो सेपर भाषा करो दूषन करहु न मिष ॥ ४ ॥

End—महागज के द्रुक्रम ते सिद्ध होत सय काज ॥ मयो यंय तिनको कृपा परि-
पूरन मुभ काज ॥ ३६८ ॥ कर नम रम अरु आतमा सयग फागुन माय ॥ कृपा पंद तिथि
सोच रथ कोहि दिन यंय प्रकास ॥ ३६९ ॥ राधायर के जगत में श्री नरेन्द्र मृगराज ॥ सेपर
निज प्रभु लोक में लीजो लपत न जाज ॥ ४०० ॥ मोहि भरोसा राधरो महाराज निरमोर ॥
करिय कृपा दिन दीन पे निरधि आपनो कोर ॥ ४०१ ॥ जोरि सवि भूज रहे मुरार स्र
समाज ॥ तोलो राज करो अवन श्री नरेन्द्र मृगराज ॥ ४०२ ॥ अय गट्टि छंद ॥ प्यनि श्री
मरुसकल लोक ले.वन अंशर विंगामयि मनोज मद्र भंजन पंजागायत विमल नेपर विरुंद
मुद्रापमेय दार दंड पल पंडन पर मठनी विहंडन विपद तम तुंड दंडना पंडित, भारोड प्रताप
तापचे हरन धरनागत मुपेस देसदेसाधिनाय मन सेवित मुरेस सामाज्य मुप दूरन पुनोत वेद-
पद्य प्रतीत राजनोत अवनोक्ति विनोत पर दुहि छोर रंदीजन विमोचनदि ॥ विविधि
शिरदावनी विराजमान मानभवावासं 'शोमप्रंश' के शिष्यन शिष्य विद्या सगुंमसक्तः पृ
कलानिधान सकल नरेन्द्र इंदामु वदनीय वरनारविंद पातुर्य विरोमधि सकल मुर सार्थत
मुप दायक नरनायक दिलोपदल दमन प्रतय कषपृष्ट स्वरूप नरभूष कर्मविह कुलनेतु
मीनकेत मन मोहन मुधर मधुर धरन उदार सतगुरु पदारविंदानुराग परिपुरित प्ररुप गुन-
याहक गरीय निराज महाराजे श्री राजगान महाराजाधिराजेश्वर श्री श्री श्री श्री श्री श्री
श्री महाराजे नरेन्द्रविष आद्याभिगामिन्द अदोषर कवि विरविता हमोरहठ कथानक
समाज ॥ भूभमन्तु सर्व जगता ॥ ४ ॥

Subject—बहुमान हमोर का दिल्ली के यादशाह से युद्ध ॥

Note.—कता कवि चन्द्रेश्वर हे जो महाराज नरेन्द्रसिंह पटियाला वाले के आश्रित थे ।
इन्होंने इस इतिहास को महाराज को आज्ञा से हंदोतहु बनाया । निरमोच काल संवत् १६०९
फागुन वडी ४ रविवार है ॥

No 101.—हरिमतिजिनास *Ferre Substance*—country-made paper.
Leaves—60 Size—12½ x 7 inches. Lines—12 on a page. Extent—1,775
lokas Appearance—new Complete Correct. Character—Devanāgarī.
Place of deposit—Library of the Mahārāja of Banāras.

Haribhakti Vāḍsa—A religious book dealing specially with devotion to
God by Chandra Śeṣhara of Patālā (1840 A.D.) (See No. 100)

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ श्री गुरु परम कमलेश्वरो नमः ॥ दोहा ॥ वृद्धि
सदन धारन वदन पंडित बलित विमल ॥ विघन हरन भगल करन विमल धाल विधु
भाल ॥ १ ॥ अहन अमल कोमल करत मज्ज मुकुति मरुंद ॥ श्री गुरु चरन सरोज पर वडो
आनंदवंद ॥ २ ॥ हाथे ॥ इहु कुद करपूर गौर विरसेष धान घन ॥ आदि शक्ति श्रुतित
विभूति विदित प्रकास तन ॥ मुडमल विपथाल भाल विधु बाल विराजत ॥ नयन अटित
आमन अग नय मिष हवि हाजत ॥ दिग वास दिव्य अंशर अमल वरद विरज भगल करन ॥
दुष हरन हरन सेष नरन सतत सिव गिरिजा चरन ॥ ३ ॥

End.—पुः वृजपाषो कवर इंद्र भजत के ताको मनमै ॥ करि समुना वन पान ॥
भगत महि वंदान ॥ हरि जन एग की छलि प्रेम सो के तन लाये ॥ तिनको अंगर

भाषा कवि सवे रसिक प्रिया विनु हीन ॥ बाढे रति मति यति बढे जाने सब तस रति ॥
स्वार्थ परमार्थ लहे रसिक प्रिया की प्रीति ॥ १९८ ॥ इति श्री मन्महाराज कुमार श्री इन्द्र-
जोत विरचिताया रसिकप्रियायां अनरस वर्नेन नाम षोडश प्रभावः संपूर्ण ॥ सुभमस्तु
श्री शम्भुत् ॥

Subject—रस काव्य ॥

Note—कर्ता प्रसिद्ध कवि केयवदास है । इन्होंने षोडशे के राजा मधुकरसाहि
गहरवार घघो के कनिष्ठ पुत्र इन्द्रजीतसिंह की आजा से इस ग्रन्थ को रचा । निर्माण
काल सन् १६४८ कार्तिक शुक्ल सप्तमी चन्द्रवार है ।

No 90—नखसिख Verse Substance—country made paper Leaves—
14 Size—6½×5 inches Lines—21 on a page. Extent—297 slokas. Appear-
ance—very old Complete Incorrect. Character—Devanāgarī Place of
deposit—Library of the Mahārāja of Banāras.

Nalharikha—Detailed description of the body of a heroine by the poet
Kāsha, who, according to Dr Grierson, was born in 1857 A.D.

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ कवि कान्ह कृत नख शिख लिख्यते ॥ क ॥ मुखक सयारी
दुष्ट दूषक सयारी पुष्ट पुष्क पहारी कोटि विष्म को रदा है ॥ लखेदार नाम पुजे काह मन
काम कोटि मूर को सो घोम भाल बदन को बदा है ॥ पडे बरदानो सेवे सारद भवानी देवे
मुक्ति मनमानी देवे पावन को कदा है ॥ सोहे मन मुकुट पर चंदन मुकुट पर सुड पर कज धरे ।
मुड पर चदा है १ ॥

End—दोषार्थः नख पद अंगुरी बढी लाल । पायजेव पिंडुरी तर साल ॥ जया कटि
किकिनी भनकार । नाभि शिखली रामायलि आद ॥ उदय हरल चहता भरे । ऊपर स्याम
कपुक्की करे । नख अंगुरी कर चार हपेरी । ककन चुरी भुजा मुम बेरी ॥ मार पीठ योजा
मतलरी । शिथुरु अधर दसनायलि मली ॥ रसना बानी हसन मुमेय । नख मुक्ता नासा मुभ
बेध ॥ गाल कपोल लसे मुम बरनी । कोप पलक धतरो बरनी ॥ डोरे लाल लसे अति काजर ।
पेनी डोढ नैन ह्यधि हाजर ॥ मूकुटी टेढी बेंदा बोल । भाल बदनी लटित अमोल ॥ कानभूल
कलिकायलि कान । सोसभूल माग मुकतान ॥ पाटी बेनीवार विराजे । अग मुवाफ बसन ह्यधि
हजे ॥ ७१ इति श्री काह कृत नख शिख समाप्त संपूर्ण अनारस मध्ये लिख्यते हयबद शास्त्रिनः ॥
(इसके आगे की पंक्ति दोर्मक था गई है और प्रत्येक पंक्ति की अन्तिम पंक्ति का भी यह हाल है)

Subject—नख शिख पर्यन्त प्रत्यग की योगा वर्णन ॥

Note—कवि कान्ह कृत । डाकुर शिखरसन के लेखानुसार ये कवि सन् १६०४ में जन्मे थे ॥

No 91—श्री हनुमत वाल चरित Verse Substance—country made paper
Leaves—33 Size—11×7 inches Lines—15 on a page. Extent—420 slokas
Appearance—old Complete Correct Character—Devanāgarī Place of
deposit—Library of the Mahārāja of Banāras

Sri Hanumata Vālacharitra—The story of Hanumāna's younger days
by the poet Brijā Lāla, who composed the book in Samvat 1876 (1819 A.D.)

Beginning—श्री गणेशायनमः श्रीहनुमते नमः ॥ अथ हनुमत वाल चरित लिख्यते ॥
दोहा ॥ अमल कमल प्रिय कर लखत ॥ दिव्याभरण विभाल ॥ अथ नख श्री मुशान धरन ॥

धनुस कवि वृजवान् ॥ १ ॥ जयति सानकीनाय प्रभु पदह पवन कुमार ॥ निन्को किरित
 कपाकर ॥ धावता यन्त्र अपार ॥ २ ॥ रामानुज पद पद कर ॥ मुन चरनन चिनुनाइ ॥ धनु
 मता जम कथा रवेहु ॥ हिथे ध्याए मुपवार ॥ ३ ॥
 सत्रा पट रिनु यमु मयी ॥ माह हटे शनिवार ॥ यान कथा वृजवान् रवि सादि मुकाय
 विचारि ॥ १६ ॥

End.—अथ कवि तिन काह नम यो ॥ नहिं हर हरि के दास ॥ भक्तमंद धानो लपन
 करत सकल उपहास ॥ १८ ॥ चैव कृष्ण कुत्र जेय मन सत्रा चरु प्रमान ॥ यान चरित पुरन
 भयो ॥ सो प्रताप हनुमान ॥ १९ ॥ दोलति नृपति चली जहां राग श्री महराज ॥ सिपिन
 स्वहस्त कुमार दूत मुनिवारज वृजवान् ॥ २० ॥ इति श्री मनसमचन्द्र प्रगैतर अगस्त मुनि
 सयादे श्रीमद्रामायण उत्तर कांड कथानामंत श्री हनुमत धान् चरित गृथेन शोभन मान
 कथोद तान्दय वृजवान् मट्ट कविवाच विरचिते मूर्ध तट साह्याध्याने जपोत्पातो उपदायि
 मुणीष निष्कृति पुष पंचमोऽध्यायः ॥ २१ ॥ सपुषे मुमे मूयात् ॥ श्री हनुमते नमः ॥ रामायनमः ॥

Subject—श्री हनुमान जी के चालपन के चरित रामायण उत्तर कांड से अनुवादित ॥

Note—कर्ता वृजवान् कवि है ॥ निर्माण काल इसका सत्र १८८६ माघ ६ शनिवार है ॥

No 92—साहित्यमुद्राकर *Verse. Substance*—country-made paper
Leaves—135 *Size*—10½ x 4½ inches. *Lanes*—7 on a page. *Extent*—1,480
lokas. *Appearance*—new. *Complete* *Incorrect*. *Character*—Devanāgarī.
Place of deposit—Library of the Mahārāja of Banāras.

Scholar *Su Shākara*—Hindi prosody and composition by the poet Saradīra
 of Lalitpur, who composed this book in Samvat 1902 (1845 A.D.) under the
 patronage of Mahārāja Isvari Prāsāda Nārāyaṇa Singha of Banāras.

Beginning—श्रीगणेशायनमः श्रीगुणे नमः श्री मुन पद रज नद के कर कर मुरन
 प्रभाय ॥ कला एक है अथ भुवि कुत्रि कुल मन विश्राम १ पवन चरे साहित को अधया पठि
 जय लेह ॥ तय सखी साहित को देवन के मन देह २ कवित समुद ॥ चंद्र चन्द्रमा के जेस
 सुधर विधन धरन गनपति जेस हर के ॥ वजन के हनुमत धल को न जाके चत दान को
 धरन ठेपिया भासकर के ॥ कवि सरदार चेत रामचन्द्रज के लख कति मे न तुजा उपमा को
 चोर नर के ॥ भयो येरोवन के चल से सपुत जेसो ईश्वरीप्रसाद उद्धतेर दान घर के ॥ १ ॥

End—अथ इक पद बोध सन ताके उपर दोह ॥ पुरन कौय सरदार कवि राम
 चनम तिथि जेह ॥ ॥ नगर ललित पुरवास है काशीपति के पास ॥ कौनो हरिजन नद कह
 हरिजन देत निवास ॥ ॥ इति श्री साहित्य मुद्राकर ॥

Subject—पिगल ॥

Note—अथकर्ता सरदार कवि ललितपुर निवासी है ॥ ये काशीराज महाराज ईश्वरी
 प्रसाद नारायणसिंह के आश्रित थे और उन्हींकी आज्ञा से इन्होंने यह ग्रन्थ बनाया ॥
 निर्माण काल सत्र १९०२ चैत सुदी ६ है ॥

No 93—रसमपन ग्रन्थ *Verse Substance*—country made paper *Leaves*
 —15 *Size*—7½ x 4½ inches. *Lanes*—15 on a page. *Extent*—180 *lokas*. *Ap*
pearance—old. *Complete*. *Incorrect*. *Character*—Devanāgarī. *Place of*
deposit—Library of the Mahārāja of Banāras.

Rasabhūsana Grantha—A description of the different kinds of heroes and heroines by Rāmanātha Upādhyāya.

Beginning—श्री राम जो सन ॥ श्री गणेशायनम ॥ प्रथम मनाउ गनपति कछ
जो सुप चाहु ॥ बडे सकल सुप सपति मिटि हे दाहु ॥ १ ॥ चरन तोरि चित सेरे सिख
ठकुरानि ॥ कठिन सरल सज हूँ गा पर मुँहि जानि ॥ २ ॥ करहु नीक सिवरानी सब विधि
सोधि ॥ रचेहु यथ तोरे बलसन प्रेम पयोधि ॥ ३ ॥

End—अथ ललित हान को उदाहरन यथा । लाणहु तखनि फुलेलया पिय रसमाति ।
पहिरया दाह गदनया भलि भलि माति १४४ अथ कुट्टमितहान को उदाहरन यथा । मि
लेह मोत अथ सुपमा गा दुप भांगि । जाति सेतु जोन्हेया परसत आमि १४५ अथ विहित
हाथ को उदाहरन यथा । मिलिगा मोत दुपरवै लोगवन साथ । होरि सखि नहि योली तिय
लचि माघ १४६ इति इति श्री वरवे रामनाथ कृत सपूर्ण शुभमस्तु रसभूषण ग्रन्थ स-
माप्त । श्री राम राम राम । वरवे रामनाथ कृत ॥

Subject—नायिका भेद ॥

Note—ग्रन्थकर्ता बान्पेयी रामनाथ है । इसमें कोई समय नहीं दिया है ॥

No 94.—रतन हजारा Verse. Substance—country made paper : Leaves
—91 Size—9½×6½ inches. Lines—13 on a page : Extent—1,007 sloka-
Appearance—ordinary Complete. Correct Character—Devanāgarī Place
of deposit—Library of the Maharaja of Banāras.

Ratana Hajara—A collection of one thousand couplets by Rasa Nidhi.
Nothing more is known about this poet. The manuscript is dated Samvat 1894
(1837 A.D.)

Beginning—श्रीगणेशायनम ॥ श्री सरस्वती देव्यैनमः ॥ दोहा ॥ लसल सरस सि
धुर बदन भालबली मणिस ॥ निघन हरेन मगल करन गरी तनय मनेस ॥ १ ॥ नमो प्रेम
परमार्थी ग्रह जाचत हो तोह ॥ नदलाल के सन से दे मिलाइ किन मोहि ॥ २ ॥ भमे
प्रेम निने कियो दिय लग चाह प्रकास ॥ रगरत बासी नाक गो नाक गोपकन पास ॥ ३ ॥
निशि दिन गुजत रहतमे विरद गरोबनिजाव ॥ हे निज मधुर मुतन की कमल नेन
मुहि लान ॥ ४ ॥ धरन मधुर सुदर अरय हरि सोहित निरधार ॥ रसनिघ सागर मघ लये
दोहा रतन हजार ॥ ५ ॥

End—अथम उधारन प्रभु कहू करतो जो न सम्हार ॥ हो तो मोसो पतित क्यों
या भयसागर पर ॥ ६०४ ॥ हेरात कहू खु दोन तन पाहि आवती लान ॥ प्रीतम मैं व
कहावतो टीनवद ब्रजराज ॥ ६०५ ॥ अदपि अरुनी हू की मैं हर भाति मुरारि ॥ प्रभु
करिनी करि बाणही हरि विधि लेहु मुधारि ॥ ६०६ ॥ कहे बनष मति कोन विधि तेरे गुन
विलार ॥ दोनवध प्रभु दोन को ले हरि विधि निलार ॥ ६०७ ॥ इतियी मदाराजविरान
पेरसनिघि कत रतन हजारा सपूर्ण ॥ श्रीरस्तु मगल ददात् ॥ कार्तिक शुक्र ३ मघत् १८८४ ॥
श्रीराम ॥ श्रीराम ॥

Subject—प्रेमरस के दोरे ॥

Note—ग्रन्थकर्ता मदाराज रसनिघि है । लिपि काल कार्तिक शुक्र ३ मघत् १८८४
है ॥

No. 95.—रामायन महाकाव्य Verse. Substance—country-made paper Leaves—109 Size—8½ x 6½ inches. Lines—20 on a page. Extent—3,000 slokas. Appearance—very old. Complete. Incorrect. Character—Devanāgarī. Place of deposit—Library of the Maharaja of Banāras.

Rāmdyana Mahānditaka—The story of Rāmachandra's life by Prāna Chanda Chauhāna, who composed this book in Samvat 1667 (1610 A.D.) when Śāha Salīm was the Emperor of Delhi. This Salīm cannot be of the Śāha family, being the younger son of Śara Śāha Śāra, for he was dead in the year 1554. Probably it refers to the Mogal Emperor Jahāngīra, who was called Prince Salīm before his accession in the year 1605. It is just possible that for some years after the accession Jahāngīra, might have been popularly known as Śāha Salīm. The manuscript is dated Samvat 1775 (1718 A.D.).

Beginning—ब्रह्मविष्णु परब्रह्मण्य । नमः गुह्य विष्णु गुह्यन । नमः तेन चतोर
लो राम लक्ष्मण । महायत्ने राणा । जतो मुषीवे । राघवे नाम । दानवी । प्रथम करी
ताही की सेवा । जेही गुह्य कह सज मानी देवा । गुह्य गनेय कोर जाने । इंद्र बादी मुर नाग
बषाने । शीघ्र भुत केनी शोधु मन्त्रो । गुह्य ठाणे रघु नन लीगही । घाली घेट मह काठी चठारा ।
कहउ मह कहउ पनेक्य हमार । कहउ येय कहउ येन कह करवा । ब्रह्मा कहउ ध्याम के घरना ।
शीघ्र भुत पिके काठी चठाना । तेही दिन ये जल लो बारा । अगम विर बाधो । रहे
योह नरनाह ये लल कीड़ा गनेय की । परी चोर्षित हन माह । । ।

कातीक मास पक्षी उनीयात तोय पुने सोम कर बारा । ताही दोन कया कीर
चनुमाना कह सनेम दीनीपती घाना समत सोरह स सन घाठा पुष्य प्रास पाव
मय नाठा जो साष्ट माता कह दाया बरने बाद पुरुष की माया जेह माया कह
मुनी जग मुता ब्रह्म रहे कमल के फुला नीरुष न सके माया के बाधा देव
कथन जल के पया बाद पुरुष बरने कीही भाति कह कुरु तहां दीवध न राती
नीरुगुन रूप रूप कहौ शीघ्र घाना चार वेद गुन जोरि बषाना तीने गुन जाने
सषारा धीरने दाले मंजन द्वारा अवन बिना सो अस बहू गुना मन म होर सु पहले
मुना देखे बत पे बाही न बापी अघकार चार के बापी तीही कर दहु कोकर बषाना
लोदी कर मर्मभेद नही जाना माया शोधु भो कोउ न बारा बकर पर शीघ्र होर द्वारा ।

शोरवे दनका बक मह मन्त्रु लागु न थार ।

घरनी सर्ग पाताल ती मही माया अगम बवार ।

End.

राम वरिष लो कहै बषाना	बाडे धर्म पाव दोरे हाना
अरु जो मुने बखन बोले लार्दे	यो लमपुर के नीरुठ न जाई
पे मा जानक येह बंगार	राम नाम धोन होरे न पारा
नाष्ट बाणमीक दुर्वासा	लोन्हहु राम नाम की जया
चरो धुम जाने सषारा	अंत कान कह राम बघारा
जेही नीति शूद्र घरही घाना	चारो वेद पठि ब्रह्म मुकाना
मुनीयो तथा शीघ्र स्यासी	जल घन ये ब्रह्म के बापी
उन सज मोली येह बत राष	राम नाम धोन चार न भाष
जो महीमा चारहु कह भारो	तेही करने कह सली दमारी
बादी कया येह चोरे पुराना	यो मे भाषा कीन्ह बषाना

No 108—सुजन विनोद Verse Substance—country made paper Leaves—40 Size— $9\frac{1}{2} \times 4$ inches Lines—10 on a page. Extent—1,125 slokas. Appearance—old Complete Incorrect. Character—Devanāgarī Place of deposit—Library of the Mahārāja of Banāras

Sujana Vinoda—A book on Hindi composition by the poet Deva Datta of Mainapuri (1620 A.D.) This manuscript is dated Samvat 1857 (1800 A.D.) There is another incomplete copy of this book in this library

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ श्री राधा हरि प्रेम वस सरस सिंगार उ-
दार ॥ हरितु धारहो भास गुण वृन्दा विपिन विहार ॥ १ ॥ श्री वृन्दा वन अस्तुति ॥ प्रेमी
उत्ति ॥ होखी वृज वृन्दावन मोक्षी मे वसति वृदा जमुना तरंग स्थामरंग अवलीनि की ॥ देव
वेरें सुदर सदन बन देवियत कुजन में मुनियतु गुजन अलीनिकी ॥ बंसीघट तट नट नागर न-
चतु मोमे रास के विलास मे मधुर धुनि धीनकी ॥ भरि रह मनक मनक तार ताना की तनक
पनक तामे मनक पुरोनि की ॥ २ ॥ अथ वृन्दावन समय गुण दंपती वर्णन ॥ दोहा ॥ द्वेद्वे
रितु लोच्यो समे दंपति लीनि स्रुप ॥ रस उत्पत्ति विलास अरु प्रकास मुरस अनूप ॥ ३ ॥

End—तन मन चोट पट कपट छूट घोलि सर से लगये हतने पै अघात हो ॥
घाकी अघ्याठ अपने न सपने हो धिर होत नही नम रहि धिरात हो ॥ कोथी किछि गेल
खेल छतिया छपार जकि विरह धोराने देव बोलत न यात हो ॥ प्यारे परजंक हू मे रास ले बसक
अज हमे अकुलात हो ॥ ४० ॥ मोतीसो आरती द्विज जानिके प्रभात दग डीले करि प्रीतम के
गात सु लफलफनि के ॥ उतारत सेज ते सपीनि सुप देत भाय नहीं बँनी लायो लपे लाज
मेरे लफनि की ॥ दासी देवता सी पग दंपति के दाधि चली दावे पग बसन ... लाल की खरन
सेव आवे दास देव रगमगी अंगजेब जगमगी मु लफनि की ॥ ४० ॥ इति श्री सुजनविनोद देव कवि-
कृते पट रितु विलास वर्णन नाम सप्तमे विलासः ॥ ० ॥ इति सुजन विनोद संपूर्ण पुन सवत्
१८५० मिति आश्वय सुदी ६ शुच वारसे लिखितं श्री दिमान दुर्जनसिंह गौर कतन हृदय
नदी सिधु नदी तटे परगने तहाहिर सरकार बरहि मूवा अरुबरबाद पार दुरयो पोथी लिपी
मनिकायिका तटे ॥

Subject—काव्य साहित्य ॥

Note—कवि देवदत्त रचित । लिपिकाल सवत् १८५० मिति आश्वय सुदी ६ शुच वार है ॥

No 109—केदारपंथप्रकाश Verse. Substance—country made paper Leaves—71 Size— $12\frac{1}{2} \times 7$ inches. Lines—12 on a page. Extent—2,725 slokas. Appearance—new Complete. Correct. Character—Devanāgarī. Place of deposit—Library of the Mahārāja of Banāras

Kedra pantha prakasa.—An account of the journey of Rājā Narendra Nātha Sinha of Patnā by the poet Dāsa. He wrote this book in Samvat 1910 (1853 A.D.)

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ अथ केदार पंथ प्रकाश लिख्यते ॥ दोहा ॥ गुर मन
पति पितु मात के पद यदी सु यात ॥ निनकी कृपा कटाह रवि तुरत हरत मय रात ॥ १ ॥
नर नारायन सुमर पुन द्वीपाइन मन लाय ॥ निनके मग पत परत भर पारहन ह्ये जाय ॥ २ ॥ सिंह
गुन गाहन मुनग नित नारायन मुद होत ॥ तिह नारद मुनि वद अथ जन भाय धारय पोत
॥ ३ ॥ तिह धानी पद द्वंद को वदत अथ दर अथ ॥ तिह कनहित दपाकर जन कुवलन
मुपदान ॥ ४ ॥ अथ कुवलन को मुपद घो अथ कमलन को नास ॥ खवे रघुवर दद लहु यो
पदे कवि दास ॥ ५ ॥

End—भोरटा ॥ निधी जु नृप नित्र राव वहे लयी मे खया मति ॥ तुम हृमवी
कविनाथ भूष करुण कविदास की ॥ ८८ ॥ पुन्यो वातक भाष पत्र नम पति थक मति ॥
पुन की कविदास कया किदार प्रकाश कर ॥ ८९ ॥ दान करहु कत कर विना टपंदा पुन
ते ॥ कया चमी रस प्रर नारायन मदघनी ॥ ९० ॥ शति श्री राजा विराज श्री नरेंद्रसिंह
केदार याचारा किदार पंच प्रकाशे पंच विदारे नाम पंचमा विदाम ॥ ९१ ॥ मुमम ॥

Subject—केदार याच पदेन ॥

Note—कला कवि दास है । ये मो पटियाला राज्यागत थे और महाराज नरेंद्र
सिंह ने केदार घट्टीनाथस की याच करने समय सेवा वर्य के भार्य का इत्तान्त लिखा
था तदनुसार इन्होंने इस ग्रन्थ में रुहे हन्दोपहृष्ट किया है । निर्माण काल लगत १९१०
कातिक सुदी १५ है ॥

No 110—दलसिंहानन्दप्रकाश *Form* : Substance—country made paper
Leaves—37 *Size*—12×7 inches. *Lines*—12 on a page. *Extent*—950 slokas
Appearance—new *Complete*. Generally correct *Character*—Devanāgarī.
Place of deposit—Library of the Maharaja of Banāras

Dala Singhānanda prākāśa—A collection of 727 couplets on different
subjects by the poet Dāsa (See No 111). It appears that the poet completed
this collection in Samvat 1890 (1833 A.D.) from the opening lines of this
book it appears that the poet's full name was Dala Singhā and his *nom-de-plume*
was Dāsa.

Beginning—हो मो गणेशायनम ॥ अथ दलसिंहानन्द प्रकाश ॥ सतसया लिखते ॥
कृत कविदास श्री दलसिंह ॥ भगवत्परा ॥ दोहा ॥ विमल गुह्य गोविन्द सिंह विमल मुचन
को सिद्धि ॥ का यद यदम मुप्रेम हे मुद्धि वृद्धि नर निद्धि ॥ १५ गुह्य गोविन्द सिंह वद वदम
करत सारदा ध्यान ॥ कर मुचन गणति भर्मे गाले लाले जान ॥ २ ॥ शति छयन गुह्य वद वदम
शे वदमा कीनी मेह ॥ वदम मुपद अनुसरन कर बेटी करवर मेह ॥ ३ ॥

End—अथ यय जनम वानन ॥ दो० ॥ सवत नम निध यपुरविष्ट वासर मुच विचार ॥
साठ मुदी दुतिया भले भयो यय अवतार ॥ ८५ ॥ गुह्य पात्र से सोस मुम हृष विराचन
नित्य ॥ पुर पटिप्राप्ते मो रची यह रचना वरनिष्ठ ॥ ८६ ॥ गीता पकरा मे कहे मन पच वम
कर नीत ॥ कविध्वज गोविन्दसिंह वद वदमा यसे मम पीत ॥ ९० ॥ शति श्री दलसिंहानन्द
प्रकाश सत्य से सताह दोहरा समाप्त ॥

Subject—अनेक विषयों के ७२० दोहों का संग्रह ॥

Note—ययकर्ता कवि दास हैं । आरम्भ में इसके लिखा है कि “कृत कविदास श्री
दलसिंह” इसके यह अनुमान होता है कि इनका पुरा नाम दलसिंह और उपनाम कवि
दास था । १८९० आषाढ सुदी २ बुधवार इस ग्रन्थ का काम समय लिखा है ॥

No 111—सुंदरदास सिंगार *Form*. Substance—country made paper
Leaves—57 *Size*—9½×6½ inches. *Lines*—16 on a page. *Extent*—900 slokas.
Appearance—ordinary *Complete*. Correct. *Character*—Devanāgarī. *Place*
of deposit—Library of the Maharaja of Banāras.

Sundara Sata Singdā.—Praises of Krishna Chandra by one Sundara who composed this book in Samvat 1869 (1812 A.D.)

Beginning—श्री कृष्णायनम ॥ अथ सुन्दरसतसिगार लिख्यते ॥ चोपाद ॥ हरि वन वन मोरही पधारें ॥ भूपन वसन अग अग सुधारें ॥ मन मोहन जन जन मन मोहन ॥ काम लजावन नख सिख सोहन ॥ पोतावर कर मुरली धारें ॥ रुम रुम बरपत हैं सुधारें ॥ मधुर मधुर अति बोलत वतिया ॥ सोहैं मन मोहैं सुम दतिया ॥ पोहैं मानो मुक्त मोती ॥ रीक रीक गहै लखिलखि जातो ॥ श्री वृष्णमानु लली को गली जो ॥ सुंदर हिली मिली आवै चली सो ॥ अवही तो आवके दे गय वोहनी ॥ डारि आवै सन पर मोहनी ॥

End—कवित ॥ माये उमग से दीप पै पतग सभूलें मतग सी मानो पतग सी मुक मुक भुकारें हैं । बाकी पोत अग की धागे पोत रग के भूपन पोत अग अग सोही भी सोहाई हैं ॥ कपत अग अग गहै तपत अग अग हैं भरो छप रग मनोचग सी उडाई है । सरसत अग अग बरपत रग रग दग दग तन मन सो सुंदर बलि नाई है ॥ १०२ ॥ चोपाई ॥ सयत अठारह से वनहतर ॥ बेसाय मास मलि मास पवितर ॥ शुक्र पच नौनी पतवार ॥ सुन्दर पोयो करो मुरारि ॥ इति श्री सुन्दरसतसिगार संपूर्णम् ॥ यद्यकर्ता को प्रार्थना ॥ दोहा ॥ मैं तो अपनी जान मैं कोहो शुद्ध ब्रजान ॥ पर लेख के लिखन को कटू नहीं परमान ॥ १ ॥ चोपाई ॥ पिगल छंद भेद नहि जानो ॥ काव्य यद्यमन मे नहि जानो ॥ केवल हरि रस हरि लस गायो ॥ हरि रसि कन के मन को भायो ॥ फिल दृष्टि यह न लखोगे ॥ जिय में हरि को आन लिखोगे ॥ मैं ताके बल हरि लस गाऊ ॥ चोरन सो अपराध हिमाऊ ॥ दोहा ॥ कियो हरि वन मुख कारने सुंदर पत सिगार ॥ सत जनन जन सेती मांगो मति प्रकार ॥ १ ॥

Subject—श्री कृष्णचन्द्र के विषय में किसी भक्त की भावना ॥

Note—यद्यकर्ता कोई सुन्दर नामक भक्त हैं, जिन्होंने इस यद्य को सुवत १८६६ में बनाया ॥

No 112—जगतमोहन Verse Substance—country made paper Leaves—400 Size—10½ x 7 inches Lines—17 on a page Extent—2900 slohas. Appearance—new Incomplete. Correct Character—Devanāgarī Place of deposit—Library of the Mahārāja of Banāras

Jagāṭa Mohana—A book dealing with several branches of Hindi composition and such other subjects as Vedānta Nyāya astrology medicine etc The name of the author is Raghunātha Bandiyā to whom some villages were given by Rājā Balaśānta Singha (alias Balasanta Singh) of Banāras. He composed this book in Samvat 1807 (1750 A.D.) There are several blank pages in this manuscript. Probably some portions of it have not been copied out.

Beginning—श्री गणेशायनम ॥ मुफल होति मन कामना मिटत विघन के पुद । मुख सखत बरसत हरष सुमिरत लाल मुकुद ॥ १ ॥ दोहा ॥ ब्रह्मा को सुत मानसिक गौतम परम प्रसिद्धि । ताके कुल कीटू मिशिर प्रगट भयो तप निद्धि ॥ १ ॥ वेद कठ चारो करे अष्टादशो पुरान । उपनिषदे अरु साख सत्र श्री सत्र कला निधान ॥ २ ॥ प्रबोध चंद्रोदय करे नाटक परम अनूप । आमे दरसनु हे सदा ब्रह्मज्ञान को रूप ॥ ३ ॥ [आगे काशिराज की वशावली गौतम मुनि से महाराज परिषदसिंह तक । फिर निर्माण काल] दोहा ॥ अष्टारह से मुनि अधिक सयत अति अमितम । माघ शुक्र श्री पंचमी तिथि मिति सत्र मुख घाम ॥ ४ ॥ यद्य जगत मोहन भयो ता दिन सख मुखपस । नवरस भय सत्र जगत में अपना कियो प्रकास ॥ ५ ॥

Text—बेदार् ॥ लिखो सु नृप निज हाथ वहे लषी मे जया मति ॥ गुम हृमयो
कथिनाथ भुज यरुन कथिदास की ॥ २८ ॥ पुन्यो वाताक माधु पयम् नाम समि अक मति ॥
पुन की कथिदास वया किदार प्रकाश कर ॥ २९ ॥ पान फरदु कत फूर बिना ठणपर पुय
ते ॥ कथा अमी रस मूर नाथामन सुवधनी ॥ ३० ॥ इति श्री राजा विराज की नरेंद्रसिंह
बेदार याचारा किदार पय प्रकाशे पय विदासो नाम पंचम विस्तराम ॥ ३१ ॥ शुभम् ॥

Subject—बेदार याच पद्येन ॥

Note—कवि कथि दास हे । ये भी पटियाला सम्पादित थे बेर महाराज नरेंद्र
सिंह ने बेदार घटोनापण की याच करते समय जेसा पद्य के मार्ग का प्रस्ताव निम्न
था तदनुसार इन्होंने यह पद्य में उल्लेख किया है । निर्माण काल श्रुता १८१०
कार्तिक शुद्ध १५ है ॥

No 110—दलसिंहानन्दप्रकाश Verse Substance—country made paper
Leaves—37 Size—12x7 inches. Lines—12 on a page. Extent—250 Slokas
Appearance—now Complete Generally correct Character—Devanāgarī
Place of deposit—Library of the Mahārāja of Benārās

Dala S nghdnanda prakasa.—A collection of 727 couplets on different
subjects by the poet Dāsa [See No. 111] It appears that the poet completed
this collection in Samvat 1890 (1833 A.D.) From the opening lines of this
book it appears that the poet's full name was Dala Singha and his *nom-de-plume*
was Dāsa.

Beginning—दे श्री गणेशायनम ॥ अथ दलसिंहानन्द प्रकाश ॥ यतस्या लिख्यते ।
कृत कथिदास श्री दलसिंह ॥ मंगलाचरण ॥ दोहा ॥ सिमर गुरु गाविद सिध सिगर मुवन
की सिद्धि ॥ का पद पदम मुप्रेम हे सुद्धि वृद्धि नव निद्धि ॥ १ ॥ गुन गाविद सिध पद पदम
करा सारदा ध्यान ॥ कर मुवन रागति मले याते लेखे ज्ञान ॥ २ ॥ अति ध्यान गुन पद पदम
से पदमा कीज निह ॥ पदम मुपद अनुकरण कर घेठी करार मेह ॥ ३ ॥

End—अथ अथ जनम वरनम ॥ दोहा ॥ यतस नम निध वपुरविधु वासर सुध विचार ॥
वाड मुदी दुतिया मले मये अथ अत्रतार ॥ २२ ॥ गुरु पान से खीर भुम हृद विमान
नित्य ॥ पुर पटियाले मे रवी ग्रह रचना अरिम्भ ॥ २३ ॥ भोता वक्रता के कदा मन पच कम
कर नीत ॥ अविध्यन गाविदसिध पद सदा वसे मन पीत ॥ २४ ॥ इति श्री दलसिंहानन्द
प्रकाश इत्ये दे सत्ताह दोहरा समाप्त ॥

Subject—अनेक विषयों में २२० दोहों का संग्रह ॥

Note—अथर्कता कवि दास हे । आरम्भ में इससे लिखा है कि 'कृत कथिदास श्री
दलसिंह' इससे यह अनुमान होता है कि इनका भूषा नाम दलसिंह बेर उपनाम कथि
दास था । १८२० आषाढ शुद्ध २ सुध वार इस पद्य का अन्त समाप्त लिखा है ।

No 111—सुदरसन सिंगार Verse Substance—country made paper
Leaves—57 Size—9½x6½ inches. Lines—16 on a page. Extent—900 Slokas
Appearance—ordinary Complete Correct Character—Devanāgarī Place
of deposit—Library of the Mahārāja of Benārās

Sundara Sata Sūndara.—Praises of Krishna Chandra by one Sundara who composed this book in Samvat 1869 (1812 A D)

Beginning—श्री कृष्णायनम ॥ अथ सुन्दरसतसिगार लिख्यते ॥ चोपाई ॥ हरि बन बन मोरही पधारे ॥ भूषन घसन अग अग मुधारे ॥ मन मोहन बन बन मन मोहन ॥ काम लजावन नख सिख सोहन ॥ पीतावर कर मुरली धारे ॥ रुम रुम बरपात है मुधारे ॥ मधुर मधुर अति बोलत वतियां ॥ सोहे मन मोहे मुम दतियां ॥ पोहे मानो मुक्त मोती ॥ रीम रीम गहे लखि लखि जातो ॥ श्री वृष्मानु लली की गली जो ॥ सुंदर दिली मिली भाये चली सो ॥ अयही तो आगे दे गय बोहनी ॥ डारंगे आगे सज पर मोहनी ॥

End.—कवित ॥ भावे उमग से दीप पे पतग सकूलें भतग सी माने पतग सी मुक मुक मुकहै है ॥ बाकी पोत अग की बागे पीत रग के भूषन पीत अग अग सोही को सोहाई है ॥ कपल अग अग गहे तपत अग अग है भरो रूप रग मनोचग सी उडाई है ॥ सरसत अग अग बरपात रग रग दग दग रान मन सो सुंदर बलि जाई है ॥ १०२ ॥ चोपाई ॥ सवत अठारह से घनहतर ॥ वैराख मास मलि मास पवित्र ॥ शुक्र पच नौमी रतवार ॥ सुन्दर पोयी करो मुरारि ॥ इति श्री सुन्दरसतसिगार संपूर्णम् ॥ यथार्त्ता की प्रार्थना ॥ दोहा ॥ मैं तो अपनी जान में कीन्हे शुद्ध ब्रह्मान ॥ पर लेपन के लिपन को कछु नहीं परमान ॥ १ ॥ चोपाई ॥ पिगल हृद भेद नहि जानो ॥ काव्य यथ मन मे नहि जानो ॥ केवल हरि रस हरि जस मायो ॥ हरि रसि कन के मन की भायो ॥ पिगल दृष्टि ते यह न लखोगे ॥ जिय में हरि को जान लिखोगे ॥ मैं ताके बल हरि जस गाक ॥ भौरन सो अपराध द्विमात्र ॥ दोहा ॥ कियो हरि जन मुख कारने सुंदर सत सिगार ॥ सत जनन जन सेतो मणो भक्ति प्रकार ॥ १ ॥

Subject—श्री कृष्णचन्द्र के विषय में कियो भक्त की भावना ॥

Note.—यथार्त्ता कोई सुन्दर नामक भक्त है, जिन्होंने इस ग्रन्थ को सवत १८६९ में बनाया ॥

No 112—जगतमोहन Verse Substance—country made paper Leaves—400 Size—10½ x 7 inches Lines—17 on a page Extent—9,900 Slokas Appearance—new Incomplete Correct. Character—Devanāgarī Place of deposit—Library of the Mahārāja of Banāras

Jagata Mohana—A book dealing with several branches of Hindi composition and such other subjects as Vedānta Nyāya astrology, medicine, etc The name of the author is Raghunātha Bandjāna to whom some villages were given by Rājā Bānanda Singh (alias Balavanta Singh) of Banāras He composed this book in Samvat 1807 (1750 A D) There are several blank pages in this manuscript Probably some portions of it have not been copied out

Beginning—श्री गणेशायनम ॥ मुफल होति मन कामना मिटत विघन के पुद ॥ गुण ससत बरसत हरष मुमिरत लाल मुकुद ॥ १ ॥ दोहा ॥ ब्रह्मा को सुत मानसिक गीतम परम प्रसिद्धि ॥ ताके कुल कोटि निसिर प्रगट भयो तप निद्धि ॥ १ ॥ वेद कठ चारो करे अष्टादशो पुरान ॥ दर्शनपटो अह साक्ष सब ओ सब कला निवान ॥ २ ॥ प्रबोध चद्रोदय करे नाटक परम अनूप ॥ धामे दरसन है सदा ब्रह्मधान को रूप ॥ ३ ॥ [आगे काशिराज की वशावली गीतम मुनि से महाराज वरिषडसिंह तक ॥ फिर निर्माण काल] दोहा ॥ अष्टारह से मुनि अधिक सवत अति अभिराम ॥ माघ शुक्र श्री पंचमी तिथि मिति सब मुख धाम ॥ ४ ॥ ग्रन्थ जगत मोहन भयो ता दिन सब मुखरास ॥ नवरस मय सब धाता में अपनी कियो प्रकास ॥ ५ ॥

End—अथ मूर्छना ॥ जहां दीन आरोह सो जहा दीन अवरोह । स्वर को मुनिगन मूर्छना तास कहत करि डोह ॥ १९० ॥ ठरथ को मुर सार जो सो कहिये आरोह । अथ को स्वर आवे जहां राह कहिये अवरोह ॥ १९० ॥ यामाजित हे मूर्छना तिन को सखा साग तिन के मुनिये नाम अथ यज स्वर भग विमात ॥ १९१ ॥ प्रथम मूर्छना यज्ञ की ताके मद्रा नाम । हे निषाट की दूसरी सो रजनी अभिराम ॥ १९२ ॥ धेयतादि की सायता हे तिमरी गुप्त रास । मुद्र पङ्क हे मूर्छना चेथी पंचम पास ॥ १९३ ॥ मन्मथ हे पांवर मध्यम स्वर के पास । अस्याक्रीत छट्टे स्वर गंधार के पास ॥ १९४ ॥ रिषभादि स्वर को भई षण्ठ मूर्छना भेन । नाम लक्ष्म कहत हे अंसि भुल दाण्ड तोन ॥ १९५ ॥ (यम मर्दी शृष्ट का अंत हे आगे कुछ नहीं लिखा हे यादा पन्ना १ छूटा हे इति मिति कुछ नहीं हे) ॥

Subject—इसमें अनेक विषय हे, वेदान्त, म्याय, सामुद्रिक, ज्योतिष, वैदक, केरक, फिगल, विचक्षाप्य, अनेकार, नायिका, संगीत आदि ॥

Note—इसके ग्रन्थकर्ता काशी निवासी पंडीतन कवि रघुनाथ हे । ये महाराज काशीनरेश सरिपंडिसिंह जी के आश्रित थे । इन्होंने इनके कई ग्राम दिए थे । इस ग्रन्थ का निर्माणकाल संवत् १८०० माघ शुक्ल १ हे ॥

No 113—रघुनाथ Verse. Substance—country-made paper. Leaves—56. Size— $10\frac{1}{2} \times 6\frac{1}{2}$ inches. Lines—13 on a page. Extent—444 slokas. Appearance—new. Incomplete. Correct. Character—Devanāgarī. Place of deposit—Library of the Mahārāja of Banāras.

Rasa Mella.—The detailed description of heroes and heroines by the poet Lāla of Banāras who flourished in the time of Rājā Chetā Singha (1770-1781) of Banāras. He composed this book in Samvat 1833 (1776 A.D.)

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ दोहा ॥ गौरी गनरति वंदि के को सकर को ध्यान ॥ भाग कविता करत हो दोले ग्रन्थ यनाथ ॥ १ ॥ जाके सके मुने सने लगत सहे सय कोद । कवि कोविद मोदित रहे भुषति को जगु दोद ॥ २ ॥ कवित । ध्याइ गनपदने सदांर यक रदने सुपुत्र के सने देखैय यहु धन के । सकर भुषन विभूषन मे षण्ठ ऐसे भुषन भुषन मे रवेया जन जन के । कहे कविलाल कलाधर भाल भलकत लखिलाल प्यारे कुलि गन के । कवितार जुगुति के मुमति के प्रकाश हे नाचन कुमति के विनाचन विषन के ॥ ३ ॥

(पृष्ठ ६) शिष्ट पक्ष दिने प्याग के गंग जमुन के कुल । रामनगर मे मोद मरि कब्यो ग्रन्थ रचमल ॥ ३३ ॥ सयत ठारह से दरष भय कोति तीतीष ॥ मास फालु तिथि पंचमी भयो ग्रन्थ रच हेस ॥ ३४ ॥

End.—अथ अचमा लहन ॥ दिथ अनुरायी रहतु हे आपु न रागी नेकु । अचमा सासो कहतु ? मानु करे करि टेक ॥ १२१ ॥ नदक हो चकि साति हे जाके हे यह सोधु । ठन गन ठानति पुरुष से अनगन तनगन रोनु ॥ १२२ ॥

(इति नहीं ? । आगे ३ पृष्ठे छटे हे) ॥

Subject.—नायिका भेद ॥

Note.—यह ग्रन्थ कवि लाल रचित हे जो काशीनरेश महाराज चेतसिंह के आश्रित थे । इसका निर्माणकाल संवत् १८३३ फाल्गुण को पंचमी हे ।

No 114.—कवित महाराजा महीनारायण बहादुर तथा और काशी राजा के
 Verse Substance—country made paper Leaves—33 Size— $10\frac{1}{2} \times 6\frac{3}{4}$ inches
 Lines—13 on a page Extent—290 ślokas Appearance—new Incomplete
 Correct Character—Devanāgarī Place of deposit—Library of the Mahārāja
 of Banāras.

Kavita Mahārāja Mahīpa Nārāyaṇa Bahadurā fatha aur Kāshīraj
 1c—Praises of the Rājās of Banāras and of Rājā Cheta Sūha specially, by the
 poet Lāla of Banāras (1775 A.D.) The book does not appear to be complete

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ राम ॥ कवित राजा महीप नारायण बहादुर के ॥
 छप्पन छप्पन बिदित महिपालन के जाहिर जहान प्रतिपालक दुनो के है । ज्यार भुज
 ज्यार तज्यार पचत जासे सब्यार मिटावे प्याल गेताम धनो के है ॥ कहे कविलाल दान
 भोज बनी जितम से जयूदीप ऊपर करन करनो के है । नाती यद्विडसिंह भूपति जसो
 के भो महीपति मही के नौको टीको राजसी के है ॥ १ ॥

End—जब छुछ छुछुरेत छुरि से छुरे रहे जाल ही चपेटे ॥ करेटे दल बाट के ।
 जेहत अडा मद्र हल भरत नद पगतर पव्ये चुर करत सपाह के ॥ कहे कविलाल बाधि
 कडा कतारे माने मेघ मघशर नम तारे ले उद्याह के । हलत घतरे होत नगर हलारे
 जज चलत दतारे वेतसीध नरनाह के ।

Subject—काशी नरेश के पुर्जन राजाओं की प्रशंसा ॥

Note—ग्रन्थकर्ता लाल कवि हैं । काल इसमें कोई नहीं है न शति श्री ही है । इसी
 से ग्रन्थ के पूर्ण होने में संदेह है ।

No 115.—रामायण Verse Substance—country made paper Leaves—
 570 Size— $12\frac{3}{4} \times 6\frac{3}{4}$ inches Lines—11 on a page Extent—13 448 ślokas
 Appearance—new Complete Generally correct Character—Devanāgarī
 Place of deposit—Library of the Mahārāja of Banāras

Rāmāyana—The story of Rama Chandra's life by Mahārāja Visvanātha
 Singha of Rewāh (1840) The manuscript is dated Samvat 1880 (1832 A.D.)

Beginning—श्री गणेशायनमः । श्री मते रामानुजाय नमः ॥ श्री सरस्वत्यै नमः ॥
 अथ लिख्यते घालकाडः ॥ श्लोकः ॥ तत्त्व वेदातशास्त्रम्भूतिनिगममहत्सदितानाटकाना यमत्वं
 ताविनीनामुरगपतिमते यन्पुष्टतृप्तजातः ॥ पैतासीय च तन्त्र कथयति निगम काव्य रामा-
 यणाना । सादित्याना रहस्य विमलप्रतिमुदे विरचनाग्रप्रथे ॥ १ ॥ सोरठा ॥ परहु ते पर
 प्रभु दानि ॥ प्रियादास पद पदुम कह ॥ कार प्रनाम उर आनि ॥ कहे वरित पर राम के ॥
 बदे हित हरिष ॥ रसिक सिरामनि रास रस ॥ करलटि लामु प्रसस ॥ मगन मोर मग मोद
 मे ॥ १ ॥ सोपाई ॥ श्री हरिष कुनोदधि नायो । सकल तापहर राम मुदायो ॥

End—दोहा ॥ जेति जेति श्री हरि गुरु प्रियादास रस गाथ । रामाय निनको
 कृष कह भूष प्रिमुनाथ ॥ जेति जेति धानी जयति आनारण करतार । परम परा गुर की
 नयति यनन जेहि मुख सार ॥ सोरठा ॥ ये ये सिय रघुनाथ । वषहु आप मेरे हिये ॥
 गहो सान विमुनाथ । देहु नाथ निग प्रेम पर ॥ १०४ ॥ अथ कमलजघ द्रपद ॥ विस्वनाथ
 कर नाथ राम बेहि हर हरर हर । प्यार मार सिर मोर धीर बर कर भर पर पर । बार बार
 हर भार बार कर नर हर हर ॥ धीर धीर उर धार धीर हर हर पर हर कर ॥ सो रच्यो

रहे रस रसो रस रस्यो रहे रक्तार वर ॥ हूँ रहिया रहे रस्यो रसो रस्यो रसि रसि मुर नर ॥ * ॥
 इति श्री महाराज कुमार श्री धानू साहेब विद्यानाथसिंह देव कृत उत्तर कांड मपूर्ण ॥

Subject—श्री रामचन्द्र का इतिहास ॥

Note—महाराज विद्यानाथसिंह देव रीकाधिराज कृत । यह ग्रन्थ इन्होंने अपनी वान्यायस्या ही में लिखा है, जय राज्याधिकारी नहीं हुए थे । लिपि काल लफा दाढ़ से मिनता है और कहीं नहीं है । यह सन् १८६६ है ।

No 116—रामगुणोदय *Verses*. Substance—country made paper
 Leaves—76 Size— $9\frac{1}{2} \times 6\frac{1}{2}$ inches. Lines—30 on a page. Extent—about
 375 shlokas Appearance—old Complete Correct Character—Devanāgarī
 Place of deposit—Library of the Mahārāja of Banārās

Rāmguṇo day—An account of the horse sacrifice performed by Rāma Chandra. The poet, Dhani Rāma wrote this book in Samvat 1867 (1810 A D) at the request of Babu Devakinandana of Banārās whose old palatial buildings may still be seen in Banārās in Mohalla Rāmāpurī. Dr Grierson says that this poet was born in 1831 which date appears to be incorrect. If the year 1831 may be taken to be of the Vikrama Samvat it may be the correct date of the poet's birth

Beginning—श्री गणेशायनमः । कवित । साहि मुमिरत सहने हो सिद्धि पायन
 गाइयत आगम निगम मति सार है । बकर परम प्रिय परम विद्यान वर वदत मयद गति
 योग अपार है । कहै धनीराम जन मन प्रतिपान करे सरल समगल विनायक विहार है ।
 हेमुरी गनानन चरन चितु राखि है । कहत वर भापि राम चरित प्रचार है ॥ १ ॥

End—बोराठा । सीय संहित यहि भाति अरवमेध जय राम किय । दियो प्रसारि
 द्विति तीन लोक कीरति विमल ॥ १३ ॥ हृद तात मेसन पुढियो मष की कथा । भाषियो
 सनि सेष तोहि भई कथा ॥ सेष भाषिण को सुने सुष पाइयो । धय धय अनेक हो मुनि
 गाइयो ॥ १४ ॥ दोहा । जाग कया माया करण अति टिठरै मन पुरि । हमा करावन हेतु
 मम कयिन निदोरात भूरि ॥ १५ ॥ इति श्री राम गुणोदये यद्य समापन नामेकपट्टितमः सर्ग
 ॥ ६१ ॥ पुस्तकोप्य समाप्तिमगता धनीराम कविना स्वहस्तेन लिपिता । सचरी हृदः । अविध
 न्गन सिद्धि सम्मित चद सदा राख्यो । शुक श्री तायि रुद्र शुक मुखक स्यामल साग हो ॥
 रवती उड्डु मे प्रसन्न महा द्विजोग को ठाड़यो । वाफ तादिन यद्य पुनता विधेहि सो पाइयो ॥ १ ॥
 सन् १८६० जेष्ठ पक्षी ११ शुक्रवार रवती नक्षत्र ॥ ह ह ह ह ह ह ह ह ॥

Subject—श्री रामायमेध का वर्णन ॥

Note—कवि धनीराम है । ये धानू देवकीनन्दनसिंह के कावित थे ।
 निर्माण काल स० १८६० जेष्ठ कृष्ण ११ शुक्रवार है । यह पुस्तक यद्यकर्ता की हस्तलिपि
 मान्य पड़ती है ॥

No 117—सुषुम्ण *Verses*. Substance—country made paper. Leaves—51
 Size— 7×4 inches. Lines—6 on a page. Extent—300 shlokas. Ap-
 pearance—new Complete Correct Character—Devanāgarī. Place of
 deposit—Library of the Mahārāja of Banārās

Blāpa Bhāṣa — Moral lessons for kings by the poet Jankharī of Patāldā. He wrote this book in Samvat 1890 (1823 A D)

Beginning — उँ श्री गणेशायनम ॥ अथ भूपभूषण लिप्यते ॥ भुजग रुद्र ॥ सदा सचिदा नद्र रूप अचार ॥ मुघोषो वुघोषो समोषो अचार ॥ अजे आदि अरु अघो ऊध गामो ॥ कषो केदरो जे अहल नमामो ॥ १ ॥

End — पृथ्वीपाल के देत ये यथ कोने । मर्यो वा समे विक्रमा साल चोने । नभ निद्रु सिद्धी घरा को धरोजे । मुद्रो हाड को तोन को छान लोवे ॥ १६० ॥ इति श्री लेकेदर विरचिते भूपभूषणे नोति यथे नयम रतन समाप्त । शुभमस्तु सर्वजगताम ॥

Subject — राजनीति ॥

Note — यह कर्ता लेकेदर कवि है । ये पटियाले के राजा पृथ्वीपालसिंह के आश्रित जान पड़ते हैं । इस ग्रन्थ के निर्माण का समय १८२० आषाढ शुक्ल ३ है ।

No 118 — विनेदचन्द्रिका *Verse Substance* — country made paper Leaves—9 Size—8½×4½ inches. Lines—15 on a page Extent—300 slokas Appearance—old. Complete Generally correct. Character—Devanāgarī Place of deposit—Library of the Mahārāja of Banāras.

Vinoda Chandrikā — The detailed description of heroes and heroines by Kavindra Udaya Nātha (1720) son of Kālī Dās Trivedī. The full name of this book is *Rāj-vinoda rasa chandrikā*. The manuscript is dated Samvat 1860 (1803 A D)

Beginning — श्री गणेशायनम ॥ विनेद चन्द्रिका लिप्यते ॥ तपोव्र तत्प के सत्तागुन के सत्त्व के ममत्त्व महादेव पारपती पर किति को । बुद्धि को विद्यान के प्रधान गीरवानन की जोन कैधो विघन विनाखीनी विमति को ॥ सदन यलित मुडा दड से मिश्रित कैधो कामना प्रयाग को प्रयाग उष अति को । सदन कविद इद्रु कल्प से विमल महा सिद्धिन के सदन रदन गनपति को ॥ १ ॥ योना पुस्तक धारिनी इस चारिनी नाम । यानी वाक सर स्वती देहु बुद्धि अभिराम ॥ २ ॥ ताते उपजे यथ यह सले चहुँ दिशि बाए ॥ रति विनेद रस चन्द्रिका मुनि रोमे सहाह ॥ ३ ॥

End — आगत पतिका ॥ दोहा ॥ पिय आवे परदेस ते हरचित हैत को बाल । आ गत पतिका कहत है ताको मुमति रसाल ॥ १०१ ॥ आवो विदेस ते नाह नजेलो को आनउ कोड घरो मुघरी है । लाज लिये गुर लोगनि की गृह कान को आबु जरी नरुरी है ॥ १०२ ॥ बुझो विरहानल की ताय केल बकल हूँ अरु भरी है । बेसि दषामिनि की फुरसो जिनि दोगरे के परे होत हरी है ॥ १०३ ॥ अग्रध ॥ आवे परदेस ते सलोने स्थान मुनो बाम आगि मिमृ गई लपे सेसे नठे हाल की । विरजन रग भयो गरे गुर भग भयो पुलकित अग भयो मूलो गति काल की । मनत कविद येद स्वैद जल मोचे द्रग कपत अघर मले दसा सौत जान की । चीर से सरोर कषो घूघट से मुख देखी उपरि उपरि जात लगनि गोपान की ॥ १०४ ॥ इति श्री रसिक रायमनो विनादार्थ कविद उदयनाथ वर्निताया विनेद चन्द्रिकाया कुलपूष परवपूष वर्नन नाम तृतीय प्रकाश ॥ ३ ॥ समाप्त भूयात । श्री १८६० मिति कार्तिक शुद्ध २ चन्द्रवासे लिखित ईश्वरोपपाद गौड की ॥

Subject — नायिका भेद ॥

Note — यह कर्ता कविद उदयनाथ है जो १८०० के लगभग हुए । इस पुस्तक का निषिक्काल समय १८६० है ॥

No 118—पञ्चाङ्ग दर्शन Prose Substance—Kashmir made paper Leaves—87 Size— $11\frac{1}{2} \times 6\frac{1}{2}$ inches Lines—15 on a page Extent—975 Slokas Appearance—new Complete Correct Character—Devanāgarī Place of deposit—Library of the Mahārāja of Banārās

Panchāṅga Darśana.—The mode of preparing Hindu almanacs by Yadunātha Śukla who wrote it in Samvat 1857 (1800 A.D.) The manuscript is dated Samvat 1887 (1830 A.D.)

Beginning—श्री गणेशायनमः ॥ नमः सरस्वत्यै ॥ अथ पञ्चाङ्ग दर्शन यथो लिख्यते ॥
 दोहा ॥ सिद्धि समयस कर्म को होय विदित सब माह । ताते तादि विचारियत शस्त्र बुद्धि
 के होह ॥ १ ॥ नाम रूप रे कथ मनु युग सप्तसर मास । पञ्चाङ्ग तायि नष्टा पुति करण
 लग्न हो रास ॥ २ ॥ कर्षादिक नित एक से तिन को नित न दिवार । वार्षादिक नित
 भ्रमत हे ताते तामु प्रचार ॥ ३ ॥

End—गुरु शुक्र सूर्य तीसरे चौथे शनि मंगल छठे इह योग लिया गया हे हो
 राजा सन को युद्ध में फलदाय ॥

स्वाती भरणी श्रवेण धनिष्ठा ज्येष्ठ अश्लेषा तीर्था उत्तरा रेवती	मूल ज्येष्ठा आर्द्रा अभिषिक्त	तीर्था पुष्य अश्लेषा पुष्य मघा मृगशिरा अथवा कृतिका चित्रा धनिष्ठा
शनि रवि चन्द्र बुध	बुध	शुक्र भौम
प्रतिपत् तीज पक्षमी चक्रादशी द्वादशी	चतुर्थी पञ्चमी द्वितीया	द्वादशी चतुर्थी चोग चतुर्दशी
अकून गणेश	कुलाकुल	कुल मकरस
संगण स युद्ध की इच्छा करे तो विनय होय	गण इव गण में युद्ध करे तो सधि होय	गण में युद्ध करे तो स्थिर रहे

गिरि शर वसु शशि शर मरु मधु यदि रवि बुध वार । दर्शन यह पञ्चाङ्ग को लियो नयो अथ
 तार ॥ १ ॥ धान वषट् नारायण वषट् नान नहो अपमान । कोने लोजे धरि हिये सन्तन सप्त
 मुत्तान ॥ २ ॥ इति श्री शुक्र मयुरानाथ मुल शुक्र यदुनाथ विरचित पञ्चाङ्ग दर्शन समाप्त
 शुभ भूयात् ॥ सप्त १८०० श्रावण शुक्र पूर्ण पञ्चदशी दिन बुधवार सरे सप्तमं ॥ लिखित
 मरुताउरस्य सविन्स कावमोरो रामनगर विषे ॥ शुभ ॥

Subject—योगतिथि ॥

Note—यद्यर्था यदुनाथ शुक्र हे । इहोने सप्त १८०० में इस ग्रन्थ को बनाया ।
 रसता निषिक्तान १८८० हे ॥

No 120—स्वरोदय Prose Substance—country made paper Leaves—84 Size— $10 \times 6\frac{1}{2}$ inches Lines—17 on a page Extent—about 850 Slokas Appearance—old Incomplete Incorrect Character—Devanāgarī Place of deposit—Library of the Mahārāja of Banārās

Stravodaya—The decision about the most auspicious moment for engaging in a battle by the breaths taken at that time. It is a common belief among Hindus that when they want to do a work they examine their breaths, i.e., they see whether the breath comes strongly from the right or the left nostril. The moment when the breath comes with a greater force from the right nostril is considered to be most auspicious. The name of the author is not given. In the opening Stanza the name Datta occurs which may be the nom de plume of the poet.

Beginning—श्रीगणेशाय नमः । कवित वदे सुर मुनि सर्व्वसु नाम नर कामद कृ
पानिधि सकल सिद्धि को हे घर ॥ अमर शरित को सरोज मुड अय सोहे चालो भुज धरै
पास अरुस अभैर ॥ सोदुर न मुड गज तुड बज एक डत लखोदर भने दत सकल कलप हर ॥
गनपति प्यारो को दुलारो निरिना जू को सो सुमिरत देत सुष सपतिनि को निरर ॥ १ ॥
धीधन हरन तुम हो सदा गनपति होहु सहाइ । विनती कर जोर करौ दीजे गन्ध बनाई ॥
घोना पुस्तक धारिनी हस चारिनी नाम । यानो वाक सरस्वती देहु सुधि अभिराम ॥
श्रीगणेशाय नमः ॥ दो० ॥ बानि जू को सुमिर के देखि सुरोदय पथ । धर्मवत राजानि के अर्थ
कीनिषत यथ ॥ १ ॥ मल्ल युद्ध भट यू पुनि जूय मुड के कान ॥ बादी प्रतिपाद्यो धियै
बरनत सम कविरान ॥ २ ॥ दुहु दिख गनक विचारि के कहत जिने के हेतू । पै निदान
यह जानिओ धर्मवत कर खेत ॥ ३ ॥

End—सनि श्री राहु रवि भोग है कासिन रुच परि नाइ । जोने आसन विष पव
विष ह्यादिक पाई ॥ १० ॥ जोन आसन विषे मे पौ वृष्टपति आइ । आनद सदा सोहाव
के करे सो राख बनाइ ॥ १८ ॥ सति श्री विष्णुवन विधि प्रजाय समाप्त ॥ ० ॥ (इसके आगे
एक और चरन बना है उसके आगे चार पाच सारे शब्दों के छूटे हैं । इसी से यह ग्रन्थ पूरा नहीं
जान पड़ता) ॥

Subject—राजाओं के लड़ाई पर चढ़ने के लिये स्वयं का विचार ।

Note—कर्तव्य के नाम का पता नहीं है । कदाचित्त दत्त हो । कोई समय भी नहीं
दिया है ॥

No 121—श्रीबाल्मीकि रामायण Verse Substance—Kashmir made paper
Leaves—615 Size—14 x 12½ inches Lines—24 on a page Extent—about
37 000 slokas Appearance—new Complete Generally correct Character—
Devanagari Place of deposit—Library of the Mahārāja of Bārān

Sri Valmiki Ramayana—Translation of Valmiki's Rāmāyana by Santosa
Sinha of Patiala He took ten years to finish the translation which was com-
pleted in Sunat 1890 (1833 A D)

Beginning—हैं श्रीगणेशाय नमः । अथ रामचन्द्राय नमः श्री मति बाल्मीकि रामायण
निष्पते ॥ बालकाड परारभते ॥ दोहा ॥ बानो वाक सुधरन मे विषद वरन समचरै । योन
दड महल करा यदो पद कर यद ॥ १ ॥ दोहा ॥ सबल अना अन मिलि सरु फल प्राप्य
अनेक ॥ व्यापक लड जगम ग्रहिन मरा मदी सिरे टेक ॥ २ ॥ कवितु । श्री गुरु नानक अनूप
ब्रह्मरूप भये अग्र अमर भये रामदास दो सहर । सति गुरु अरनन श्री हरि गुविंद च
घरीराय देत है अनद को विलद वर ॥ कसटि निरुद हरि कृष्ण मुकुंद जन तेग मुखादर
विमलद विमान सर । श्री गुविंदसिध लो अस्मि पदार्थिद पदे विदु दुद दार गुरु हाय
यद कर ॥ ३ ॥

Ind—दोहा ॥ नटन देवासिध को कवि सत्तोपसिध जानि । मनन करि गुन राम के चाहि वित मरं कल्याण ॥ ११ ॥ मुखल भला कुरोषे मरि के यन पुरि अभिराम ॥ राम कथा वरनन करी रामायन जिहि नाम ॥ १२ ॥ हृषे ॥ समत विक्रमजीत अष्टदश पहल भठिनय ॥ गोप विगुणा करिय भयो पुरन लखि लिय ॥ पुन इकानवा चठघो मरि दोहनि मानहु ॥ रति पसत अति मुमति येथ मुम माध पटानहु ॥ सवि भई यथ की समापति रामाइन सुदर सरस ॥ कवि हाथ जोरि पिनली करति चाहति चित रघुपति दरम ॥ १३ ॥ दोहा ॥ इकि इकि दिन मरि सरग इकि कखो मुदनि मरि ॥ याते बग्यो मिताय वटु विते वरप दुइ नाहि ॥ १४ ॥ जे सति मानहु जान हे पठहि मुनिहि हिल राइ ॥ हिमा क रहि लखि दोष को कवि मुधि जण्य बनाइ ॥ १५ ॥ कविम ॥ मुद्रता दूद की मुधारी बाप नद को कि बादनी मुचद को मुकद प्रीत घद की ॥ पाती रातविद की निपाती बाप बुंद को मनिद मरि विदु को बिलदरा मुनिद की ॥ सारदा मुनिद की अदारता अनद को मुदा रदा गिरिद मरिभाल बयो फनिद को ॥ पुत्र अमरिन्द को दिनिन्द की धरिन्द की वरिन्द नि इन्द की मुकधा रामचन्द को ॥ १६ ॥ । । । । । । । । ॥ १७

Subject—बाल्मीकि रामायण का छन्दोमय अनुवाद ।

Note—यन्त्रकर्ता कवि सत्तोपसिध हे जिन्होंने १८६१ और ६१ की संधि में इस ग्रन्थ को पूरा किया ।

No 122—रसमय यथ *Verse* Substance—country made paper Leaves—75 Size—9½ x 4½ inches. Lines—7 on a page. Extent—1,100 blocks Appearance—ordinary Complete. Correct. Character—Devanagari. Place of deposit—Library of the Maharaja of Banaras.

Rasamaya Grantha—The detailed description of heroes and heroines by the poet Beni of Asani. He wrote this book in Samvat 1817 (1760 A.D.) The manuscript is dated Samvat 1818 (1761 A.D.).

Begining—‘सोमयेष्टायनम’ ॥ प्रथम गयेयहि बाँधिये यार्ते सम मुम रीत । सोल कठे जग मुनय के बट्टे मुकता मे गीत ॥ १ ॥ सख्यो कूम चंदूर चख्यो विनयति नीली कोर । मरु रदन रति शशि भजे गयो राहु बरजोर ॥ २ ॥ अथ रूप वप वरनन ॥ गीतम रिपि के वम मे कीटू तप मे रुद्र । चम्प पुत्रा मुम करम के कलि मे भये समुद्र ॥ ३ ॥ कीटू के कुल मे भये मनराजन मनराज । गन्धर्वकस रय अकलि लिन गजे अरि कुल गज ॥ ४ ॥ मन-रणन के पारि मृत जेसे शरी वेद । निनते मही प्रगट भये राज काज के भेद ॥ ५ ॥

End—दोहा ॥ कीटो रसमय यथ ग्रह समुक्ति कविन को रीति ॥ जे कवि के अिद रचित मन ले कहिहे हय प्रीति ॥ ४३७ ॥ लघत वष वषमयधर बापपेठ करि अष ॥ मुकती साधु कुलीन वर नवस मे सरवष ॥ ४३८ ॥ दोहा ॥ बेनी कवि के पासु हे अपनो वर मुमयान ॥ वसत सबै षटकुल जहा कैं वेद को गान ॥ ४३९ ॥ निहचनमिध मुजान वर को अनुमासन पाइ ॥ कोनो रसमय यथ ग्रह यरनि नारदा भाइ ॥ ४४० ॥ अष्टादश शत वर्षयता मरुह कोरी जानि ॥ बासुन दसमी मित मुमय चन्द्रवार अनुमानि ॥ ४४१ ॥ दिनतो कीजतु कविन मे मूल परी जे दोइ ॥ सोधि मुधारी वरन धरि यन्त्रहि नोके जेइ ॥ ४४२ ॥ चरन पराय पाठय के मनपति क विरु नाइ ॥ यन्त्र रच्यो अगार मुम दोहो कविन यताइ ॥ ४४३ ॥ इति श्री रसमययथ सप्तमोऽध्यायः ॥ रितु वसत वैशाख सुदि द्वादश तिथि मुमय रसान ॥ वसु शशि वसु शशि अमर धरि लिखा मुनिपि नदनाल ॥ १७१८ ॥ शुभमस्तु ।

Subject—नायिका भेद ।

Note—यद्यकर्ता वेनी कवि असनी निवासो हे । इहेने राजा निहचनसिंह की आछा से सवत १८१० मे यह य-य रचा । इसका लिपिकाल सवत १८१८ हे ॥

No 123—*पिंगल Prose and Verse Substance—country made paper Leaves—49 Size—11 x 7 inches Lines—15 on a page Extent—1,200 slokas. Appearance—old. Incomplete. Correct. Character—Devanāgarī Place of deposit—Library of the Mahārāja of Banāras.*

Pingala.—A book on Hindi Prosody by the poet Sukhadeva (1700 A.D.)

Beginning—योगयोग्यशयनम् । गणपति गौरि गिरोध के पाह नाह निग सोस । मिय भु कवि महाराज को देत बनाह असोस ॥ १ ॥ रत्न खम पर मनहु कनक जपीर धिरानति । विसद सरद धन मध्य मनहु छन दुति छबि छानत ॥ मानहु कुमुद कदव मिलित अपन प्रभुन तति । मनहु मध्य धनसार लघति कुकुम लकीर अति ॥ हिमगिरि पर मानहु रवि किरण इमि धनधोर अरधग मह । मुण्डेव सदाशिव मुदित मन दिमतसिध नरेस कह ॥ २ ॥

End.—रूप घनासरी ॥ अथ गदास्योदाहरण ॥ जजर अरि जेर करि सेर समसेर बहा दुर वैरिदरवारण विठारणसिंह ॥ समत्य हृत्य ॥ अथत्यजल ॥ हृत्य समान महावीर ॥ समर थीर ॥ धराणि धुरधर ॥ धराधोश ॥ धवल घाम ॥ धवल भुजस पुञ्ज विजित मुर घुनी धार धयलिम श्री महाराजाधिराज हिममतिरिह चिरजोव ॥ इति गद्य ॥ अथैकाक्षरात्पादादाभ्य पट्विशति धर्षय

(इसके आगे १ । पृष्ठ छादा छूटा है । इति आदि कुछ नहीं है । ४४ पक्ष तक पुस्तक लिखी । परचातु पक्ष पर पिंगल के त्रिपय के कई पक्ष से बने हैं) ॥

Subject—काव्य घनाने की रीति ॥

Note.—कर्ता मुण्डेवसिंह मिय हे जो अमेठी के राजा हिममतसिंह के आश्रित थे ।

No 124—*मरदान रसरानय Verse Substance—country made paper Leaves—89 Size—10½ x 6 inches Lines—15 on a page Extent—1,000 slokas. Appearance—new Complete. Generally correct. Character—Devanāgarī Place of deposit—Library of the Mahārāja of Banāras*

Maradāna Rasranaya.—The detailed description of heroes and heroines by Sukhadeva (1700 A.D.) The manuscript is dated Samvat 1859 (1802 A.D.)

Beginning—श्रीवक्रतुर्बुद्धो जयति ॥ कानन टूटै विघन के जानन के यह जान ॥ कज जानन की जाति मिटि गय जानन के ध्यान ॥ १ ॥ वैस बस अतस भनि गुण गण को दरिपानु । कनकसिध जाहिर भयो नग मे रेशा राउ ॥ २ ॥ दिल्लीपति के काज जिन कोटिक करी फतुह । नगमगात जग पर अजे जाके नस को जुह ॥ ३ ॥ जाहिर हिमति हृद भयो सज हिटुन की मँड । समुति जानि जग मे करी प्रगट पुंय की पँड ॥ ४ ॥ पृथ्वीपाल को भयो ताके पृथ्वीराज । मोन देन के मोन मे बडे गरीबनेशज ॥ ५ ॥

End.—येसे नष्ट रहनि के भेद कहे हम जानि । रसध-यनि की रीति लखि सने जानोहे जानि ॥ २० ॥ यह मरदान रसरानो पुरो कोनो ययु । याके जाने जानियतु रस ययनि को पयु ॥ ४१८ ॥ इति श्री मरदान रसरानो मुण्डेव कीचि विरचितम् सप्तमम् ॥ सम्यत १७९६ शाल आषाढ मासे कृष्णपक्षे षष्ठ्या कुन यासरे ॥ लेखक वटोरखदास रामेतु धराउत ॥ शुभमस्तु ॥ राम ॥

Subject—नायिका भेद ॥

Note.—यद्यपि मुख्यतः कवि है। ये वैश्य राजा मरदान के आश्रित थे और उन्होंने
को आज्ञा से इन्तेमि यह अन्य रचा, इसी कारण मरदान रचापण्डित इमका नाम रखा गया है।
इसका लिपिकान सन्त १८५६ है।

No 126—कविता समायोज्य Very Substance—country-made paper
Leaves—80. Size—9½ x 5½—Inches. Lines—8 on a page. Extent—1,440
Shloka. Appearance—ordinary. Complete. Correct Character—Devanagari
Place of deposit—Library of the Maharaja of Banaras

Kavitta Rindayana—The story of Rama Chandra's life in the Kavitta metre by Goswami Tulasi Dasa. The manuscript is dated Samvat 1856 (1799 A.D.)

Beginning — श्रीमण्डितानमः । कर्त्तु ॥ अथेष के द्वारं सकारं गर्द सुत गोत्र के भूपति ते निकसे । अथनेकिहो मोष विमोचन को ठांग को रदियो न ठायो विक से ॥ तुनवी मन रजन रतिता अजने नेन मुपेजने पातिक से । सजनी समि मे समधीन ठमे नशनील सरो-रुह से जिगसे ॥ ९ ॥

[illegible]

Subject—श्री रामचन्द्र का सचित्र इतिहास ।

१०८.—अग्यकर्तुं गोस्वामो तुनघोदास चो हे । इष प्रति का लिपिकान स० १८५६ हे ।

No 126—श्रीराम नहकु 1 crsc. Substance—country-made paper
Leaves—6 Size—11×5 inches Lines—5 on a page Extent—50 slokas
Appearance—ordinary Complete Generally correct. Character—Devanagari. Place of deposit—Library of the Maharaja of Banaras.

Śrī Rāma Nāṭachhu.—A collection of songs by the poet Tulsī Dāsa in honor of the nail paring ceremonial of Rāma Chandra.

Beginnung—श्रीगणेशायनमः । श्री ज्ञानकी वल्लभा विप्रयते । आदि माट्टा गन-
पति गौरि मनार अहे । रामनला कर मट्ठु गाव मुनाइ अहे । जेहि गये सिधि होइ परम
निधि पाइ अहे । कोटि लज्ज कर पातक टुटि मो जाइ अहे ॥ १ ॥ कोटिन धावन धाजहि
दसाध के गृह दो । देव लोक सब देषहि आनद अति हिय दो ॥ नगर मोहायन लागत
परनि न जाते हो । कोमल्या के धूप न दूध समते हो ॥ २ ॥

End—दसरथ राठ सिधासन बैठि विराजहि हो । तुलसीदास बलि जाहि देपि रघुराजहि हो ॥ जे ये नहछू गावे गाद मुनाउह हो । रिद्ध सिद्धि कल्याण मुक्ति नर पावह हो ॥ २० ॥ इति श्री गुणेश तुलसीदास कृत नहछू राम लू के मुहन समय का सपूर्णम् ॥ शुभमस्तु सिद्धिरस्तु ॥

Subject—श्री रामचन्द्र के नहछू समय के मंगल गान ॥

Note—यह ग्रन्थ श्री गोस्वामी तुलसीदास कृत है ॥

No 127—श्रीपार्वतीमंगल Verse Substance—country made paper Leaves—24 Size—11 x 5 inches Lines—5 on a page Extent—195 slokas Appearance—new Complete Correct Character—Devanagari Place of deposit—Library of the Maharaja of Benares.

Sri Pārvatī Mangalā—An account of the marriage of Mahādeva and Parvatī by Goswāmī Tulasī Dāsa, who says that he composed this book in the Jyā Samvat There are 60 names of these Vikrama Samvats, Jyā being the 28th. Consequently in the 16th century of the Vikrama era, Jyā Samvat fell twice, i.e., in 1639 and 1699. It may, therefore, be concluded that Tulasī Dāsa wrote this book in Samvat 1639 (1582 A.D.)

Beginning—श्रीगणेशायनमः ॥ श्री हेरगम्पाय रामायनमः ॥ दिनय गुहति गुनि गनहि गिरिधि गननाथति ॥ हृदय आनि सियराम धरै धनु भायति ॥ गावड गोरि गिरोस विवाह सुहायन ॥ पाप नसाउन पावन मुनि मन भायन ॥ कजित रीति नहि जानउ कवि न कहायउ ॥ सकर छरित सुसरित मनहि अहयाउठ ॥ अपवाद विवाद विदुपित धानिहि ॥ पावनि करो सुगाइ महेस भजानिहि ॥ जय सवत फागुन मुदि पावे मुस दिनु ॥ आश्विन विरसेउ मंगल मुनि मुप छितु छिनु ॥

End—दद ॥ मृगर्गेन विष्णु पदनी रथ्यो मनि मनु मंगल हारयो ॥ ठर धरहु लुपती जन विलोकिति लोत्र सोभा धारयो ॥ कल्याण काज उद्याह व्याह सनेह सहित जो गार है ॥ तुलसी ठमा सकर प्रसाद प्रमोद मन जिय पाह है ॥ १६ ॥ इति श्रीमद्गोस्वामि श्री तुलसीदास कृत सिधसिधा विशाख मंगल समाप्तम् ॥ शुभमस्तु ॥

Subject—श्री महादेव पार्वती का विवाह ॥

Note—यह ग्रन्थ प्रसिद्ध श्री गोस्वामी तुलसीदास कृत है । निर्माणकाल इसमें भी नहीं मिलता । आरम्भ के एक छंद से इतना मिलता है कि “जय नाम सवत्सर फागुन मुदी ५ शुभशर” इससे इस ग्रन्थ का बनना सन् १६३३ में माना जा सकता है ।

APPENDIX I.

APPENDIX I

LIST OF THE BOOKS THE FULL NOTICES OF WHICH ARE NOT GIVEN

N.B.—The dates in this brackets indicate the time of the author. Incomplete books are marked with asterisks

No	Name of author	Name of book	Date of composition	Age of author at time of composition	Remarks
128	Bal Rama	Jhulane		1806	
129	Beenu I śma	Nama Mala			A kind of lexicon
130	Bhadra	Nakha Sukha			
131	Bhawant Datta	Dughalya Muhurta Bhāsa			Astrology
132	Bhupa	Champu Samudrika Bhāsa		1669	Resident of balajad pūr
133	Bibhat Lal	Sajsal	(1630)	1789	} See Nos. 115 of 1900 27 of 1901 and 8 of 1901
134				1810	
135	Charana Das	Gyāna Sw odaya	(1760)	1815	
136	Chhema Rāma	* Late Prakash			See No. 70 of 1901 This book deals with Hind rhetoric. Dr Griffith mentions one poet of this name who wrote on Nayaka Bheda and who flourished in 1600 A.D.
137	Chintamani	* Kavikula Kalpataru	(1650)		See No. 127 of 1900
138	Dera	A n J rna	(1690)	1737	} See Nos. 53 of 1900 and 121 of 1900
139					
140	Dhira	Ramayana fika	(1839)		He lived at Chān pur
141	Ganesh	* Ritu Varanasi	1800		
142	Gokula Nātha	Nama Rajua Mala	1814	1806	See No. 9 of 1900
143	Hansaraja	Sancha Sūkara		1854	See No. 135 of 1900
144	Jaswantha Singh	Bhāsa Bīśana	(1660)	1801	See No. 47 of 1902
145	Jhama Das	Kamarupaya	1761	1800	} See No. 111 of 1901
146		*		1805	
147		*		1806	
148	Krishna Das	Dona Lila		1800	} A minor poet
149	Lalaji Vora	Koka bera		1849	
150	Malika Muhammad Jayasi	Ladmanvi	1640	1761	See No. 54 of 1900 and Nos. 24, 25 and 53 of 1901
151	Mani Rāma	Sara Sangraha		1789	A collection on
152	Manohara Dāsa	Saja Prasni Sa fika		1775	See No. 58 of 1901
153	Nanda Das	Anekarjha Nama Mala	(1567)	1809	} See No. 58 of 1900
154					
155	Nayana Sukha	Vaidya Manasava	1599	1717	} See No. 34 of 1900
156				1799	
157	Naya Nātha	Mantra Kānda Rāsa Rajnakara			Tanjur
158	Padmakara	Jagata vinoda	1815	1831	} See No. 6 of 1900
159		*			
160	Paras Rama	Nakha Sukha			See No. 173 of 1900
161	Pushkara				Varanasi
162	Sahaja Bāsi	Sahaja Prakāsa	1743		See No. 129 of 1900
163	Sarajapati	Koka Sara	1600	1794	
164	Sasada	Lama Lal Prakash	1849		
165	Sundara Das	Sundara S ngara	1631	1770	See No. 3 of 1902
166	Syāma Sakha	Lama Dhyana Sundari			
167	Tulsi Das	Rama Charita Manasa	154	1767	} See No. 1 of 1900 and Nos. 10 and 11 of 1901
168		*		1794	
169				1897	
170		Hanuman Bahuka	1830		See No. 60 of 1901
171	Usha Datta	Baraha Manasa			
172	Viswanatha Singh	Gita Lakshmanandana Sa fika	1830	1833	See No. 11 of 1900 The date 1844 given in this notice of the time and not of the composition of the book
173		Bhājana			

No.	Name of author.	Name of book.	Date of composition.	Age of manuscript.	Remarks.
172	Unknown	Author	Blasi Jungs Laguna	---	---
173	"	"	Prakira	---	---
174	"	"	Blasi Samadika	---	---
175	"	"	* Pags Nandi	---	---
176	"	"	Hirapad as duka	---	1755
177	"	"	* Pags Nandi	---	Commonary to Prose
178	"	"	* Javara Chikim	---	Prose
179	"	"	* Kavi to Sangraha	---	---
180	"	"	Lilawa Tarangini	---	---
181	"	"	* Pabelli	---	1855
182	"	"	Sankasali	---	---
183	"	"	---	---	---
184	"	"	Srimala Bhagavat	---	Explanation of dis-
185	"	"	Nava Purana	---	puted points in Tula
186	"	"	Tula Sigara betu	---	* Tula's hindayana
			---	---	Prose
			---	---	Prose version of Tula
			---	---	in Blasi's hindayana

INDEXES

Index I	91 to 94
Index II	95 to 96

INDEX II

NAMES OF MANUSCRIPTS NOTICED

[N B—The figures indicate the number of the notices]

Aguna saguna nirūpana kathā	77	Kalki charitra	29
Alāma-keli	33	Kamarruddin bulasa	65
Alankāra mālā	104	Kanaka manjarī	7
Amara prakāśa	74	Kavya kalasdhara	14
Amareśa-vilāsa	1	Kāvya nirṇaya	61
Ananda-anubhava	37	Kedara pañṭha prakāśa	109
Anandāmbunidhi	17	Khetamala-bāṣī	70
Anekārṭha nāma mālā	153, 154	Koka śāra	149, 163
Anubhava para pradarsa-tīkā	22	Kosala patha	25
Astajāma	138, 139	Kousalandra rahasya	68
Astāvakra	4	Kṛipakanda nīvandha	66
Bāhū-sarvāṅga	13	Lāla mukunda vilāsa	64
Bija nāma	69	Lalita lālāma	67
Bālamukunda līlā	12	Lālītya lāla	55
Bālamiki rāmāyaṇa	121	Līla rāga tarangini	181
Bālamiki rāmāyaṇa ślokarṭha prakāśa	24	Mantra bhanda rasa rājanakara	167
Bārāha mīśa	171	Maradana rasarpava	124
Barawā ramāyana	80	Moka pañṭha prakāśa	78
Bhāgavat	184	Nakha śikha	26, 50, 90, 130, 160, 161
Bhāgavat mahatmya	18	Nama mālā	129
Bhājana	173	Nama ratna mālā	142
Bharata vilāsa	38	Nayaka bheda barawa chhanda	76
Bhāṣā bhūṣana	141	Padmasaṭī	150
Bhāṣā-ṣṛoṭiga lagana prakāśa	174	Pañcāṅga	182
Bhāṣā ramāyaṇa	99	Parasatī māngala	127
Bhāṣa samudrika	175	Pingala	36, 123
Bhāvarṭha chandrikā	47	Prana sukha	8
Bhāva vilāsa	41	Prema taranga chandrikā	28
Bhūpa bhūṣana	117	Radhā kṛṣṇa vilāsa	15
Champi samudrika bhāṣā	132	Radhā nakha śikha	27
Chandi charitra	5	Raga vireka	43
Chhanda prakāśa	32	Rama bhakti prakāśikā	20
Chhandarnava	31	Rama chandra chandrikā	21
Chhandāwālī rāmāyaṇa	82	Rama charita mānasa	107, 168, 169
Dala śiṅghāṇḍa prakāśa-śrīrāmāyā	110	Rama charita-mānasa muktāwālī	10
Dana līlā	148	Rama-dhyāna sundarī	166
Dīpa prakāśa	49	Rama gnodaya	116
Du ghaṭiya-Muhurṭa bhāṣā	131	Ramagya sāganauṭī	87
Ḍaṣṭa nāma	176	Rāma līla prakāśa	164
Ḍaṣṭha prakāśa	136	Rama muktāwālī	97
Ḍaṣṭha raghunandana satika	172	Rama nabachhū	145, 146, 147
Gorakha śāra	85	Ramārṇava	98
Gyāna bachana churpikā	84	Rama śālikā	9, 115
Gyāna pradīpa	16	Ramāyaṇa	95
Gyāna samudra	34	Rāmāyaṇa tīkā	140
Gyāna swarodaya	137	Rāmacwamedha	19
Hamṣa batha	100	Rasa bhūṣana grantha	93
Hanumana bāhuka	170	Rasa dīpa kāvya	42
Hanumana bāli charitra	21	Rasa malika grantha	44
Hari bhakti vilāsa	101	Rasamaya grantha	123
Hari bhakti vilāsa pūrbārṭha	72	Rasa mūla	113
Hari bhakti vilāsa uttarārṭha	73	Rasa rahasya	51
Hitopadeśa	99	Rasa śāra	45
Hitopadeśa satika	177	Rasika mohana kāvya	66
Hitopadeśa upasana bhavanī	60	Rasika priya	89
Indrājīla	178	Rasika vilāsa	59
Jagta mohana	112	Rasika vinoda grantha	103
Jagata vinoda	158, 159	Ratana hajarā	94
Jahangīra chan līkā	40	Rūpa varnana	141
Jānakī māngala	70	Rukmiṇī māngala	11
Javana chikīṭṣā	179	Sahaja prakāśa	162
Jhulane	128	Sahitya-sromam	105
Kabi kula kalpa śāra	137	Sahitya sudhākara	92
Kabi kula kanṭha bhāṣana	43	Sajjana vilāsa	39
Kabi mukha mundaṇa	55	Sakuntalopākhyāna	75
Kabittas of Beni	86	Saneha-śigara	143
Kabittas of Mahāpa nīrāyana and others	114	Sankāvalī	163
Kabitta ramāyana	125		
Kabittas saugraha	130		

INDEX I

NAMES OF AUTHORS

[A B—The figures indicate the number of the notice]

Abdura Rahamans	50	Kesava Dasa	21 26 83
Agra Dasa	60	Kesava Misra	40
Alama	33	Khumana	74
Al Muh ba Khān	0	Krma D sa	143
Ananda	3	Kulapati M tra	51
Ananda Ghana	88	Lala	113 114
Bal Rāma	128	Lalaji M tra	149
Beni	62 86 12	Lala Mukunda	64
Besab Rama	129	Mai ka Muhammad	100
Bhadra	170	Mani Lāma	151
Bhawanī Dattā	131	Mani varā S ngba	47
Bh kharī Dasa	31 32 46 61	Manohara Dasa N ranjani	83 84 12
Bhāsana	12	Maji R ma	67
Bhoja Raja	59	Mohana	4
Bhupa	12	Nanda Dā a	153 154
Bhūana	3	Narhari Bhata	11
B huri Lāla	133 134	Nayana Sukha	155 156
B kramad ā	7 73	Nāla	105 106 107
Brahma Dattā	43	Nīlakantha	1
Brija Lāla	23 21	N ya Na ha	157
Chandra Cāsara	100 101 102 103	N waja	75
Charana Dasa	100	Pa imakura	158 159
Chhema Rama	136	Parasa Rama	160
Ch n āmagi	36 137	Pranā Chaud a	95
Dasa	45 109 110	Prāna Nātha	29
Da ta	39 50 122	Prā apta	52
Deva	28 41 108 133 139	Praya a Dasa	96
Dhanī Rama	116	Pūhakara	161
D gga	33	Purasot ama	48
D lpa	140	Raghuī ha	14 50 112
Dulaba	43	Raghuī ja S ngba	17 18
Dw ja	27	Rama Charana Dasa	44 68
Castraja	71	Rama Na ha Upadhyaya	93
Ganga Rama	6	Ra a N dhi	94
Ganga Rama Tr path	16	Rudrapratapa S ngba	25
Ganeca	141	Sahaja Bai	162
Caupana	65	Santosa S ngba	121
Gokula Nātha	15 23 20 142	Saradara	92 164
Comati Dasa	9	Saradaputra	163
Gorakha Nā ha	85	S vanaada	77
Covinda S ngba	5	Sukhadava	123 124
Gulaba S ngba	78	Sunda a Dasa	34 67 88 111 165
Guru Dattā Singha	42	Sura a S ngba	104
Hari Sebaya	19	Syama Sakhi	106
Hansaraja	143	Takura	21
Jai Kehari	117	Tulsi Dasa 13 30 79 80 81 62 87 67 93 125	125
Jānski Prasada	20		126 127 167 168 169 170
Jasawanta S ngba	144	Udaya Na ha	113
Jhama Dasa	145 146 147	Uma D ā	171
Kanha	20	Vishwanatha S ngba	22 53 54 115 122
Kapara Chanda	99	Yada Nātha Śukla	119
Kas Rama	7		

Śaṅṭa śajaka	54	Surya parīṣa	180
Sara saṅgraha	151	Suvarṇa śaḥa	71
Śaṭa prasāṇi Śaṭika	150	Śvarodaya	170
Śaṭa prasāṇīkārī	83	Taṇḍi-śaṅṭa-śaṭa	186
Śaṭaśī	133 131	Uḍḍi śaṭa kīrṭi prakāśa	63
Śaṭaśāṇa śaṭṭī	6	Uṭṭama śaṭṭa graṇṭha	83
Śaṭarām guṇarāya ramayāṇa	23	Valḍya-maṇḍaṇa	150 156
Śaṭarāya bhāṣaṇa	58	Vaṭṭya śaṭṭīkārī	81
Śaṭgāra	69	Vaṭṭyaśaṭa karmudī	22
Śaṭgāra śaṭṭī	45	Vaṭṭya-śaṭa	83
Śaṭṭa śaṭṭī	108	Vaṭṭya śaṭṭīkārī	118
Śaṭṭa-śaṭa śaṭṭī	111	Vaṭṭya śaṭṭī	100
Śaṭṭa-śaṭṭī	165	Vaṭṭyaśaṭa śaṭṭī-maṭa-praṭṭa	2
Śaṭṭa-śaṭṭī vilāsa	57	Vaṭṭyaśaṭa kārṇa	30
Śaṭa śaṭṭīkārī śaṭṭī	107	Vaṭṭyaśaṭa	8
Śaṭa śaṭṭī prakāśa	106		